श्री जिनायनमः

वैराग्योपदेशक विविध पदसंग्रह.

पंडित श्रीयसोविजय, विनयविजय
तथा ज्ञानसारजी विरचित.

तेने

द्वितीयावृत्तिनें

यथामति संसोधन करावीनें,

श्रावक, भीमसिंह माणकें

श्री मोहमयी पत्तन मध्यें

निर्णयसागर छापखानामां छपावी प्रसिद्ध कर्यो छे

संवत १९५८ सने १९०२

वैशाख वदि त्रयोदशि

प्रस्तावना.



सर्वे सुज्ञ जैनबांधवोने मालुम थाय जे आ श्री "वैराग्योपदेशक विविधपद संग्रह." नांमनो अत्यंत रमणीक, वैराग्यथी जरेलो, संसार स्वरूपने बतावनारो, तथा पदोनां चमत्कारोथी जरेलो ग्रंथ आपणा महामाननीक उपाध्याय श्री यशोविजयजी; विनयविजयजी तथा ज्ञानशारंजी महाराजें रचेल ठे, तेमां प्रथम "जसविलास" पंडित यशोविजयजी कृत, तथा "विनयविलास" पंडित विनय विजयजी कृत, अने "ज्ञानविलास" पंडित ज्ञान सारजी कृत ठे. आ ग्रंथ एटलो तो रसिक तथा जैनवर्गना श्रावक, श्राविकाउने माटे उपयोगी ठे केतेनुं अत्रे प्रस्तावनामां कंइ पण वर्णन नहि करतां, अमो ते ग्रंथ, आधथी ते अंतसुधि वांचीने तेनो रहस्य हृदयमां धारण करवानी अमारा सुज्ञ जैन बांधवोने जलामण करीएं ठईयें तथा केटलाएक दृष्टी दोष अनें बुद्धि दोष रही गया हशे तेनुं अ-

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग सारंग ॥ कंतबिनु कहो कौन गति नारी ॥ टेक ॥ सुमति सखी जइं वेगी मनावो, कहे चेतन सुन प्यारी ॥ कंत० ॥१॥ धन कन कंचन महल मालिए, पिउ बिन सबहि उजारी ॥ निद्राजोग लहु सुख नांही, पियु वियोग तनु जारी ॥ कंत०॥२॥ तोरे प्रीत पराइ दुरिजन, अछते दोष पुकारी ॥ घर भंजनके कहन न कीजें, कीजे काज विचारी ॥कंत० ॥३॥ विभ्रम मोह महामद बिजुरी, माया रेन अंधारी ॥ गर्जित अरति लवे रति दादुर, कामकी भइ असवारी ॥कंत० ॥४॥ पिउ मिलवेकुं मुज मन तलफे, में पिउ खिजमतगारी ॥ छुरकी देइ गये पिउ मुजकुं, न लहे पीर पीयारी ॥ कंत० ॥ संदेश सुनी आए पिउ उत्तम, भइ बहुत मनुहारी ॥ चिदानंद घन सुजस विनोदें, रमे रंग अनुसारी ॥ कंत० ॥६॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ परम गुरु जैन कहो क्यौं होवे. गुरु उपदेश बिना जन मूढा, दर्शन जैन बिगोवे । परम गुरु जैन कहों क्यौं होवे ॥टेक॥१॥ कहत कृ

पानिधि समजल झीले, कर्म मयल जो धोवें ॥ ब-
हुल पापमल अंग न धारे, शुद्ध रूप निज जोवे ॥ प-
रम०॥२॥ स्यादवाद पूरन जो जाने, नय गर्भित ज-
स वाचा ॥ गुन पर्याय द्रव्य जो बूझे, सोइ जैन है
साचा ॥परम०॥ ३ ॥ क्रिया मूढमति जो अज्ञानी,
चालत चाल अपूठी ॥ जैनदशा उनमेंही नाही,
कहे सो सबही जूठी ॥परम०॥४॥ पर परनति अपनी
कर माने, किरिया गर्वे घेहेलो ॥ उनकुं जैन कहो
क्युं कहियें, सो मूरखमें पहिलो ॥परम०॥५॥ ज्ञान
भाव ज्ञान सबमांही, शिव साधन सर्दहिए ॥ नाम
भेखसें काम न सीझे, भाव उदासे रहिए ॥ परम०
॥६॥ ज्ञान सकल नय साधन साधो, क्रिया ज्ञानकी
दासी ॥ क्रिया करत् धरतुहे ममता, याहि गलेमें
फांसी ॥परम०॥७॥ क्रिया बिना ज्ञान नहिं कबहुं,
क्रिया ज्ञान बिनु नांही ॥ क्रिया ज्ञान दोउ मिलत
रहतुहे, ज्यों जल रस जलमांही ॥ परम० ॥८॥
क्रिया मगनता बाहिर दीसत, ज्ञान शक्ति जस
भांजे ॥ सदगुरु शीख सुने नहीं कबहुं, सो जन ज-
नतें लाजे ॥परम०॥९॥ तत्व बुद्धि जिनकी परनति

है, सकल सूत्रकी कूंची ॥ जग जसवाद वदे उन हींको, जैन दशा जस ऊंची ॥ परम० ॥१०॥ इति॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ परम प्रभु सब जन शब्दें ध्यावे ॥ जब लग अंतर भरम न भांजे, तबलग कोऊं न पावे ॥ परम प्रभु० ॥ १ ॥ टेक ॥ सकल अंस देखे जग जोगी, जो बिनु समता आवे ॥ ममता अंध न देखे याको, चित्त चिहुं ठेरे ध्यावे ॥ परम प्रभु०॥२॥ सहज शक्ति अरु भक्ति सुगुरुकी, जो चित्त जोग जगावे ॥ गुण पर्याय द्रव्यसुं अपने, तो लय कोउ लगावे ॥ परम प्रभु० ॥ ३ ॥ पढत पूरान वेद अरु गीता, मूरख अर्थ न भावें ॥ इत उत फरत ग्रहत रसनाही, ज्यौं पशु चर्वित चावे ॥ परम प्रभु० ॥४॥ पुद्गलसें न्यारो प्रभु मेरो, पुद्गल आप छिपावे ॥ उनसें अंतर नहीं हमारे, अब कहां भागो जावे ॥ परम प्रभु० ॥५॥ अकल अलख अज अजर निरंजन, सो प्रभु सहज सुहावे ॥ अंतरजामी पूरन प्रगट्यो, सेवक जस गुन गावे ॥ परम प्रभु० ॥६॥ इति॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ चेतन जो तुं ज्ञान अ-
भ्यासी ॥ आपहि बांधे आपहि छोडे, निजमति शक्ति विकासी ॥ चेतन० ॥१॥ टेक ॥ जो तुं आप स्वभावें खेले, आसा छोरी उदासी ॥ सुरनर किन्नर नायक संपति, तो तुज घरकी दासी ॥ चेतन०॥२॥ मोह चोर जन गुन धन लूसे, देत आस गल फांसी॥ आसा छोर उदास रहेजो, सो उत्तम संन्यासी ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ जोग लइ पर आस धरतहे, याही जगमें हांसी ॥ तुं जाने में गुनकुं संचुं, गुनतो जावे नासी ॥ चेतन०॥४॥ पुद्गलकी तुं आस धरतहे, सो तो सबहिं विनासी ॥ तुंतो भिन्नरूप हे उनतें, चिदा-नंद अविनासी ॥ चेतन० ॥५॥ धन खरचे नर बहुत गुमाने, करवत लेवे कासी ॥ तोभी दुःखको अंत न आवे, जो आसा नहिं घासी ॥ चेतन०॥६॥ सुखजल विषम विषय मृगतृष्णा, होत मूढमति प्यासी ॥ विभ्रम भूमि भइ पर आसी, तुं तो सहज विलासी ॥चेतन०॥ ७ ॥ याको पिता मोह दुःख भ्राता, होत विषय रति मासी ॥ भव सुत भरता अविरति प्रानी,

मिथ्यामति है हांसी ॥ चेतन० ॥ ८ ॥ आसा डोर रहे जो जोगी, सो होवे सिव वासी ॥ उनको सुजस बखाने ज्ञाता, अंतरदृष्टि प्रकासी ॥चेतन०॥९॥इति॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ राग कनडो ॥ अजब गति चिदानंद घनकी ॥ टेक ॥ भव जंजाल शक्तिसुं होवे, उलट पुलट जिनकी ॥ अजब०॥१॥ भेदी परनति समकित पायो, कर्मवज्र घनकी ॥ ऐसी सबल कठिनता दीसे, कोमलता मनकी ॥ अजब० ॥ २ ॥ भारी भूमि भयंकर चूरी, मोहराय रनकी ॥ सहज अखंड चंमता याकी, छमा विमल गुनकी ॥ अजब० ॥ ३ ॥ पापवेली सब ज्ञान दहनसे, जाली भववनकी ॥ शीतलता प्रगटी घट अंतर, उत्तम लछनकी ॥ अजब० ॥४॥ ठकुराइ जगजनते अधिकी, चरन करन घनकी ॥ ऋद्धि वृद्धि प्रगटे नीज नामे, ख्याति अकिंचनकी ॥ अजब० ॥ ५ ॥ अनुभवबिनु गति कोउ न जाने, अलख निरंजनकी ॥ जस गुन गावत प्रीती निवाहो, उनके समरनकी ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ जिउ लाग रह्यो परभावमें, टेक ॥ सहज स्वभाव लखे नहिं अपनो, परियो मोह जंजालमें ॥ जिउ० ॥ १ ॥ वंछे मोक्ष करे नहि करनी, डोलत ममता वाउमें ॥ चहे अंध ज्युं जलनिधि तरवो, वेठो कांणे नाउमें ॥ जिउ० ॥ २ ॥ अरति पिशाची परवश रहेतो, खिनहु न समस्यो आउमे ॥ आप बचाय सकत नहिं मूरख, घोर विषयके घाउमें ॥ जिउ० ॥ ३ ॥ पूर्व पुण्य धन सवहि ग्रसतहे, रहत न मूल बढाउमें ॥ तामें तुज केसे बनी आवे, नय व्यवहारके दाउमें ॥ जिउ० ॥ ४ ॥ जस कहे अब मेरो मन लीनो, श्रीजिनवरके पाउमें ॥ याहि कल्यान सिद्धिको कारन, ज्युं वेधकरस खाउमें ॥ जिउ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग विलाउल ॥ मेरे साहिब तुंम हि हो, श्री पास जिणंदा ॥ खिजमतगार गरीब हुं, मे तेरा वंदा ॥ मेरे० ॥ १ ॥ टेक ॥ में चकोर करूं चाकरी, जब तुमहिं चंदा ॥ चक्रवाक में हुइ रहों, जब

तुमहिं दिणंदा ॥ मेरे० ॥ २ ॥ मधुकरपरे में रत्न- जनुं, जब तुम अरविंदा ॥ नक्ति करौं खगपति परे, जब तुमहिं गोविंदा ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तुम जब गर्जित घन नये, तब में शिख वंदा ॥ तुम सायर जब में तदा, सुरसरिता अमंदा ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ दूर करो दादा पासजी, नवडुःखका फंदा ॥ वाचक जश कहे दासकुं, दियो परमानंदा ॥ मेरे० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग सामेरी ॥ मेरे प्रन्नुसुं प्रगट्यो पूरन राग ॥ टेक ॥ जिन गुन चंद किरनसुं उमग्यो, सहज समुद्र अथाग ॥ मेरे० ॥ १ ॥ ध्याता ध्येय नये दोउ एकहु, मिट्यो नेदको नाग ॥ कुल बिदारी चले जब सरिता, तव नहिं रहत तडाग ॥ मेरे० ॥ ॥ २ ॥ पूरन मन सब पूरन दीसे, नहिं डुबिधाको लाग ॥ पाउ चलतपनही जे पहिरे, नहि तस कंटक लाग ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ नयो प्रेम लोकोत्तर जूठो, लोक वंधको ताग ॥ कहो कोउ कबु हमतो न रूचे, बुटि एक वीतराग ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ वासत हे जिन गुन मुऊ दिलकुं, जेसो सुरतरु बाग ॥ ओर वास-

ना लगे न तातें, जस कहे तुं वडभाग॥ मेरे ०॥५॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग गोडसारंग तथा पूर्वी ॥ पसारी कर लीजे, इक्षुरस भगवान ॥ चढत सिखा श्रेयांस कुमरकी, मानु निरमल ध्यान ॥ पसारी० ॥ १ ॥ टेक ॥ में पुरुषोतम करकी गंगा, तुं तो चरन निदान ॥ इत गंगा अंबर तर जनकुं, मानुं चली असमान ॥ ॥ पसारी० ॥ २ ॥ किधो विधु बिंव सुधासूं चाहत, आप मधुरता मान ॥ किधो दायककी पुण्य परंपर, दाखत सरगविमान ॥ पसारी० ॥ ३ ॥ प्रभुकर इक्षुरस देखी करत हे, ऐसी उपमा जान ॥ जश कहे चित वित पात्र मिलावें, युं भविकुं जिन भान ॥ पसारी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अगीयारमुं ॥

॥ राग अडाणो ॥ शीतल जिन मोहि प्यारा ॥ टेक ॥ भुवन विरोचन पंकज लोचन, जिउके जिउ हमारा ॥ शीतल० ॥१॥ ज्योतिशुं ज्योत मिलत जब ध्यावे, होवत नहि तब न्यारा ॥ वांधी मूठी खुले भव माया, मिटे महा भ्रम भारा ॥ शीतल० ॥२॥

तुम न्यारे तब सबहि न्यारा, अंतर कुटुंब उदारा ॥ तुमहीं नजिक नजिक हे सबहीं, रुद्धि अनंत अपारा ॥ शीतल० ॥ ३ ॥ विषय लगनकी अगनि बूझावत, तुम गुन अनुनव धारा ॥ नइ मगनता तुम गुनरसकी, कुन कंचन कुन दारा ॥ शीतल० ॥ ४ ॥ शीतलता गुन होर करत तुम, चंदन काइ बिचारा ॥ नामेहीं तुम ताप हरतहे, वाकुं घसत घसारा ॥ ॥ शीतल० ॥ ५ ॥ करहु कष्ट जन बहुत हमारे, नाम तिहारो आधारा ॥ जस कहे जनममरण नय नागो, तुम नामे नवपारा ॥ शीतल०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ प्रनु तेरो वचन सुन्यो जबहीथें सुविहान ॥ टेक ॥ तबहीथें तत्त्व दाख्यो, चाख्यो रस ध्यान ॥ नाव नाली ए जागी, मानुं कीधो सुधापान ॥ प्रनु तेरो० ॥ १ ॥ श्रुतचिंता ज्ञान सोतो, खीर नीर वान ॥ विषय तृष्णा बुझावे, सोहि साचो ज्ञान ॥ प्रनु तेरो० ॥ २ ॥ गायन हरन तातें, नादे धरे कान ॥ तेसेहिं करत मोहिं, संत गुन ध्यान ॥ प्रनु तेरो० ॥ ३ ॥ प्रानतें अधिक सांइ, केसे कहुं

प्रान ॥ प्रानथी अभिन्न दाख्यो, प्रत्यक्ष प्रमान ॥
प्रभु तेरो० ॥४॥ भिन्न ने अभिन्न कबु, स्याद्वादें वान ॥
जस कहे तु हें तु हें, तुं हें जिन जान ॥ प्र० ॥५॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग परज ॥ चेतन राह चले ऊलटे ॥ टेक ॥
नखशिखलो बंधनमां बेठे, कुगुरु वचन गुलटे ॥
चेतन० ॥ १ ॥ विषय विपाक जोग सुख कारन, ठि-
नमें तुम पलटे ॥ चाखी ठोर सुधारस समता, ज-
वजल विषय घटे ॥ चेतन० ॥ २ ॥ जवोदधि भि-
च रहे तुम ऐसे, आवत नाहिं तटे ॥ जिहां ति-
मिंगल घोर रहतुहे, चार कषाय कटे ॥ चेतन० ॥
॥ ३ ॥ वरविलास वनिता नयनके, पडे पास पल-
टे॥ अब परवश जागे किहां जाओगे, ऊाले मोह-
जटे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ मन मेले जो किरिया कीनी,
ठगे लोक कपटे ॥ उनकुं फलविनुं जोग मिटेगो,
तुमकुं नांहि रटे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ सीख सुनी अब
रहो सुगुरुके, चरणकमल निकटे ॥ युं करते तुम
सुजस लहोगे, तत्त्व ज्ञान प्रगटे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग नायकी कनडो ॥ चेतन ममता छांड परीरी, दूर परीरी ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ पर रमनिसुं प्रेम न कीजें, आदरी समता आप वरीरी ॥ चेतन० ॥ ॥ १ ॥ ममता मोह चंडालकी बेटी, समता संयम नृप कुमरीरी ॥ ममता मुख दुर्गंध असत्यें, समता सत्य सुगंध भरीरी ॥ चेतन० ॥ २ ॥ ममतासें लरते दिन जावे, समता नहिं कोउ साथ लरीरी, ममता हेतु बहुत हे दुश्मन, समताके कोऊ न अरीरी ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ ममताकी दुर्मति हे आली, डाकिनी जगत अनर्थ करीरी ॥ समताकी शुभमति हे आली, परउपगार गुणे समरीरी ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ ममता पुत्त भए कुल खंपन, सोक बियोग महा मत्सरीरी ॥ समता सुत होवेगे केवल, रहे दिव्य निशान धुरीरी ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ समता मग्न रहे जो चेतन, जो ए धारे शीख खरीरी ॥ सुजसविलास लहेगो तो तुं, चिदानंदघन पदवि वरीरी ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पन्नरमुं ॥

॥ राग नायकी कनडो ॥ या गति कौन हे सखी तोरी, कोन हे सखी तोरी ॥ टेक ॥ इत उत युंहि फिरत हे घहेली, कंत गयो चित चोरी ॥ यागति० ॥ १ ॥ चितवत हे विरहानल बुझवत, सिंच नयन जल जोरी ॥ जानत हे उहां हे वडवानल, जलण जल्यो जिहुं ओरी ॥ यागति० ॥ २ ॥ चल गिरनार पिया दिखलावुं, नेह निहावन धोरी ॥ हलिमिलि मुगति मोहोलमें खेले, प्रनमे जस या जोरी ॥ यागति० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ हम मगन जए प्रजु ध्यानमें, टेक ॥ बिसर गइ डुविधा तन मनकी, अचिरा सुत गुन ज्ञानमें ॥ हम० ॥ १ ॥ हरिहर ब्रह्म पुरंदरकी ऋद्धि, आवत नांहि कोउ मानमें ॥ चिदानंदकी मोज मची हे, समतारसके पानमें ॥ हम० ॥ २ ॥ इतने दिन तुं नांहि पिछान्यो मेरो, जन्म गमायो अजानमें ॥ अबतो अधिकारी होइ बेठे, प्रजु गुन अखय खजानमें ॥ हम० ॥ ३ ॥ गइ दी-

नता सबही हमारी, प्रभु तुज समकित दानमें ॥ प्रभु गुन अनुभवके रस आगें, आवत नही कोउ ध्यानमे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जिनहि पाया तिनहि छि-पाया, न कहे कोउके कानमें ॥ ताली लागी जब अनुभवकी, तब जाने कोउ शानमें ॥ हम० ॥ ५ ॥ प्रभु गुन अनुभव चंद्रहास्य ज्यो, सोतो न रहे म्या-नमें ॥ वाचक जश कहे मोह महा अरि, जीत लीयो हे मेदानमें ॥ हम० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग काफी ॥ देखतही चित्त चोर लीयो हे, देखतही चित्त चोर लीयो ॥ सामको नाम रुचे मोहि अहनिस, साम विना कहा काज जीयो ॥ देखतही० ॥ १ ॥ टेक ॥ सिद्धवधूके लीए मुझ छोरी, पशुअनके सिर दोष दीयो ॥ परकी पीर न जाने तासों, वैर वसायो जो नेह कीयो ॥ देखत-ही० ॥ २ ॥ प्रान धरुं में प्रानपिया बिन, वज्रहथें मोहि कठिन हियो ॥ जस प्रभु नेमि मिले दुःख डार्यो, राजुल शिवसुख अमृत पियो ॥ देखत ही० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग कल्याण ॥ सद्गुने प्रभु भेटे, अंतरीक प्रभु भेटे ॥ स० ॥ टेक ॥ जगत वछल हित दाइ, स० ॥ मोह चोर जव जोर फिरावत, तब समरवो प्रभु नेटे ॥ स० ॥ १ ॥ ओर सखाइ चार दिवसके, साच सखा प्रभु वेठे ॥ इतनो आप विवेक विचारो, मायामें मत लेटे ॥ स० ॥ २ ॥ भामणडे तो भूख न भांगे, विनुं भोजन गए पेटे ॥ भगवंत भक्ति विना सवि निष्फल, जस कहे भक्तिमें भेटे ॥ स० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जिन चरण सरन ग्रहुं ॥ टेक ॥ हृदयकमलमें ध्यान धरतुहे, सिर तुज आण वहुं ॥ जिन० ॥ १ ॥ तुज सम खोळ्यो देव खलकमें, पेख्यें नांहिं कहुं ॥ तेरे गुनकी जपुं जपमाला, अहनिसि पाप दहुं ॥ जिन० ॥२ ॥ मेरे मनकी तुम सव जानो, क्या मुख वहुत कहुं, कहे जस विजय करो तुम साहिब, ज्युं भव डुःख न लहुं ॥ जिन० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ अजब बनीहे जोरी, अर्धंग धरीहे गोरी ॥ शंकर शंकहि ठोरी, गंगसिर धरीहे ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रेमके पीवत प्याले, होत महा मतवाले, न चलत तिहूं पाले, असवारी खरी हे ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञानीको एसो उत्साह, समताके गले बांह, सिरपर जगनाह, आण सुर सरीहे ॥ अ० ॥ ३ ॥ लोकके प्रवाह नांहि, सुजस विलास मांहि, चिदानंदघन गहि, रति अनुसरी हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ धर्मके विलास वास, ज्ञानके महा प्रकास, दास भगवंतके, उदास भाव लगे हें ॥ समता नदीतरंग, अंगही उपंग चंग, मज्ञान प्रसंग रंग, अंग जगमगेहें ॥ धर्म० ॥ १ ॥ कर्मके संग्राम घोर, लरे महा मोह चोर, जोर ताको तोरवेंकुं, सावधान जगेहें ॥ शीलको धरी सनाह, धनुख महा उत्साह, ज्ञान बानके प्रवाह, सब वेरी भगे हें ॥ धर्म० ॥ २ ॥ आयो हे प्रथम सेन,

कामको गयो हे रेन, हरिहर ब्रह्म जेण, एकलेने ठगेहें, क्रोध मान माया लोज, सुजट महा अखोज, हारे सोय ठोड थोज, मुख देइ जगेहें ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ नोकषाय जये खीन, पापको प्रताप हीन, ओर जट जये दिन, ताके पग ठगेहें ॥ कोउ नहीं रहे गाढे, कर्म जो मिले ते गाढे, चरनके जिहा काढे, करवाल नगेहें ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ जगत्रय जयो प्रताप, तपत अधिक ताप, तातें नाहिं रही चाप, अरी तगतगेहें ॥ सुजस निसान साज, विजय वधाइ लाज, एसे मुनिराज, ताकुं हम पाय लगेहें ॥ धर्म० ॥५॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ रुषजदेव हितकारी, जगत गुरु रुषजदेव हितकारी ॥ टेक ॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेसर, प्रथम यति ब्रह्मचारी ॥ रुषजदेव० ॥ ॥ १ ॥ वरसी दान देई तुम जगमें, इलति इति निवारी ॥ तेसी काही करतु नांही करुना, साहिब बेर हमारी ॥ रुषज०॥२॥ मांगत नहिं हम हाथी घोरे, धन कन कंचन नारी ॥ दियो मोहि चरन कमलकी सेवा, याहि लगत मोहि प्यारी ॥ रुषज० ॥

॥ ३ ॥ न्नव लीला वासित सुर डारे, तुंपर सबही उवारी ॥ मैं मेरो मन निश्चल कीनो, तुम आणा सिरधारी ॥ ऋषन्न० ॥ ४ ॥ ऐसो साहिब नहिं को-उ जगमें, यासुं होय दिलदारी ॥ दिलहि दलाल प्रेमके बिचे, तिहां हठ खेंचे गमारी ॥ ऋषन्न० ॥ ५ ॥ तुंमहि साहिब मैं हुं बंदा, या मत देऊ विसारी ॥ श्रीनयबिजय विबुध सेवकके, तुमहो परम उपकारी ॥ ऋषन्न० ॥ ६ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ गौतम गणधर नमियें हो, अहनिसि गौतम गणधर नमियें ॥ टेक ॥ नाम जपत नवही निधि पइएं, मन वंछित सुख लहिएं हो ॥ अह० ॥ १ ॥ घर अंगन जो सुरतरु फलियो, कहा काज बन न्नमियें ॥ सरस सुरन्नि घृत जो हुवे घरमें, तो क्यौं तैले जमियें हो ॥ अह० ॥ ॥ २ ॥ तेसी श्रीगौतम गुरु सेवा, ओर गेर क्युं रमियें ॥ गौतम नामें न्नवजल तरिएं, कहा बहुत तनु दमियें ॥ अह० ॥ ३ ॥ गुण अनंत गौतमके समरन, मिथ्यामति विष गमियें ॥ जस कहे गौतम

गुनरस आगें, रुचत न हैं हम अमियें॥अह०॥४॥इति॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग नट्ट ॥ सुखदाइरे सुखदाइ, दादो पासजी सुखदाइ ॥ ऐसो साहिब नहिं कोउ जगमें, सेवा कीजें दील लाइ ॥ सुख० ॥ १ ॥ सब सुखदाइ एह निनायक, एहि सायक सुसहाइ ॥ किंकरकुं करे शंकर सरिसों, आपे अपनी ठकुराइ ॥ सुख० ॥ ॥ २ ॥ मंगल रंग वधे प्रभु ध्यानें, पापवेली जाए करमाइ ॥ सीतलता प्रगटे घट अंतर, मिटे मोहकी गरमाइ ॥ सुख० ॥ ३ ॥ कहा करुं सुरतरु चिंतामनिकुं, जो में प्रभु सेवा पाइ ॥ श्री जसविजय कहे दर्शन देख्यो ॥ घर अंगन नवनिधि आइ॥सुख०॥४॥इति

॥ पद पचीशमुं ॥

॥ राग देशाख ॥ अबमें साचो साहिब पायो, टेक ॥ याकी सेव करतहुं याकुं, मुज मन प्रेम सुहायो ॥ अब० ॥ १ ॥ ठाकुर ओरन होवे अपनो, जो दीजे घर मायो ॥ संपति अपनी खिनुंमें देवे, वेतो दिलमें ध्यायो ॥ अब० ॥ २ ॥ उंरनकी जन करत चाकरी, दूरदेश पाय घासे ॥ अंतरयामी ध्याने

दीशे, वेतो अपने पासें ॥ अब० ॥ ३ ॥ ओर कब हुं कोउ कारन कोप्यो, बहुत उपाय न तूसे ॥ चिदानंदमें मगन रहतुहे,वेतो कबहुं न रुसे ॥अब०॥४॥ ओरनकी चिंता चिंतीन मिटे,सब दिन धंधे जावे ॥ थिरता गुन पूरन सुख खेले, वेतो अपने जावें ॥ अब० ॥ ५ ॥ पराधीन हे जोग ओरको, जातें होत वियोगी ॥ सदा सिद्ध समताइ विलासी, वेतो निजगुन जोगी ॥ अब० ॥ ६ ॥ ज्यौं जानो त्यौं युगति न जानो, में तो सेवक उनको ॥ पक्षपात तो परसुं होवे, राग धरतहुं गुनको ॥ अब० ॥ ७ ॥ जाव एक हे सब ज्ञानीको, मूरख जेद न जावे ॥ अपनो साहिब जो पहिचाने, सो जस लीला पावे ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ राग नूप कल्याण ॥ सयनकी नयनकी बयनकी छबी नीकी ॥ मयनकी गोरीतकी लगी मोहि अवियां ॥ मनकी लगन जर अंगनीय लागे अली, कल न परत कबु कहा कहुं बतीयां ॥ सयनकी०॥ १ ॥ मोहन मनाउ मानी, कहा बनी रति ठानी, शिवा देवीके नंदन मानो बिनतियां ॥ गुन गहो जस

बहो घर रहो सुख लहो, दुःख गमो मुझ समो रंग रमो रतियां ॥ सयनकी०॥ २ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग काफी हुशेनी ॥ साहिब ध्याया मन मोहना, अति सोहना जवि बोहना ॥साहिब०॥ टेक ॥ आजतें दिन सफल मेरे, मानुं चिंतामनी पाया ॥ साहिब० ॥ १ ॥ चोसठ इंद्र मिलिय पूज्यो, इंद्रानी गुन गाया ॥ साहिब० ॥ २ ॥ जनम महोत्सव करे देव, मेरुशिखर ले आया ॥ हरिको मन संदेह जानी, चरनन मेरु चलाया ॥ साहिब० ॥ ३ ॥ अहि वैताल रूप देखी, देवें न वीर खोजाया ॥ प्रगट जये पाय लागी, वीरनाम बुलाया ॥ साहिब० ॥ ४ ॥ इंद्र पूछे वीर कहे, व्याकरन नीपाया ॥ मोहिथी निशाल घरन, युंहिं वीर पढाया ॥ साहिब० ॥ ५ ॥ वरसी दान देइ धीर, लेइ व्रत सुहाया ॥ सालतले ध्यान ध्यातां, घाती घन खपाया ॥ साहिब० ॥ ६ ॥ लहि अनंत ज्ञान आप, रूप जगमगाया ॥ जस कहे हम सोइ वीर, ज्योतिसुं ज्योति मिलाया ॥सा०॥७॥

॥ पद अठावीशमुं ॥

॥ राग केदारो दरबारी ॥ आवे हाथी दल साज गाजते, नेमजी घर आवे, ए देशी ॥ प्रजुबल देखी सुरराज, लाजतो इम बोले ॥ देखो बल जांग्यो ज्रम सेरो, कोनहि जग तुम तोले ॥ प्रजु० ॥ १ ॥ टेक ॥ चरन अंगुठे कंपित सुरगिरि, मानुं नाचत डोले ॥ इन मिसि प्रजु मोहि उपर तूठे, हरख हियाको खोले ॥ प्रजु० ॥ २ ॥ फरत शेषधर हरत महोदधि, जय जंगुर जूगोले ॥ दिसि कुंजर दिग्मूढ जए तब, सबहिं मिलत एक टोले ॥ प्रजु० ॥ ॥ ३ ॥ लीला बाल अबाल पराक्रम, तीन जुवन धंधोले ॥ जस प्रजु वीर महेर अब कीजें, बहुरि हुन परिहु जोले ॥ प्रजु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणत्रीशमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ प्रजु धरी पीठ वेताल बाल, सातताललों वाधे ॥ काल रूप विकराल जयंकर, लागत अंबर आधे ॥ प्रजु० ॥ १ ॥ टेक ॥ बाल कहे को वीर ले गयो, परिजन देव आराधे ॥ तिल त्रिजाग चित्त वीर न खोज्यो, बल अनंत कुन

बाधे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ वढत रहे नांहि सुरभिपण, जानु मोहि विराधे ॥ कुलिश कठिन दृढ मुष्टि मार्यो, संकुचित तनु मन दाधे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ सुर कहे परतख मोहि नयोहे, पानी रस विण खाधे ॥ जस कहे इंद्र प्रसंस्यो तैसो, तुंहि वीर शिव साधे॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ राग श्रीराग ॥ अब मोही ऐसी आय बनी ॥ टेक ॥ श्री संखेश्वर पास जिनेसर, मेरे तुं एक धनी ॥ अब० ॥ १ ॥ तुं विनुं कोउ चित न सुहावे, आवे कोडि गुनी ॥ मन दोरे तुज ऊपर रसिओ, अलि जिम कमल भनी ॥ अब० ॥ २ ॥ तुज नामें सवि संकट चूरे, नागराज धरनी ॥ नाम जपों निसिवासर तेरो, या सुभ मुज करनी ॥ अब० ॥ ३ ॥ कोपानल उपजायत डुर्जन, मथन वचन अरनी ॥ नाम जपुं जलधार तिहां तुज, धारुं डुःख हरनी ॥ अब० ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वहु जन हे जगमां, मदन धरे धरनी॥ उनतें हम तुज भक्ति प्रभावे, भय नहें एक कनी ॥ अब० ॥ ५ ॥ सज्जन नयन सुधा-

रस अंजन, दुरजन रवि जरनी ॥ तुज मूरत निरखे सो पावे, सुखजस लील घनी ॥ अब०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग प्रभाति ॥ विमलाचल नित वंदिये, कीजे एहनी सेवा ॥ मानु हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ विमलाचल० ॥ १ ॥ टेक ॥ उज्वल जिनग्रह मंडले, तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानु हिमगिरि विभ्रमे, आइ अंबर गंगा ॥ विमलाचल० ॥ २ ॥ कोइ अनेरु जग नहीं, तीरथ ए तोले ॥ एम श्री मुख आगलें, श्री सीमंधर बोले ॥ विमलाचल० ॥ ॥ ३ ॥ जे सघलां तीरथ करे, यात्रा फल लहिएं ॥ तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगुण फल लहिएं ॥ विमलाचल० ॥ ४ ॥ जन्म सफल होए तेहनो, जो ए गिरि वंदे ॥ सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे ॥ विमलाचल० ॥ ५ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग देव गंधार ॥ देखो माइ अजब रूप जिनजीको ॥ देखो०॥ टेक ॥ उनके आगें और सबनको, रूप लगे मोहि फीको ॥ देखो०॥ १ ॥ लोचन

करुना अमृत कचोले, सुख सोहे अति नीको ॥ कवि जस विजय कहे यों साहिब, नेमजी त्रिभुवन टीको ॥ देखो० ॥ इति ॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥

॥ राग गुर्जरी पूर्वी ॥ बाला रूप शाला गले, माला सोहे मोतनकी ॥ करे नृत्य बाला गोरी, टोरी मिलि जोरीसी ॥ देवरकुं रहि घेरी, सेना मानु काम केरी, गुनगाती आवे तेरी, करे चित चोरिसी ॥ विवाह मनावे आली, पहिरी दखण फाली, वाकुं निहाले बाली, छोडी लाज होरीसी ॥ तोभी नेमि स्वामि गज, गामी जस कामी जस, धामी रहे ग्रहि मौन ध्यान, धारा वज्र दोरीसी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जबलग आवे नहिं मन ठाम ॥टेक॥ तबलग कष्ट क्रिया सवि निष्फल, ज्यौं गगने चित्राम ॥ जबलग० ॥ १ ॥ करनी विन तुं करे मोटाइ, ब्रह्मव्रति तुऊ नाम ॥ आखर फल न लहेगो ज्यों जग, व्यापारी विनु दाम ॥ जबलग० ॥ ॥ २ ॥ मुंड मुंडावत सवहि गडरिया, हरिण रोझ

वन धाम ॥ जटाधार वट जस्म लगावत, रासन्न स हतु है घाम ॥ जबलग० ॥ ३ ॥ एतेपर नहीं योगकी रचना, जो नहि मन विश्राम ॥ चित अंतर पर छलवेकुं चिंतवत, कहा जपत मुख राम ॥ जबलग० ॥ ४ ॥ वचन काय गोपें दृढ न धरे, चित्त तुरंग लगाम ॥ तामे तुं न लहे शिवसाधन, जिउ कण सुने गाम ॥ जबलग० ॥ ५ ॥ पढो ज्ञान धरो संजम किरिया, न फिरावो मन ठाम ॥ चिदानंद घन सुजस विलासी, प्रगटे आतमराम ॥ जबलग० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ चतुरनर सामायक नय धारो ॥ टेक ॥ लोक प्रवाह छांडकर अपनी, परिणति शुद्ध विचारो ॥ चतुरनर० ॥ १ ॥ द्रव्यत अखय अभंग आतमा, सामायक निज जातें ॥ शुद्धरूप समतामय कहीएं, संग्रह नयकी वातें ॥ चतुरनर० ॥ २ ॥ अब व्यवहार कहे युं सब जन, सामायक हुइ जावे ॥ तातें आचरना सो माने, ऐसा नैगम गावे ॥ चतुरनर० ॥ ३ ॥ आचरना रिजुसूत्र

सियलकी,बिनु उपयोग न माने ॥ आचारी उपयोगी आतम, सो सामायक जाने ॥ चतुरनर० ॥ ४ ॥ शब्द कहे संजत जो ऐसो,सो सामायक कहियें॥ चोथे गुनठाने आचरना,उपयोगें भिन्न लहियें ॥ चतुरनर० ॥ ५ ॥ अप्रमत्त ठाणे इर्याको, समभिरूढ नय साखी ॥ केवल ज्ञान दशा थिति उनकी, एवंभूते भाखी ॥ चतुरनर० ॥ ६ ॥ सामायक नय जो हु न जाने, लोक कहे सो माने ॥ ज्ञानवंतकी संगति नाहीं, रहियो प्रथम गुनठाने ॥ चतुर० ॥७॥ सामायक नर अंतर दृष्टे, जो दिनदिन अभ्यासें ॥ जग जसवाद लहे सो बैठो, ज्ञानवंतके पासें ॥ चतुरनर० ॥ ८ ॥

॥ पद छत्रीशमुं ॥

॥ राग विहागडो ॥ सबल या छाक मोह मदिराकी ॥ टेक ॥ मिथ्यामतिके जोरे गुरुकी, वचन शक्ति जिहां थाकी ॥ सबल० ॥ १ ॥ निकट दशा छांरु जरु उंची, दृष्टि देतहे ताकी ॥ न करे किरिया जनकुं भाखे, नहि भवथिति पाकी ॥ सबल० ॥२॥ भाजन गत भोजन कोउ छांडी, दसत्तर जिऊं दोरे॥

गहत ज्ञानकुं किरिया त्यागी, होत ओरकी ओरें॥ सबल० ॥ ३ ॥ ज्ञानवात निसुनि सीर धूने, लागे निज मतिमीठी ॥ जो कोउ खोल कहे किरियाको, तो माने नृप चीठी ॥सबल०॥ ज्युं कोउ तारु जलमें पेसी, हाथ पाउ न हलावे ॥ ज्ञानसेती किरिया सब लागी, युं अपनो मत गावे ॥ सबल० ॥ ५ ॥ जैसे पाग कोउ सिर बांधे, पहिरन नहिं लंगोटी॥ सद्गुरु पास क्रिना बिनु सीखे, आगम वात त्युं खोटी ॥ सबल० ॥ ६ ॥ जैसे गज अपने सिर ऊपर, बार आपही मारे ॥ ज्ञान ग्रहत क्रिया तुछारत, अल्पबुद्धि फल हारे ॥ सबल० ॥ ७ ॥ ज्ञान क्रिया दोउ शुद्ध धरेंगे, शुद्ध कहे निरधारी ॥ जस प्रताप गुननिधिकी जाउं, उनकी में बलिहारी ॥ सबल० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद सडत्रीशमुं ॥

॥ राग काफी जंगलो ॥ चेतन अब मोहि दर्शन दीजे ॥ टेक ॥ तुम दर्शन शिवसुख पामीजे, तुम दर्शन भव छीजे ॥ चेतन० ॥ १ ॥ तुम कारन तप संयम किरिया, कहो कहांलों कीजे ॥ तुम दर्शन

बिनुं सब या झूठी, अंतर चित्त न भीजे ॥ चेतन०॥ ॥ २ ॥ क्रिया मूढमति कहे जन केइ, ज्ञान ओरकुं प्यारो ॥ मिलत भावरस दोउ न भाखे, तुं दोनुंतें न्यारो ॥ चेतन०॥ ३ ॥ सबमें हे ओर सबमें नांही, पूरन रूप एकेलो ॥ आप स्वभावे वे किम रमतो, तुं गुरु अरु तुं चेलो ॥ चेतन० ॥४॥ अकल अलख प्रभु तुं सब रूपी, तुं अपनी गति जाने ॥ अगम रूप आगम अनुसारें, सेवक सुजस वखाने ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अडत्रीशमुं ॥

॥ राग भीम पलासी ॥ राम चिरीया चेहरीहो ॥ एदेशी ॥ मन कितहुं न लागे हेजेंरे ॥ मन० ॥ टेक० ॥ पूरन आस भइ अली मेरी, अविनासीकी सेजेंरे ॥ मन० ॥ १ ॥ अंग अंग सुनि पिउ गुन हरखे, लागो रंग करेजेंरे ॥ एतो फिटायवो नवि फिटे, करहु जोर जोरेजेरे ॥ मन० ॥ २ ॥ योग अनालंबन नहिं निष्फल, तीर लगो ज्युं वेजेंरे ॥ अबतो भेद तिमिर मोहि भागो, पूरन ब्रह्मकी सेजेरे ॥ सुजस ब्रह्मके तेजेरे ॥ मन० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणचालीशमुं ॥

॥ राग शोनी ॥ चिदानंद अविनासीहो, मेरो चिदानंद अविनासी हो ॥ टेक ॥ कोर मरोर करमकी मेटे, सहज स्वभाव विलासीहो ॥ चिदानंद० ॥ ॥ १ ॥ पुद्गल मेल खेलजो जगको, सोतो सबहि बिनासीहो ॥ पूरन गुन अध्यातम प्रगटें, जागे जोग उदासीहो ॥ चिदानंद० ॥ २ ॥ नाम भेख किरियाकुं सबही, देखे लोक तमासीहो ॥ चिन मूरत चेतन गुन चिने, साचो सोउ सन्यासीहो ॥ चिदानंद० ॥ ३ ॥ दोरी देवारकी किति दोरे, मति व्यवहार प्रकासीहो ॥ अगम अगोचर निश्चय नयकी, दोरी अनंत अगासी हो ॥ चिदानंद० ॥ ४ ॥ नानाघटमें एक पिछाने, आतमराम उपासी हो ॥ भेद कलपना में जरु भूल्यों, लुब्ध्यो तृष्णा दासीहो ॥ चिदानंद० ॥ धर्म सिद्धि नवनिधि हे घटमें, कहा ढुंढत जइ काशीहो ॥ जस कहे शांत सुधारस चाख्यो, पूरन ब्रह्म अभ्यासीहो ॥ चिदा० ॥ ६ ॥

॥ पद चालीशमुं ॥

॥ राग होरी ॥ हरी नारी टोले मिलि रंग हो

होरी ॥ टेक ॥ फाग रमे तजी लाल, रंग हो होरी, देवरकुं घेर रही ॥ रंगहो० ॥ व्याह मनावन काज लाख ॥ रंग० ॥ १ ॥ ताल कंसाल मृदंगसुं ॥ रंग० ॥ मधुर बजावत चंग लाल ॥ रंग० ॥ गयव गुलाल नयन जरे ॥ रंग० ॥ वश्न वजावे अनंग लाल ॥ रंग० ॥ २ ॥ पिचकारी छांटे पीय ॥ रंग० ॥ जरी जरी केसर नीर लाल ॥ रंग० ॥ मानुं मदन करती छटा ॥ रंग० ॥ अलवे उडावे अंबीर लाल ॥ रंग० ॥ ३ ॥ योवन मद मदिरा छाकी ॥ रंग० ॥ गावत प्रेम धमाली लाल ॥ रंग० ॥ राचत माचत नाचती ॥रंग०॥ कौतुकसुं करे आली लाल ॥रंग०॥ ॥ ४ ॥ सोहे मुख तंबोलसुं ॥रंग०॥ मानु संध्यायुत चंद लाल ॥ रंग० ॥ पूरित केसर फुलेलसुं ॥ रंग० ॥ झरत मेह ज्युं बुंद लाल ॥ रंग० ॥ ५ ॥ थण जुज मूल देखावती ॥ रंग० ॥ बाह लगावत कंठ लाल ॥ रंग० ॥ कहे देवर परनो पीया ॥ रंग० ॥ परनाविन पुरुष उलंठ लाल ॥ रंग० ॥ ६ ॥ रूख मिलित रहे बेलीसुं ॥ रंग० ॥ सागर गंगा रंग लाल ॥ रंग० ॥ जान ठगाने अजानवें ॥ रंग० ॥ कितं न करो त्रिया

संग लाल ॥ रंग० ॥ ७ ॥ युं विलास हरी नारीके ॥ रंग० ॥ देखी धरे प्रभु मोन लाल ॥ रंग० ॥ स्त्री शिशु सठ हठ न तजे ॥ रंग०॥ करे वचन श्रम कों न लाल ॥ रंग० ॥ ८ ॥ जनके जाने कहा भयो ॥ रंग०॥ मनको मान्यो प्रमान लाल ॥ रंग०॥ चतुर-न चूके नेमजी ॥ रंग० ॥ पाए सुजस कल्यान लाल ॥ रंग० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ पद एकतालीशमुं ॥

॥ जयजय जयजय पास जिणंद ॥ टेक ॥ अं-तरीक प्रभु त्रिभुवन तारन, भविक कमल उल्लास दिणंद ॥ जय० ॥ १ ॥ तेरे चरन शरन में कीने, तुं बिनु कुन तोरे भवफंद ॥ परम पुरुष परमारथ दरशी, तुं दिये भविककुं परमानंद ॥ जय० ॥ २ ॥ तुं नायक तुं शिव सुख दायक, तुं हित चिंतक तुं सुखकंद ॥ तुं जन रंजन तुं भव भंजन, तुं केवल कमला गोविंद ॥ जय० ॥ ३ ॥ कोडि देव मिलिके कर न शके, इक अंगुठ रूप प्रतिछंद ॥ ऐसो अद्भुत रूप तिहारो, वरषत मानुं अमृतको बुंद ॥ जय० ॥ ॥ ४ ॥ मेरे मनमधुकरके मोहन, तुम हो विमल

सदल अरविंद. ॥ नयन चकोर विलास करतुहे, देखत तुम मुख पूरनचंद ॥ जय० ॥ ५ ॥ दूर जावे प्रभु तुम दासनतें, दुःखदोहग दालिद्र अघदंद ॥ वाचक जस कहे सहस फलतें तुमहों, जे बोले तुम गुनके वृंद ॥ ज० ॥ ६ ॥

॥ पद बेतालीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ वामानंदन जगदानंदन, सेवकजन आसा विसराम ॥ नेक निजर करी मोहि पर निरखो, तुम हो करुनारसके धाम ॥ वामा० ॥ ॥ १ ॥ टेक ॥ इतनी भूमि प्रभु तुमही आन्यो, परिपरि बहुत बढाइ माम ॥ अब दु चार गुनगान बढावत, लागत हे क्या तुमकुं दाम ॥ वामा० ॥ ॥ २ ॥ अहनिसि ध्यान धरुं हुं तेरो, मुखथी न विसारुं तुम नाम ॥ श्रीनयविजय विबुध सेवक कहे, तुम हो मेरे आतमराम ॥ वामा० ॥ ३ ॥

॥ पद तेतालीशमुं ॥

॥ राग काफी ॥ अजीत देव मुझ वालहा, ज्युं मोरा मेहा ॥ टेक ॥ ज्युं मधुकर मन मालती, पंथी मन गेहा ॥ अजीत० ॥१॥ मेरे मन तुंहि रुच्यो, प्र-

नु कंचन देहा ॥ हरीहर ब्रह्म पुरंदरा, तुज आगें केहा ॥अजीत०॥२॥ तुंही अगोचर को नहीं, सज्जन गुन रेहा ॥ चाहे ताकुं चाहियें, धरी धर्म सनेहा ॥ अजित० ॥ ३ ॥ नक्ति वछल जग तारनो, तुं बिरुद वदेहा ॥ वीतराग हुए वालहा ॥ क्युं कर्म री बेहा ॥ अजित० ॥ ४ ॥ जे जिनवर हे नरतमें, एरावत विदेहा ॥ जस कहे तुज पद प्रणमतें, सब प्रणमे तेहा ॥ अजित० ॥ ५ ॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ संनव जिन जब नयन मिल्यो हो ॥ टेक ॥ प्रगटे पूरव पुण्यके अंकुर, तबतें दिन मोहि सफल वल्यो हो ॥ संनव० ॥ १ ॥ अंगनमें अमियें मेह वूठे, जन्म तापको व्याप गल्यो हो ॥ जैसी नक्ति तैसी प्रनु करुना, श्वेत संखमें दुध मिल्यो हो ॥ संनव० ॥ २ ॥ दरत फिरत हे दुरही दीलतें, मोह मल्ल जिणे जगत्रय बल्यो हो ॥ समकित रतन लेहु दरिसणतें, अब न जाऊं कुगति रल्यो हो ॥ संनव० ॥ ३ ॥ नेह नजर नर निरखतही मुझ, प्रनुसुं हियडो हेज हल्यो

हो ॥ श्रीनयविजय विबुध सेवककुं ॥ साहिब सुरतरु होय फल्यो हो ॥ संजव० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद पीसतालीशमुं ॥

॥ राग नट्ट ॥ प्रजुतें हियडो हेज हल्यो हो ॥ टेक ॥ याकी सोजा विजित तपस्या, कमल करतुंहे जलचारी ॥ विधुके सरन गयो मुख अरिके, बनतें गगन हरिण हारी ॥ प्रजु० ॥ १ ॥ सहजहि अंजन मंजुल निरिषत, खंजन गरव दिओ मारी ॥ बिन लइ हे चकोरकी सोजा, अग्नि जखे सो दुःखजारी॥ प्रजुतें० ॥ २ ॥ चंचलता गुन लियो मीनको, अलि ज्युं तारी हे कारी ॥ कहुं सुजगता केती इनकी, मोहि सबहि अमरनारी ॥ प्रजुतें० ॥ ३ ॥ घूमत हे समता रस पाने, जैसे गजवर मद जारी ॥ तीन जुवनमां नही को इनको, अजिनंदन जिन अनुकारी ॥ प्रजुतें० ॥ ४ ॥ मेरे मन तो तुमहि रुचत हे, परे कुन परकी लारी ॥ तेरे नयनकी मेरे नयनमें, जस कहे देउ छबि अवतारी ॥ प्रजुतें० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद छेतालीशमुं ॥

॥ राग मारु ॥ सुमति नाथ साचाहो ॥ टेक ॥

पर पर परखतहि नया, जैसा हीरा जाचाहो ॥ ओर देव सवि परहस्या, में जाणी काचाहो ॥ सुमति० ॥ ॥ १ ॥ तेसी किरिया है खरी, जैसी तुज वाचाहो ॥ ओर देव सवि मोहें नस्या, सवि मिथ्या माचाहो ॥ सुमति० ॥ २ ॥ चउरासी लखवेषमां, हुं बहु पर नाचाहो ॥ मुगति दान देइ साहिबा, अब करहो ऊंचाहो ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ लागी अग्नि कषायकी, सब गेरही आचाहो ॥ रक्षक जाणी आदस्या, में तुम शरन माचाहो ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ पक्षपात नहिं कोउसुं, नहिं लालच लांचाहो ॥ श्रीनयविजय सुशिष्यको, तोसुं दिल राचाहो ॥ सुमति० ॥५॥ इति ॥

॥ पद सुडतालीशमुं ॥

॥ राग पूरवी ॥ घरि घरि सांजरे सांइ सलूना, घरि घरि० ॥ टेक ॥ पद्म प्रभु जिन दिलसें न बिसरे, मानु कियो कछु गुनको दूना ॥ दरसन देखतही सुख पाउं, तो चिन होतहुं उन्ना ऊना ॥ घरि० ॥ १ ॥ प्रभुगुन ज्ञान ध्यान विधि रचना, पान सुपारी काथा चूना ॥ राग नयो दिलमें आयोगें, रहे छिपाया छाना छूना ॥ घरि० ॥ २ ॥ प्रभुगुन

चित्त वांध्यो सब साथे, कुन पेसे लेइ घर खूनां ॥ राग जग्या प्रभुसुं मोहि परगट, कहो नया कोऊ कहो जूना ॥ घरि० ॥ ३ ॥ लोक लाजसें जो चित चोरे, सोतो सहज विवेकही सूना ॥ प्रभुगुन ध्यान विगर भ्रम भूला, करे किरिया सो राने रूना ॥ घरि० ॥ ४ ॥ मेंतो नेह कियो तोहि साथे, अब निवाह तोतो वइ हूना॥जस कहे तो विन ओर न सेवुं, अमिय खाइ कुन चाखे लूना ॥ घरि० ॥ ५॥ इति ॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥

॥ राग इमन कल्याण ॥ ऐसे सामी सुपार्श्वसें दिल लगा, दुःखभगा सुख जगा जगतारणा ॥ राजहंसकुं मानसरोवर, रेवा जल ज्युं वारणा ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ टेक॥ मोरकुं मेह चकोरकुं चंदा, मधु मनमथी चित्त ठारना ॥ फूल अमूल भमरकी अंबही, कोकिलकुं सुखकारना ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ सीताकुं राम काम ज्युं रतिकुं, पंथीकुं घर वारना ॥ दानीकुं त्याग याग वल्लभकुं, योगीकुं संयम धारना ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ नंदनवन ज्युं सुरकुं वल्लभ, न्यायीकुं न्याय निहारना ॥ त्युं मेरे मन तुंहि सुहायो, ओर

तो चिततें उतारनां ॥ ऐसे० ॥४॥ श्रीसुपार्श्व दरिश-
न पर तेरे, कीजें कोम्री उवारना ॥ श्री नय विजय विबु-
ध सेवककुं, दियो समता रस पारना॥ऐसे०॥५॥ इति ॥

॥ पद ओगणपचाशमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञ जिनराज राजे,
वदन पूनमचंदरे ॥ ज्ञविक लोक चकोर निरखत,
लहे परमानंदरे ॥ श्रीचंद्र० ॥ १ ॥ टेक ॥ महमहे
महिमाएं जसज्ञर, सरस जस अरविंदरे ॥ रण
ऊणे कविजन ज्ञमर रशिया, लहि सुख मकरंदरे
॥ श्री चंद्र०॥ २ ॥ जस नामे दोलत अधिक दिये,
टले दोहग दंदरे ॥ जस गुन कथा ज्ञव व्यथा ज्ञां-
जे, ध्यान शिवतरु कंदरे ॥ श्री चंद्र० ॥ ३ ॥ विपुल
हृदय विशाल ज्ञुजयुग, चलित चाल गयंदरे ॥ अ-
तुल अतिशय महिमा मंदिर, प्रणत सुरनर वृंदरे ॥
श्री चंद्र० ॥ ४ ॥ में दास चाकर प्रज्ञु तेरो, शीष्य
तुज फरजंदरे ॥ जसविजय वाचक इम विनवे, टालो
मुज ज्ञव फंदरे ॥ श्री चंद्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पचाशमुं ॥

॥ राग केदारो ॥ में कीनो नहीं तो बिन और

सुं राग ॥ टेक ॥ दिनदिन वान चढे गुन तेरो, ज्युं कंचन परजाग ॥ ओरनमें हे कषायकी कलिका, सो क्युं सेवा लाग ॥ में कीनो०॥१॥ राजहंस तुं मानसरोवर, ओर अशुचि रुचि काग ॥ विषय जुजंगम गरुम तुं कहियें, ओर विषय विषनाग ॥ में कीनो० ॥ २ ॥ ओर देव जल ठीलर सरिखे, तुं तो समुद्र अथाग ॥ तुं सुरतरु जग वंछित पूरन, ओर तो सुको साग ॥ में कीनो० ॥ ३ ॥ तु पुरुषोत्तम तुंहि निरंजन, तुं शंकर वडजाग ॥ तुं ब्रह्मा तुं बुद्धि महाबल, तुंहि देव वीतराग ॥ में कीनो० ॥ ४ ॥ सुविधिनाथ तुज गुन फूलनको, मेरो दिल हे बाग ॥ जस कहे जमर रसिक होइ तामें, लीजें जक्ति पराग ॥ में कीनो० ॥ ५ ॥

॥ पद एकावनमुं ॥

॥ राग फागनी देशी ॥ चउ कसाय पाताल कलश जिहां, तृष्णा पवन प्रचंम ॥ बहु विकल्प कल्लोल चढतुहे, आरति फेन उदंड ॥ १ ॥ जवसायर जीषण तारीएं हो, अहो मेरे ललना ॥ पासजी त्रिजुवन नाथ दिलमें, ए विनति धारियें हो ॥ अ० ॥

॥ २ ॥ जरत उदाम काम वडवानल, परत सैल गिरी शृंग ॥ फिरत व्यसन बहु मगर तिमिंगल, करतहे निमग उमंग ॥ अ० ॥ ३ ॥ भमरी याके बिच भयंकर, उलटी गुलटी वाच ॥ करत प्रमाद पिशाच सहित जिहां, अविरति व्यंतरी नाच ॥ अ० ॥ ४ ॥ गर्जत अरति फुरति रति विजुरी, होत बहोत तोफान ॥ लागतियोरकुं गुरु मलवारी, धरम जिहाज निदान ॥ अ० ॥ ५ ॥ जुरइं पाटे ए जिउ अति जोरी, सहस अढार शीलंग ॥ धरम जिहाज तिउ सज करी चलवो, जस कहे शिव-पुर चंग ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ पद बावनमुं ॥

॥दुख टलियां मुख दीठे हो मुज सुख उपनोरे, भेट्यो भेट्यो वीर जिणंदरे ॥ हवे मुज मनमंदिर-मां प्रभु आवी वसोरे, पामुं पामु परमानंदरे ॥दु० ॥ ॥१॥ पीठ बंध इहां कीधो समकीत वज्रनोरे, काढ्यो काढ्यो कचरो नें भ्रांतिरे ॥ इहां अति उंचा सोहे चा-रित्र चंद्रुआरे, रूडी रूडी संवर भांतिरे ॥ दु० ॥ ॥ २ ॥ कर्म विवर गोखे इहा मोति जुमकारे, जुले

जुबे धीगुण आठरे ॥ बार नावना पंचाली अचरय करेरे, कोरी कोरी कोरणी काठरे ॥ डु० ॥ ३ ॥ इहां आवी समता राणीसुं प्रज्ञु रमोरे, सारि सारि थिरता सेजरे ॥ किम जइ शकशो एकवार जो आवशोरे, रंज्या रंज्या हियमानी हेजरे ॥ डु० ॥ ४ ॥ वयज अरज सुनी प्रज्ञु मनमंदिर आवियारे, आपे तुग तुग त्रिजुवन नाणरे ॥ श्री नयविजय विबुध पय सेवक नणेरे, तेंणे पाम्या पाम्या कोमि कल्याणरे ॥ डु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेपनमुं ॥

॥ सज्जन राखत रीति नली, विनु कारन उपकारी उत्तम, जाइ सहज मिलि ॥ डुर्जनकी मन परिनति काली, जैसी होय गली ॥ स० ॥ १ ॥ ओरनको देखत गुन जगमें, डुर्जन जाये जली ॥ फल पावे गुन गुनको ज्ञाता, सज्जन हेज हली ॥ स० ॥ ॥ २ ॥ ऊंच इति पद बेठो डुर्जन, जाइ नांहिं वली ॥ उपगृह उपर बेठी मीनी, होत नहिं उजली ॥ स० ॥ ३ ॥ विनय विवेक विचारत सज्जन, नड स्वाव नली ॥ दोष लेश जो देखे कबहुं, चाखे

चतुर टली ॥ स० ॥ ४ ॥ अब में ऐसो सज्जन पायो, उनकी रीत जली ॥ श्रीनयविजय सुगुरु सेवातें, सुख रस रंग रली ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चोपनमुं ॥

॥ आज आनंद जयो, प्रजुको दर्शन लह्यो, रोम रोम सितल जयो, प्रजु चित्त आयो हे ॥ आ० ॥ मन हुंते धास्या तोहे, चलके आयो मन मोहे, चरण कमल तेरो, मनमें ठहरायो हे ॥ आ० ॥ १ ॥ अकल अरूपी तुंही, अकल अमूरति योहीं, निरख निरख तेरो, सुमतिशुं मिलायो हे ॥ आ० ॥ २ ॥ सुमति स्वरूप तेरो, रंग जयो एक अनेरो, वाइ रंग आत्म प्रदेशे, सुजस रंगायो हे ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंचावनमुं ॥

॥ ज्ञानादिक गुण तेरो, अनंत अपर अनेरो ॥ वाही कीरत सुन मेरो, चित्तहुं जस गायो हे ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ तेरो ग्यान तेरो ध्यान, तेरो नाम मेरो प्रान, कारण कारज सिद्ध्यो, ध्याताध्येय ठहरायो हे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ बूट गयो भ्रम मेरो, दर्शन पायो में तेरो ॥ चरण कमल तेरो, सुजस रंगायो हे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥

॥ पद छप्पनमुं ॥

॥ बाद बादीसर ताजे, गुरु मेरो गछ राजे, पंच महाव्रत जहाज, सुधर्मा ज्युं सवायो हे ॥ वा० ॥ ॥ १ ॥ विध्याको वडो प्रतापसंग, जल ज्युं उठत तुरंग, निरमल जेसो संग, समुद्र कहायो हे ॥ वा० ॥ २ ॥ सत्तसमुद्र जस्यो, धरम पोत तामे तस्यो, शील सुखान वालम, क्षमालंगर भास्यो हे ॥ वा० ॥ ३ ॥ सहरू संतोष करी, तपतो तपी ह्या भ-री, ध्यान रंजक देत धरी, मोला ग्यान चलायो हे ॥ वा० ॥ ४ ॥ एसो जहाज क्रियाकाज, मुनिराज सजो साज, दया मया मणि माणिक, ताहिमें भरा-यो हे ॥ वा० ॥ ५ ॥ पुण्य पवन आयो, सुजस ज-हाज चलायो, प्राणजीवन एसो माल, घर बेठे पा-यो हे ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥

॥ एरी आज आनंद भयो मेरे तेरो, मुख निरख निरख रोम रोम शीतल भयो अंगोअंग ॥ ए० ॥ शुद्ध समजल समता रस जीलत, आनंद रंग भ-यो अनंतरंग ॥ ए० ॥ १ ॥ एसी आनंद दशा प्र-

गटी चित्त, अंतर ताको प्रजाव चलत, निरमल गंगवाही गंग॥समता दोउ मिल रहे, जस विजय जीलत ताके संग ॥ ए० ॥ ९ ॥

॥ पद अठावनमुं ॥

॥ जो जो देखे वीतरागने, सो सो होशे वीरारे ॥ बिन देखे होसे नहीं कोइ, कांइ होए अधीरा रे ॥ जो० ॥ १ ॥ समय एक धनहीं घटसी, जो सुख दुःखकी पीमारे ॥ तुं क्युं सोच करे मन कूमा, होवे वज्र जो हीरारे ॥ जो० ॥ २ ॥ लगे न तीर कमान बान क्युं, मारी सके नही मिरारे॥ तुं संजार पुरुष बल अपनो, सुख अनंत तो पीरारे ॥ जो० ॥ ३ ॥ नयन ध्यान धरो वा प्रजुको, जो टारे जव जीरारे ॥ सजसचेतन धरम निज अपनो, जो तारे जव तीरारे ॥ जो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणसाठमुं ॥

॥ जजन बिनुं जीवित जेसे प्रेत, मलिन मंदमति डोलत घर घर, उदर जरनके हेत ॥ ज० ॥ १ ॥ दुर्मुख वचन बकत नित निंदा, सज्जन सकल दुःख देत ॥ कबहुं पापको पावत पैसो, गाढे धुरीमे देत॥

ज० ॥ २ ॥ गुरु ब्रह्मन अचुत जन सज्जन, जातन कवण निवेत ॥ सेवा नहीं प्रभु तेरी कबहु, भुवन नीलको खेत ॥ ज० ॥ ३ ॥ कथे नहीं गुन गीत सुजस प्रभु, साधन देव अनेत ॥ रसनारस विगारो कहांलों, बुडत कुटुंब समेत ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद साठमुं ॥

॥ प्रभु तेरो गुन ज्ञान, करत महा मुनि ध्यान, समरत आठो जाम, ह्रदेमें समायो हे ॥ प्रभु० ॥ ॥ १ ॥ मन मंजन कर लायो, सुद्ध समकित ठहरायो, वचन काय समजायो, एसे प्रभुकुं ध्यायो हे ॥ प्र० ॥ २ ॥ ध्यायो सही पायो रस, अनुभव जाग्यो जस, मिट गयो भ्रमको रस, ध्याता ध्येय समायो हे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रगट भयो महा प्रकास, ज्ञानको महा उल्लास ॥ एसो मुनिराज ताज, जस प्रभु गायो हे ॥ प्र० ॥ ४ ॥

॥ पद एकसठमुं ॥

॥ राग कनडो ॥ ए परम ब्रह्म परमेश्वर, परम आनंदमयि सोहायो ॥ ए परतापकी सुख संपत्ती बरनी न जात मोपें, ता सुख अलख कहायो ॥

ए० ॥ १ ॥ ता सुख ग्रहवेकुं मुनि मन खोजत, मन मंजन करं ध्यायो ॥ मनमंजरी नइ, प्रफुल्लीत द-सा लइ, तापर नमर लोनायो ॥ ए० ॥२॥ नमर अ-नुनव नयो, प्रनुगुन वास लह्यो ॥ चरन करन तेरो, अलख लखायो ॥ एसी दशा होत जब, परम पुरुष तब, पकरत पास पठायो ॥ ए० ॥ ३ ॥ तब सुजस नयो, अंतरंग आनंद लह्यो, रोम रोम सीतल न-यो, परमात्म पायो ॥ अकल स्वरूप नूप, कोऊ न परखत कूप, सुजस प्रनु चित आयो ॥ ए० ॥ ४ ॥

॥ पद बासठमुं ॥

॥ राग ध्रुपद ॥ केसे देत कर्मनकुं दोस, मन नि-वहे वेहे आपु कानो ॥ ग्रहे राग अरु दोष ॥ के० ॥ विषयके रस आप नूलो, पाप सो तन ठोस ॥के०॥१॥ देवधर्म गुरुकी करी निंदा, मिथ्यामतके जोस ॥ के० ॥ २ ॥ फल उदय नइ नरक पदवी, नजोगे केको संग ॥ के० ॥३॥ किए आपुं कर्म जुगतें, अब कहा करो सोस ॥के०॥४॥ दुःख तो बहु काल वीत्यो, लहे न सुख जल ओस० ॥ के० ॥ ५ ॥ क्रोध मान माया लोन, नख्यो तन घट ठोस ॥ के० ॥ ६ ॥ चेत चेतन

पाय सुजस, मुगति पंथसो पोस ॥ के० ॥ ७ इति ॥

॥ पद त्रेसठमुं ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ तुहारे शिर राजत अजब जटा, ठारये मानुं गयल न ठारत ॥ सीस सणगार बटा ॥ तुहारे० ॥ १ ॥ किधुं गंगा अमरीस सुर सेवत, यमुना उजय तटा ॥ गिरिवर सिखरें एह अनोपम, उन्नत मेघ घटा ॥ तु० ॥ २ ॥ केसे बाल लगे जवि जवजल, तारत अति विकटा ॥ हरि कहे जस प्रजु रूपज रखो ए, हमहिं अति उलटा ॥ तु० ॥ ३ ॥

॥ पद चोसठमुं ॥

॥ राग विहाग ॥ माया कारमीरे, माया म करो चतुर सुजाण ॥ माया वायो जगत वलुधो, डुःखीयो थाय अजान ॥ जे नर मायायें मोहि रह्यो, तेने सुपें नही सुख ठाम ॥ माया० ॥ १ ॥ न्हाना मोटा नरखी माया, नारीने अधकेरी ॥ वली विशेषे अधिकी माया, गरढाने जाजेरी ॥माया०॥२॥ माया कामण माया मोहन, माया जग धूतारी ॥ मायाथी मन सहुनुं चलीयुं, लोजीने बहु प्यारी ॥ माया० ॥

॥ ३ ॥ माया कारन देश देशांतर, अटवी वनमां जाय ॥ जहाज वेसीने द्वीप द्वीपांतरें, जइ सायर जंपलाय ॥ माया० ॥ ४ ॥ माया मेली करी बहु भेली, लोभे लक्षण जाय ॥ भयथी धन धरतीमां गाडे, ऊपर विसहर थाय ॥ माया० ॥ ५ ॥ योगी जति तपसी संन्यासी, नग्न थइ परवरिया ॥ ऊंधे मस्तक अग्नि तापें, मायाथी न ऊगरिया ॥ माया० ॥ ॥ ६ ॥ शिवभूति सरिखो सत्यवादी, सत्यघोष कहेवाय ॥ रत्न देखी तेनुं मन चलियुं, मरीने दु- र्गति जाय ॥ माया० ॥ ७ ॥ लोभ धरत मायायें रझियो, पडियो समुद्र मोझार ॥ मुठ माखनीयो थइने मरियो, पोतो नरक मोझार ॥ माया० ॥ ८ ॥ मन वचन कायायें माया, मूकी वनमां जाय ॥ धन धन ते मुनिश्वर राया, देव गांधर्व जस गाय ॥ मा- या० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ पद पांशठमुं ॥

॥ कब घर चेतन आवेंगें, मेरे कब घर चेतन आवेंगे ॥ टेक ॥ सखिरि लेवुं बलैया बार बार ॥ मेरे कब० ॥ रेन दीना मानुं ध्यान तुं साढा, कब

हुंके दरस देखावेंगे ॥ मेरे कब० ॥ १ ॥ विरह दीवानी फिरुं ढुंढती, पीउ पीउ करके पोकारेंगे ॥ पीउ जाय मले ममतासें, काल अनंत गमावेंगे ॥ मेरे कब० ॥ २ ॥ करुं एक उपायमें उद्यम, अनुजव मित्र बोलावेंगे ॥ आय उपाय करके अनुजव, नाथ मेरा समजावेंगे ॥ मेरे कव० ॥ ३ ॥ अनुजव मित्र कहे सुनो साहेब, अरज एक अवधारेंगे ॥ ममता त्याग समता धर अपनो, वेगें जाय मनावेंगे ॥ मेरे कब० ॥ ४ ॥ अनुजव चेतन मित्र मिले दोऊ, सुमति निशान घुरावेंगे ॥ विलसत सुख जस लीलामें, अनुजव प्रीति जगावेंगे ॥ मेरे कव० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद् ग्यसठमुं ॥

॥ राग मोतीमानी देशी ॥ सूरत मंमन पास जिणंदा, अरज सुणो टालो डुःख दंदा ॥ साहेबा रंगीला हमारा, मोहना रंगीला ॥ तुं साहेब हुं हुं तुज बंदा, प्रीति बनी जैसी कैरव चंदा ॥ सा० ॥१॥ तुजसुं नेह नहीं मुज काचो, घणही न नांजे हीरो जाचो ॥सा०॥ देतां दान ते कांइ विमासो, लागे मुज मन एह तमासो ॥ सा० ॥ २ ॥ केडलागा ते केड न

ठोरे, दीयो वंछित सेवक करठेरे ॥ सा० ॥ अखय खजानो तुज नवी खूटे, हाथा थकी तो सुं नवी छूटे ॥ सा० ॥ ३ ॥ जो खिजमतमां खामी दाखो, तो पण निज जाणी हित राखो ॥ सा० ॥ जेणे दीधुं छे तेहज देशे, सेवा करशे ते फल लेशे ॥ सा० ॥ ४ ॥ धेनु कूप आराम स्वभावे, देतां देतां संपत्ती पावे ॥ सा०॥ तिम मुजने तमो जो गुण देशो, तो जगमां जस अधिक वहेशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अधिकुं ओछुं किशुं रे कहावो, जिमतिम सेवक चित्त मनावो ॥ सा० ॥ माग्या विण तो माय न पिरसे, ए उखाणो साचो दिसे ॥ सा० ॥ ६ ॥ इम जाणीने विनती कीजें, मोहनगारा मुजरो लीजें ॥ सा० ॥ वाचक जस कहे खमियें आसंगो, दियो शिव सुख धरी अविहड रंगो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति

॥ पद सडसठमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ चेतन मोहको संग निवारो, ग्यान सुधारस धारो ॥ चे० ॥ १ ॥ मोह महातम मल दूरेरे, धरे सुमति परकास ॥ मुक्ति पंथ परगट करेरे, दीपक ज्ञान विलास ॥ चे० ॥ २ ॥ ज्ञानी ज्ञान म-

गन रहेरे, रागादिक मल खोय ॥ चित्त उदास करनी करेरे, कर्मबंध नहिं होय ॥चे०॥३॥ हीन जयो व्यवहारमें रे, युक्ति न उपजे कोय ॥ दीन जयो प्रजु पद जपेरे, मुगति कहांसुं होय ॥ चे० ॥ ४ ॥ प्रजु समरो पूजो पढोरे, करो वीविध व्यवहार ॥ मोक्ष स्वरूपी आतमारे, ग्यान गमन निरधार ॥ चे० ॥ ॥ ५ ॥ ज्ञान कला घट घट वसेरे, जोग जुगतिके पार ॥ निज निज कला उद्योत करेरे, मुगति होय संसार ॥ चे० ॥ ६ ॥ वहु विध क्रिया कलेसशुं रे, शिव पद न लहे कोय ॥ ग्यान कला परगाससों रे, सहज मोक्ष पद होय ॥ चे० ॥ ७ ॥ अनुजव चिंतामणि रतनरे, जाके हृदए परकास ॥ सो पुनीत शिव पद लहेरे, दहे चतुर्गतिवास ॥ चे० ॥ ८ ॥ महिमा सम्यक् ग्यानकीरे, अरुचि राग वल जोय ॥ क्रिया करत फल जुजतेरे, कर्म वंध नहिं होय ॥चे०॥ ए ॥ जेद ग्यान तवलों जलोरे, जवलों मुक्ति न होय ॥ परम जोति परगट जिहांरे, तिहां विकल्प नहिं कोय ॥ चे० ॥ १० ॥ जेद ग्यान साबू जयोरे, समरस निर्मल नीर ॥ धोवी अंतर आतमारे, धोवे निज गुण चीर ॥ चे० ॥ ११ ॥ राग विरोध विमोह मलीरे, ए-

ही आश्रव मूल ॥ एही करम वढायकेंरे, करे धर्मकी मूल ॥ चे० ॥ १२ ॥ ग्यान सरूपी आतमारे, करे ग्यान नहिं ओर ॥ द्रव्यकर्म चेतन करे रे, एह व्यवहारकी दोर ॥ चे० ॥ १३ ॥ करतां परणामी द्रव्य रे, कर्मरूप परिणाम ॥ किरिया परजयकी फिरतरे, वस्तु एकत्रय नाम ॥ चे० ॥ १४ ॥ करता कर्म क्रिया करेरे, क्रिया करम करतार ॥ नाम नेद बहुविध नये रे, वस्तु एक निर्धार ॥ चे० ॥ १५ ॥ एक कर्म कर्तव्यतारे, करे न करता दोय ॥ तेसें जस सत्ता सधिरे, एक नावको होय ॥ चे० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ पद अडसठमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जबलग उपसमनांहिं रति, तब लगे जोग धरे क्युं होवे, नाम धरावे जति ॥ जब० ॥ १ ॥ कपट करे तुं बहु विध नातें, क्रोधे जले छति ॥ ताको फल तुं क्या पावेगो, ग्यान विना नांहिं बती ॥ जब० ॥ २ ॥ नूख तरस ओर धूप सहतु हे, कहे तु ब्रह्म व्रति ॥ कपट केलवे माया मंके, मनमें धरे व्यकती ॥ जब० ॥ ३ ॥ नस्म लगावत ठाढो रहेवत, कहत हे हुं वसति ॥ जंत्र मंत्र जमी

बूटी भेखज, लोभवश मूढ मति ॥ जव० ॥ ४ ॥वडे बडे बहु पूर्वधारी, जिनमें सक्ति हति ॥ सोभी उपसम छोरी वीचारे, पाये नरक गति ॥ जव० ॥ ५ ॥ कोउ गृहस्थ कोउ होवे वैरागी, जोगी भगत जति ॥ अध्यात्म भावें उदासी रहेगो, पावेगो तवही मुगति ॥ जव० ॥ ६ ॥ श्री नय विजय विबुध वर राजे, जाने जग कीरति॥श्री जसविजय उवद्माय पसायें, हेम प्रभु सुख संतति ॥ जव० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पद अगणोतेरमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ चंद्रप्रभु जिनराज राजे, वदन पूनम चंदरे॥भविक लोक चकोर निरखत, लहे परमानंदरे ॥ चं० ॥ १ ॥ महमहे महिमायें भमर, रस जस अरविंदरे ॥ रणझणे भविजन भ्रमर रसिया, लहि सुख मकरंद रे ॥ चं०॥ २ ॥ जस नामें दोलत अधिक दीपे, टले दोहग दंदरे ॥ जसगुण कथा भवव्यथा भांजें, ध्यान शिवतरु कंद रे ॥ चं० ॥ ॥ ३ ॥ विपुल हृदय विशाल भुजयुग, चलत चाल गयंदरे ॥ अतुल अतिसय महिमा मंदिर, प्रणत सुर नर वृंदरे ॥ चं० ॥ ४ ॥ हुं दास चाकर देव तारो,

सिस तुज फरजंदरे ॥ जसविजय वाचक एम वि-
नवे, टाल मुज नव फंद रे ॥ चंद्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सित्तेरमुं ॥

॥ राग काफी ॥ तो बिना ओर न जाचुं जिनं-
दराय ॥ तो० ॥ टेक ॥ में मेरो मन निश्चय किनो,
एहमां कबु नहिं काचुं ॥ जिनंदराय ॥ तो० ॥ १ ॥
तम चरन कमलपर पंकज मन मेरो, अनुनव रस
नर चाखुं ॥ अंतरंग अमृत रस चाखो, एह वचन
मन साचुं ॥ जी० ॥ तो० ॥ २ ॥ जस प्रनु ध्यायो
महारस पायो, अवर रसें नहिं राचुं ॥ अंतरंग फ
रस्यो दरसन तेरो, तुज गुण रस रंग माचुं ॥ जी०
॥ तो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद इकोतेरमुं ॥

॥ राग प्रनाती ॥ दृष्टि रागें नवि लागियें, वली
जागियें चित्तें ॥ मागियें शिख ज्ञानी तणी, हठ
नांगीएं नित्यें ॥ दृष्टि० ॥ १ ॥ जे बता दोष देखे
नहिं, जिहां जिहां अति रागी ॥ दोष अबता पण
दाखवे, जिहांथी रुचि नांगी ॥ दृ० ॥ २ ॥ दृष्टि
राग चढे चित्तथी, फरे नेत्र विकारें ॥ पूर्व उप-

कार न सांजले, पडे अधिक जंजाले ॥ द० ॥ ३ ॥
वीर जिन जब हुता विचरता, तब मंखली पूत्तो ॥
जिन करी जड जनें आदस्यो, इहां मोह अति धू-
त्तो ॥ द० ॥ ४ ॥ ऋध्धि जंडार रमणी तजी, जजी
आप मति रागो ॥ दृष्टि रागें जमाली लह्यो, नवि
जवजल तागो ॥ द० ॥ ५ ॥ वली आचार्य सावद्य
जे, हुआे अनंत संसारो ॥ दृष्टि राग स्वमति पणे
थयो, महानिशीथ विचारो ॥ द० ॥ ६ ॥ हुवे जि-
न धर्म आशातना, अजाण्युं कहे रंगें ॥ मंरु आ-
गलें जिनवरें, वंदियो जगवइ अंगें ॥ द० ॥ ७ ॥
ग्रामना नटने मूर्खनो, मिल्यो जेहवो जोगो ॥ द-
ष्टिराग मिलयो तेहवो, कथक सेवक लोगो ॥ द० ॥
॥ ८ ॥ आपण गोठडी मीठडी, हठीने मन लागे ॥
ज्ञानी गुरु वचन रलियामणां, कटुक तीरस्यां वागे ॥
द० ॥ ए ॥ दृष्टिरागें भ्रम उपजे, वधे ज्ञान गुण रा-
गें ॥ एहुमां एकतुमें आदरो, जलो होय जे आगें ॥
द० ॥ १० ॥ दृष्टि रागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु
अनुसरजो ॥ वाचक जसविजय कहे, हित शिख
मन धरजो ॥ द० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद बहोंतेरमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ जब लगें समता क्षणुं नहिं आवे, जबलगें क्रोध व्यापक हे अंतर, तबलगें जोग न सोहावे ॥ ज० ॥ १ ॥ बाह्य क्रिया करे कपट केलवे, फिरके महंत कहावे ॥ पक्षपात कबहु नहिं छोडे, उनकुं कुगति बोलावे ॥ जब० ॥ २ ॥ जिन जोगीने क्रोध किहांतें, उनकुं सुगुरु बतावे ॥ नाम धारक भिन्न भिन्न बतावे ॥ उपसम विनु दुःख पावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ क्रोध करी खंधक आचारज, हुओ अग्निकुमार ॥ दंडकी नृपनो देश प्रजाल्यो, भमियो भव मोझार ॥ ज० ॥ ४ ॥ संब प्रद्युम्न कुमार संताप्यो, कष्ट दीपायन पाय ॥ क्रोध करी तपनो फल हार्यो, कीधो द्वारकां दाय ॥ ज० ॥ ५ ॥ काउस्सग्गमां चढ्यो अति क्रोध, प्रसन्न चंद्र ऋषिराय ॥ सातमी नरक तणां दल मेली, कडवां ते न खमाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ पार्श्वनाथने उपसर्ग कीधो, कमठ भवंतर धीठ ॥ नरक तिर्यंचनां दुःख पामी, क्रोध तणां फल दीठ ॥ ज० ॥ ७ ॥ एम अनेक साधु पूर्वधर, तपिया तप करी जेह ॥ कारज पके पण ते नवि

टकिया, क्रोध तणुं वल एह ॥ ज० ॥ ८ ॥ समता भाव वली जे मुनि वरिया, तेहनो धन्य अवतार ॥ खंधक ऋषिनी खाल उतारी, उपसमें उतार्यो पार ॥ ज० ॥ ए ॥ चंडरुद्र आचारज चलतां, मस्तक दीया प्रहार ॥ समता करतां केवल पाम्यो, नवदीक्षित अणगार ॥ ज०॥ १० ॥ सागरचंदनुं शीश प्रजाल्युं, नीसभसेन नरेंद्र ॥ सुमता भाव धरी सुरलोकें, पोतो परम आनंद ॥ ज० ॥ ११ ॥ खेमा करतां खरच न लागे, भांगे कोड कलेस ॥ अरिहंत देव आराधक थाये, वाधे सुजस प्रवेश ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ पद तहोंतेरमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ प्रभु मेरे तुं सब वातें पूरा, परकी आश कहा करे प्रीतम, ए किण वातें अधूरा ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ परवश बसत लहत परतक्ष दुःख, सबहीं वासें सनूरा ॥ निजघर आप संभार संपदा, मत मन होय सनूरा ॥प्रभु०॥२॥ परसंग त्याग लाग निजरंगें, आनंद वेली अंकूरा ॥ निज अनुभवरस लागे मीठा, ज्युं घेवर में बूरा ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ अपने ख्याल पलकमें खेले, करे शत्रुका चूरा ॥ सहजानंद

अचल सुख पावे, घूरे जगजस नूरा ॥ प्रभु० ॥४॥ इति॥

॥ पद चम्मोतेरमुं ॥

॥ अथ श्री पूजाविधिनुं पार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ शालिभद्र भोगी रह्यो ॥ ए देशी ॥

पूजाविध मांहे भावियेंजी, अंतरंग जे भाव ॥ ते सवि तुज आगल कहुंजी, साहेब सरल स्वभाव॥ सुहंकर अवधारो प्रभुपास ॥ ए आंकणी ॥ दातण करतां भाविएंजी, प्रभुगुण जल मुख सुऊ ॥ जल उतारी प्रमत्ततांजी, हो मुज निर्मल बुऊ ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ जतनायें स्नानें करीजी, काढो मेल मिथ्यात ॥ अंगुहो अंग शोषवीजी, जाणो हुं अवदात ॥ सु० ॥ ३ ॥ क्षीरोदकनां धोतियांजी, चित्तवो चित्त संतोष ॥ अष्टकर्म संवर भलोजी, आठपडो मुहकोश ॥ सु० ॥ ४ ॥ ओरशीयो एकाग्रताजी, केसर भक्ति कल्लोल ॥ श्रद्धा चंदन चिंतवोजी, ध्यान घोल रंग रोल ॥ सु० ॥ ५ ॥ भाल वहुं आणा भलीजी, तिलकतणो तेह भाव ॥ जे आभरण उतारीयेंजी, ते उतारो निज भाव ॥ सु० ॥ ६ ॥ जे निर्माल उतारियेंजी, ते तो चित्त उपाध, पखाल करंतां चिंतवोजी,

निर्मल चित्त-समाध ॥ सु० ॥ ७ ॥ अंग लूहणां वे धर्मनांजी, आत्म स्वभाव जे अंग ॥ जे आभरण पहेरावीएंजी, ते स्वभाव निजचंग ॥ सु० ॥ ८ ॥ जे नववाडी विशुद्धताजी, ते पूजा नव अंग ॥ पंचाचार विशुद्धता जी, तेह फूल पंचरंग ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ दीवो करतां चिंतवोजी, ज्ञान दीपक सुप्रकास ॥ नयचिंता घृत पूरियुंजी, तत्त्व पात्र सुविलास ॥ सु०॥ १० ॥ धूप रूप अति कार्यताजी, कृष्णागरुनो जोग ॥ शुद्ध वासना मह महेजी, ते तो अनुभव योग ॥ सु० ॥ ११ ॥ मद स्थानक अड ठांडवाजी, तेह अष्ट मंगलिक ॥ जे नैवेद्य निवेदियेंजी, ते मन निश्चल टीक ॥ सु० ॥ १२ ॥ लवण उतारी भावीएंजी, कृत्रिम धर्मनो त्याग ॥ मंगल दीवो अति भलोजी, सुद्ध धरम परभाग ॥ सु० ॥ १३ ॥ गीत नृत्य वाजित्रनोजी, नाद अनाद असार ॥ समरति रमणी जे करीजी, ते साचो थेइकार ॥ सु० ॥ ॥ १४ ॥ भावपूजा एम साचवीजी, सत्य वजाउरे घंट ॥ त्रिभुवन मांहे ते विस्तरेजी, टाले कर्मनो कंट ॥ सु० ॥ १५ ॥ एणी परें भावना भावतांजी, साहेब जस सुप्रसन्न ॥ जनम सफल जग तेहनोजी,

तेह पुरुष धन धन ॥ सु० ॥ १६ ॥ परम पुरुष प्रजु सामलाजी, मानो ए मुज सेव ॥ दूर करो नव आमलोजी, वाचक जस कहे देव ॥ सु० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ पद पंचोतेरमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ संनव जिन नयन मिल्योहे, प्रगटे पुण्यके अंकूर ॥ ए आंकणी ॥ तवथें दिन मोही सफस वल्यो हे ॥ अंगणे अमीयें मेह वुठा, जनम तापको व्याप गल्यो हे ॥ संन० ॥ १ ॥ जैसी नक्ति तैसी प्रजु करुना, स्वेत संखमें दूध मिल्यो हे ॥ दर्शनथें नवनिधि रिधि पाइ, दुःख दोहग सब दूर टल्यो हे ॥ संन० ॥ २ ॥ फरत फिरत हे दूरहिं दिलथें, मोहमल्ल जिणे जगत्र नल्यो हे ॥ समकित रत्न लहुं दरिसनसें, अब नवि जाउं कुगति रल्यो हे ॥ संन० ॥ ३ ॥ नेह नजर नर निरखनहीं मुज, प्रजुसुं हैयडो हेज हल्यो हे ॥ श्री नयविजय विबुध सेवककुं, साहेब सुरतरु होय फल्यो हे ॥ ॥ संन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीविनय विलास प्रारंभः ॥

॥ पद पेहेलुं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ सजन सलूने लाल, चरन न छोरुं ताल, मेरे तो अजब माल, तेरोइ जजनहे ॥ १ ॥ दोलत न चाहुं दाम, काम सुंन मेरे काम, नाम तेरो आठो जांम, जिउको रंजन हे ॥ २ ॥ तेरो हुं आधीन लीन, जल ज्युं मगन मीन, तीन जग केरो प्रज्ञु, डुःखको नंजन हे ॥ ३ ॥ नाजि मरु देवानंद, नयन आनंद चंद, चरन विनय तेरो, अमियको अंजन हे ॥ ४ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग कनडो दरबारी ॥ या गति ठोरदे गुन गोरी ॥ तु गुन गोरी० ॥ टेक ॥ अचरिज एहुं मिले शशि पंकज, विच जमुना वहे जोरी ॥ या गति०॥ ॥ १ ॥ चल गिरनार पिया दिखलावुं, बहुरि जोरि रति होरी ॥ मुगति महलमें मिले राजुल नेम. विनय नमे कर जोरी ॥ या गति० ॥ २ ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग कल्याण जूपाल ॥ मेरी गति मेरी मति, मेरी रति मेरि छति, मेरो पिया मेरो जिया, यडुपति यतियां ॥ मेरी० ॥ १ ॥ मेरो ज्ञान मेरो ध्यान, मेरो प्रान मेरो त्रान, मेरो जश सुनि अन्निधान, मोहि उल्लसति छतियां ॥ मेरी० ॥ २ ॥ गए गिरनार मोकुं, छारि रस डारि तोउ, रहि चित्त दिन रति, जेसें दीया बतियां ॥ मेरी० ॥ ३ ॥ मेरे तुंहिं मेरे तुंहि, शिवा देवी नंद तुंहि, मानो पिया राजुलकी, बिनय बिनतियां ॥ मेरी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग दरबारी कनडो ॥ डुरमति मारदे मेरे प्रानी ॥टेक॥ जूठी सब संसारकी माया, जूठी गरव गुमानी ॥ डुरमति० ॥ १ ॥ आप न बूजे मोह निंदसुं, मोले डुनियां दिवानी ॥ वीतराग डुःख मारण दिलसुं, विनय जपो शुरू ज्ञानी ॥डुरमति०॥२॥इति॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग जूपाल तथा गोडी ॥ प्यारे काहेकुं ल-

लचाय ॥ टेक ॥ या दुनियांका देख तमासा, देखतहि सकुचाय ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ मेरी मेरी करत हे बाउरे, फीरे जिउ अकुलाय ॥ पलक एकमें बहुरि न देखे, जलबुंदकी न्याय ॥ प्यारे० ॥ २ ॥ कोटि विकल्प व्याधिकी वेदन, लही शुद्ध लपटाय ॥ ज्ञान कुसुमकी सेज न पाइ, रहे अघाय अघाय ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥ किया दोर चिहुं ओर जोरसें, मृग तृष्णा चित्तलाय ॥ प्यास बुजावन बुंद न पायो, यौंहि जनम गुमाय ॥ प्यारे० ॥ ४ ॥ सुधा सरोवर हे या घटमें, जिसतें सब दुःख जाय ॥ विनय कहे रुदेव दिखावे, जो लाउ दिल गाय ॥प्यारे०॥५॥इति॥

॥ पद ७हुं ॥

॥ राग सामेरी ॥ पिउजी मोहि दरिसन दीजीएंरे ॥ टेक ॥ तेरे दरशनकी में प्यासी, तुं कहा न्यो उदासी ॥ पिउजी० ॥ १ ॥ पिउ पिउ जपतें नइ दुक, नयनो निंदकी वाजीरे ॥ तव देखा पिउ प्रेमसें फूनी, संकुचि रहि में लाजीरे ॥ पिउजी० ॥ ॥ २ ॥ रसिक न राख्यो हृदेसुं चीरी, सखिमें वहुत वरांसीरे ॥ अव पाउं तो पाउ न छोरुं, राखुं रंग

विलासी रे ॥ पिउजी०॥ ३ ॥ पिउके गुनकी मोतन माला, कंठ करौं जप मालीरे ॥ चकित भये मेरे लोचन चिहुं ओर, सुरिजन पंथ निहालीरे ॥ पिउजी० ॥ ४ ॥ कहे मति भारी जीवन प्यारे, में हुं तेरी वंदीरे ॥ गोद बिठाउं बिनय विनोदें, घर आवो आनंदी रे ॥ पिउजी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग मिश्रित बिहागडो ॥ प्यारे प्रीतमजी हठ छोरो ॥ टेक ॥ तोरन आए फिरे कुन कारन, कीहें रच्यों या गोरो ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ मोसुं कीनी ऐसी ठगाइ, जैसें करत ठगोरो ॥ कूठ जगतमें कांहि दिखायो, एसो ब्याह बरघोरो ॥ प्यारे० ॥ ॥ २ ॥ में तो नाह न छोरुं नव भवको. जूरयो प्रेमको जोरो ॥ अबतो चरन बिनय मोहि दीजें, राजुल करत निहोरो ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ सुरत मंडन पास, देखत अति उल्लास, सुजस सुवास जास, जगतमें जोतहे ॥ सुरत मोहनरूप, सुर नर नमे भूप, अकल

सरूप सामि, अधिक उद्योत हे ॥ १ ॥ जमत जमत भव, पायो प्रभु अजिनव, सुरतरु सुख सव, देयन प्रवीन हे ॥ तेरा करुं गुन ग्यान, सोउ दिन सुविहान, तिहारे चरन मेरो, दिल लयलीन हे ॥ २ ॥ मुगट कुंडल माल, रतन तिलकजाल, सुगुन रसाल लाल, पूजा वनि हेमकी ॥ केसर कपूर फूल, धूप धरुं बहु मूल, विनयकुं दिजे टुक, निजरज्युं प्रेमकी॥३॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग मेघ मल्हार ॥ जिउ प्रान मेरे मोहन, करुं बिनती दोउ करही जोर ॥ बिन गुन्हा क्यौं छोरि सिधाए, महर करहु यादो सिरके मोर ॥ जिउ० ॥ १ ॥ विरह विज्ञान जग्यो मेरे जिउमें, पिउ पिउ देखुं सबही ठोर ॥ सूझ न परत अजब गतिया कछु, कीधो बिजोग संजोगकी दोर ॥ जीउ० ॥ २ ॥ पलक एक कल न परत मोकुं, पिउ पिउ रटत हो तही जोर ॥ चमक लोह ज्यौं खेंच दिउं मन, चले प्रेमकी बांह मरोर ॥ जिउ० ॥ ३ ॥ लियो छीन मन मानिक मेरो, जिनको मूल हये लख करोर ॥ तो अब मोहि दिजे मन अपनो, करहो नीआउ पिउ

मकरो जोर ॥ जि॰ ॥ ४ ॥ रतन तीन दीजें राजु लकुं, नयो रंगरस ऊकही जोर ॥ विनय सदा सेव हु सुखदाइ, समुदराउ शिवा देवी किसोर ॥ जि- उ॰ ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग जेजेवंती ॥ अजहुं कहालौं प्यारे, रहोगे हमसुं न्यारे, वाहितो धुतारि प्यारि, तुम चित्त ना- इ हे ॥ १ ॥ बहुत विगोइ खोइ, इनही सकल गुन ॥ लोगनमें शोना तुम, नलि युं बढाइ हे ॥ २ ॥ ह- मकुं काहेकुं मानो, वाहिसो तिहारो तानो ॥ जानोगें आपहि वातो, जैसी छुःखदाइ हे ॥ ३ ॥ सबनकुं प्यारी नारी, माया हे जगतदारी ॥ इंनसेंतें यारी नारी, आखर बुराइ हे ॥ ४ ॥ जूठेहि दिखावे नेह, पाथरकी जैसी त्रेह ॥ ठटकी दाखेंगी ठेह, अंत तो पराइ हे ॥ ५ ॥ कहे ज्ञान कला जिउ, जानो सो करहो पिउ, जैसी हे तैसी तो तुम, विनये सुना- इ हे ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥

राग बिहागडो ॥ सांइ सलूनाकेसें पाऊरी, मन

थिर मेरा न होय ॥ दिन सारा बातोमें खोया, रजनी गुमाइ सोय ॥ सांइ० ॥१॥ टेक ॥ वेर वेर वरज्यामें दिलकुं, बरज्या न रहे सोय ॥ मन उंर मदमत्त वाला कुंजर, अटके न रहे दोय ॥ सांइ० ॥ ॥ २ ॥ छिन ताता छिन शीतल होवें, छिनुक हसे छिनु रोय ॥ छिनु हरखे सुख संपति पेखी, छिनु झूरे सब खोय ॥ सांइ० ॥ ३ ॥ वृथा करत हे कोरी कुराफत, जावी न मिटे कोय ॥ या कीनी में याहि करुंगी, योंही नीर विलोय ॥ सांइ० ॥ ४ ॥ मन धागा पिउ गुनको मोती, हार वनावुं पोय ॥ विनय कहे मेरे जिउके जीवन, नेकनिजर मोहे जोय ॥ सांइ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग नट ॥ थिर नांहिरे थिर नांहि, यावत धन यौवन थिर नांहि ॥ पलक एकमें छेह दिखावत, जेसी बादलकी छांहि ॥ थिर० ॥ १ ॥ टेक ॥ मेरे मेरे कर मरत विचारे, दुनियां अपनी करी चाही ॥ कुलटा स्त्री ज्यों उलटा होवे, या साथ किसिके ना याहि ॥ थिर० ॥ २ ॥ कहे दुनियां कहा हसे

बाउरे, मेरी गति समजौं नांहिं ॥ केतेहीं गेरे में प्यासे, केते उंर गहे बांहि ॥ थिर० ॥ ३ ॥ सयन, सनेह सकल हे चंचल, किसके सुत किसकी माइ॥ रितु बसंत शिर रूख पात ज्यौं, जाय परोगे को कांही ॥ थिर० ॥ ४ ॥ अजरामर अकलंक अरूपी, सब लोगनकुं सुखदाइ ॥ विनय कहे जव दुःख बंधनतें, छोडनहार वे सांइ ॥ थिर० ॥ ५ ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग बिहागडो ॥ मन न काहुके वश, मन कीए सब वश, मनकी सो गति जाने, याको मन वश हे॥ १ ॥ पढोहो बहुत पाठ, तप करो जै पाहार, मन वश कीए बिनु, तप जप बशहे ॥२॥ काहेकुं फीरे हे मन, काहु न पावेगो चेन, विषयके उमंग रंग, कबु न फुरसहे ॥ ३ ॥ सोउ ज्ञानी सोउ ध्यानी, सोउ मेरे जीया यानी ॥ जिने मन वशकियो, वाहिको सुजश हे ॥४॥ विनय कहे सौ धनु, याको मनु छिनु छिनु, सांइ सांइ सांइ सांइ, सांइसें तिरस हे ॥५॥इति

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग श्रीराग ॥ अजब तमासा इक नाख्या ॥

टेक ॥ कोउ जात है दोनु जोरे, पिछला अगिला सुं हार्‍या ॥ अजब० ॥१॥ आय नजीक मले जब पीछ-ला, तब अगिला दुरिहु दोरे ॥ पिछला जोर स जोर्‍या चाहे, अगिला दोरतहि दोरे ॥ अजब० ॥ ॥ २ ॥ खोह खाडका चेन विचारे, आगिला आंखो मुदि मगें ॥ पिछला बापरा छिनु छिनु अटके, कय-रे कंखर जाय लगे ॥ अजब० ॥ ३ ॥ तब प्रभुने एक उंर पठाया, उने जाय आगिला बांध्या ॥ पि-छला तबथें रहा उदासी, साहिबने बहु सुख सा-ध्या ॥ अजब० ॥ ४ ॥ एक नीच अति एकहि मध्यम, एक उत्तम प्रभुकुं प्यारा ॥ या तिनोकुं विनय पि-छान्यो, रहो अधमसेंती न्यारा ॥अजब० ॥५॥इति॥

॥ पद पन्नरमुं ॥

॥ राग भैरव ॥ जागो प्यारें भयो सुविहान, श्री तीर्थंकर उदयो भान ॥ जागो० ॥ ए टेक ॥ पाए भविक मन कमल विकास, उड गए औगुन भरस उदास ॥जागो०॥१॥ नयन उघारी विलोको कंत, मोह-तिमिर अब आयो अंत ॥ प्रगटी ज्ञान कलाकी ज्योत, मुगति पंथ अब भयो उद्योत ॥ जागो० ॥ २ ॥ सुप-

नमें मूंझी रह्यो मेरे लाल, इन विधि गया अनंता काल ॥ अब सुहनेका छोडो ख्याल, या सब झूठा मिथ्या जाल ॥ जागो० ॥ ३ ॥ या अपावन माया सेज, उसपर पिऊका इतना हेज ॥ सुकलध्यान पखारो अंग, युं प्रगटे तुम निर्मल रंग ॥ जागो० ॥ ४ ॥ पिउ निरखो जिनराउ दिनंद, कहे मति नारी मिटे युं निंद ॥ आप संभालो खोली नेत, विनयकरी विनवो पिउ चेत ॥ जागो० ॥ ५ ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ राग ॥ हुसेनी ॥ खुदाके बंदे बे सीर मत ध्यो बज गारी ॥ एदेशी ॥ सुन सुहागिन बे दिलकी बात हमारी ॥ टेक ॥ में सोदागर दूर बिदेशी, सोदाकरने आया ॥ देखत तोकुं भूलिगया सब, तोहिसुं चित्त लाया ॥ सुन० ॥ १ ॥ निसी वासर तेरे रस राता, अपने काम न बूझे ॥ तेरे विरह दरदतें डरपूं, क्युं डुस्मनसें झूझे ॥ सुन० ॥ २ ॥ सुंदरी तें कबु कामन कीया, तुज बिनु पलक न जावे ॥ लोचन लागी रहे तेरी लालच, ओर कबु न सोहावे ॥ सुन० ॥ ॥ ३ ॥ अरथ गरथ सब तुजे खिलाया, दमरा ए-

क न कमाया ॥ क्युंकर जाइ मिलुं सांइकुं, ल्याया कछु न लाया ॥सुन०॥४॥ विनयवती तुं खरी पियारी, जो अब करी हुशीयारी ॥ मुंदसी करे तो मिलुं सांइसुं, अविहड करुं अयारी ॥ सुन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरसुं ॥

राग उपर प्रमाणे ॥ काया कामनी वेलाल, सुनी कहे जिऊरा ॥ मेंहु वंदी वेलाल, तुं मेरा पिऊरा ॥ पिऊरा सुनि वे करुं विनती, म करी ओरसें नेहरे ॥ दो दिवसकी या दाम दोलत, देत ठिनुमें ठेहरे ॥ १ ॥ तुं गुमास्ता वेलाल, अपने शेठका ॥ ले जा यगा वेलाल, हुकमी ठेठका ॥ ठेठका आवे हुकम जब तुहीं, पलक इक न शके रही ॥ तो कहा मूरख करे धंधा, अंते तेरा कछु नहीं ॥ २ ॥ हो ने खुआ वेलाल, अपने सांइका, नाहु चोरीए वेलाल, नाहक पाइका ॥ पाइका नाहक चोरी उसका, जब नवि देत जबापरे ॥ तब ताहिकुं दे दूर दोजख, दोप देखे आपरे ॥ ३ ॥ सोदा हककाा वेलाल, एसा कीजीएं, होवे फायदा वेलाल, साहिब रीजीएं ॥ रीजीएं साहिब शुं निवाजे, आप डुःखनें उद्धरे ॥

बिनती इतनी मानी वालिम, बेपरवाही मत करे ॥ ४ ॥ तुं परदेशका वेलाल, पंथी प्राहुणा, प्रीत में बांधी वेलाल, क्युं रहुं तो विना ॥ तुं विना क्युं करी, रहुं डुःख नरी, सती युं संगें चलुं ॥ सांइका करी विनय सज्जान, युं अन्नेदें तुज मिलुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ कहा करुं मंदिर कहा करुं दमरा, न जानुं कहां तुं उड बेठेगा नमरा ॥ जोरी जोरी गए ढोरी डुमाला, उड गए पंखी पड रह्या माला ॥ कहा० ॥ १ ॥ टेक ॥ पवनकी गठरी केसें ठराउ, घर न बसत आय बेठे वटाउ ॥ अगनी बुजानी काहेकी जारा, दीप ठीपे तब केसें उजारा ॥ कहा० ॥ २ ॥ चित्रके तरुवर कबहुं न मोरे, माटिका घोरा केतेक दोरे ॥ धुंएकी हेरी तूरका थंन्ना, उहां खेले हंसा देखो अचंन्ना ॥ कहा० ॥ ३ ॥ फिरि फिरि आवत जात उसासा, तांपरे तारेका कैसा विश्वासा ॥ या डुनियांकी जूठी हे यारी, जैसी बनाइ बाजीगर बारी ॥ कहा० ॥ ४ ॥ परमातम अविचल अबिनासी, सोहे शुद्ध परम पद वासी ॥ वि-

नय कहे वे साहिब मेरा, फिर न करुं आ दुनियामे फेरा ॥ कहा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणीशमुं ॥

॥ राग काफी ॥ किसके चेले किसके पूत, आतमराम अकिला अवधूत ॥ जिउ जानले ॥ अहो मेरे ज्ञानीका घर सुत ॥ जिउ जानले, दिल मानले ॥ १ ॥ आप सवारथ मिलिया अनेक, आए इकेला जावेगा एक ॥ जिउ० ॥ दि० ॥ २ ॥ मढी गिरंदकी झूठे गुमान, आजके काल गिरेंगी निदान ॥ जि० ॥ दि० ॥ ३ ॥ तीसना पावडली वर जोर, वाबु काहेकुं साचो गोर ॥ जि० ॥ दि० ॥ ४ ॥ आगि अंगिठी नावेगी साथ, नाथ रमोगे खाली हाथ ॥ जि० ॥ दि० ॥ ५ ॥ आशा झोली पत्तर लोज, विषय जिक्षा जरी नायो थोज ॥ जि० ॥ दि० ॥ ६ ॥ करमकी कंथा डारो दूर, विनय विराजो सुख जरपूर ॥ जि० ॥ दि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ घोरा जूठा हे रे तुं मत जूले असवारा ॥ टेक ॥ तोहि मुघा ए लगतुहे प्यारा,

ए अंत होयगा न्यारा ॥ घोरा० ॥ १ ॥ चरे चीज अरुरूरे केदसुं, उवट चले अटारा ॥ जीन करे तव सोया चाहे, खानेकुं हुशिआरा ॥ घोरा० ॥ २ ॥ खूब खजीना खरच खिलावों, घो सव न्यामत चारा ॥ असवारीका अवसर होवे, तव गलिया होवे गमारा ॥ घोरा० ॥ ३ ॥ छिनु ताता छिनु प्यासा होवे, खिजमत (वहुत) करावनहारा ॥ दूर दोर जंगल में मारे, झूरे धनी बिचारा ॥ घोरा० ॥ ४ ॥ कर हो चोकसा चातुर चोकस, घो चावक दोयचारा ॥ इन घोरेकुं विनय सिखाउं, युं पावो जव पारा ॥ घोरा० ॥ ५ ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ पांचो घोरे एक रथ जूता, साहिब उसका जितर सूता ॥ खेडु उसका मद मतवारा, घोरेकुं दोरावनहारा ॥ पांचो० ॥ १ ॥ टेक ॥ घोरे जूठे ओर ओर चाहे, रथकुं फिरि फिरि उवट वाहे ॥ विषम पंथ चिहुं उर अंधियारा, तोजि न जागे साहिब प्यारा ॥ पांचो० ॥ २ ॥ खेरु रथकुं दूर दोरावे, बेखबर साहिब दुःख पावे ॥ रथ जंगलमां जाय असुके, साहिब सोया कबुअ न

बूझे ॥ पांचो० ॥ ३ ॥ चोर ठगोरे जहां मिलि आये, दोनुकुं मदप्याला पाए ॥ रथ जंगलमें जीरण कीना, मालधनीका उदारी लीना ॥ पांचो० ॥४॥ धनी जग्या तब खेडु बांध्या, रासी परांना ले सिर सांध्या ॥ चोर भगे रथ मारग लाया, अपना राज विनय जिऊ पाया ॥ पांचो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ चतुर विचारो चतुर विचारो, ते कुण कहियें नारीजी ॥ पीउथी क्षण एक न रहे अलगी, कुलवंती अति सारीजी ॥ च० ॥ १ ॥ नाचे माचे प्रियसुं राचे, रमे भमे प्रीय साथेंजी ॥ एक दिने सा बाली तरुणी, नवि ग्रहवाये हाथेंजी ॥ च० ॥ ॥ २ ॥ चीर चीवर पहेरी सा सुंदरी, ठंडे पाणी पेसेजी ॥ पण भींजाये नहीं तस कांइ, अचरज ए जग दीसेजी ॥ च० ॥ ३ ॥ बादल काले मरे ततकालें, आतप योगें जीवेजी ॥ अंधारामां जो निसि जाय, तो देखाडुं दीवेजी ॥ च० ॥ ४ ॥ अवधि कहुं हुं मास एकनी, आपो अरथ विचारीजी ॥ कीर्त्ति

विजय वाचक शिष्य जंपे, बुध जननी बलिहारी-
जी ॥ च० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ जोगी एसा होय फरुं, परम पुरुषशुं प्रीत करुं ॥ ओरसें प्रीत हरुं ॥ १ ॥ निर विषयकी मुद्रा पहेरुं, माला फीराऊं मेरा मनकी ॥ ग्यान ध्यानकी लाठी पकरुं, भभूत चढाऊं प्रभुगुनकी ॥ २ ॥ शील संतोषकी कंथा पहेरुं, विषय जलावुं धूणी ॥ पांचुं चोर पेरें करी पकरूं, तो दिलमें न होय चोरी हुंणी ॥३॥ खबर लेऊ में खिजमत तेरी, शब्द सींगी बजाऊं ॥ घट अंतर निरंजन वेठें, वासुं लयलगाऊं ॥ ४ ॥ मेरे सुगुरुने उपदेश दिया है, निरमल जोग बतायो ॥ विनय कहे में उनकुं ध्याऊं, जिने सुरू मारग दिखायो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ मगध देशको राज राजेसर ॥ एदेशी ॥ जंगलथी एक जायो चोपद, नयर वसंतो दीठो ॥ नवि बीये नवी नासे त्रासे, बेसे थिर अति धीठो ॥ १ ॥ चतुर नर अर्थ विचारी कहियें ॥ चतुराइ निवहीयें ॥

चतुरनर० ॥ नहिंतो गरव न वहियें ॥ चतु० ॥ एटेक ॥ जीव दया पालक रंगीलो, आवियो तुम काम ॥ अंगुल अघुयुग गुरु सरवाले, निधि अक्षर तस नाम ॥ चतु० ॥ ॥ २ ॥ घनरिपु तसरिपु तसरिपु सेवक, मंदिर नंदन जेह ॥ तरुणो पण निज दारि खोले, खेले छे नित नेह ॥ चतु० ॥ ३ ॥ रोग रहित काया अति निर्मल, पण तस एक विकार ॥ पीइ पीइने नाकें नाखें, न रहे पेटें आहार ॥ चतु० ॥४॥ तात सहोदर तास नपुंसक, पासे बेठुं सोहे ॥ विनय नणे जे अर्थ कहे ते, पंमितनां मन मोहे ॥ चतु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पचीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ साधु नाइ सोहे जैनका रागी, जाकी सुरत मूल धुन लागी ॥ सा० ॥ टेक ॥ सो साधु अष्ट करमसुं जगडे, सुन बांधे धर्मशाला ॥ ॥ सोहं शब्दका धागासांधे, जपे अजंपा माला ॥ साधु० ॥ १ ॥ गंगा यमुना मध्य सरसति, अधर वहे जलधारा ॥ करीअ स्नान मगन हुइ बेठे, तोड्या कर्म दल नारा ॥ साधु० ॥ २ ॥ आप अन्यंतर ज्योति बिराजे, अंकनाल ग्रहे मूला ॥ पछिम

दिशाकी खरुकी खोलो, (तो) वाजे अनहद तूरा ॥ साधु० ॥ ३ ॥ पंचभूतका भरम मिटाया, छठे मांहिं समाया ॥ विनय प्रभुसुं ज्योत मिलि जब, फिर संसार न आया ॥ साधु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ राग गोरूी ॥ शांति तेरे लोचन हे अनियारे ॥ शां० ॥ टेक ॥ कमल ज्यौं सुंदर मीन ज्यों चंचल, मधुकरथी अति कारे ॥ शां० ॥ १ ॥ जाकी मनोहरता जीत बनमें, फिरते हरिन बिचारे ॥ चतुर चकोर पराभव निरखत, बपरे चुनत अंगारे ॥ शां० ॥ ॥ २ ॥ उपशम रसके अजब चकोरे, मानो बिरंची संभारे ॥ कीर्त्तिं विजय वाचक को विनयी, मोकों हे अति प्यारे ॥ शां० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ तोलों बेर बेर फिर आवेंगें, जीऊ जीवन मेरे प्यारे पीयुकी, जो जो सोज न पावेंगे ॥ तोलों० ॥१॥ बिहर दिवानी फिरुं हुं ढुंढती, सेज न साज सुहावेंगे ॥ रूपरंग जोबन मेरी सहियो, पीयु बिन केसें देह देखावेंगे ॥ तोलों० ॥२॥ नाथ

निरंजनके रंजनकुं, बोत सिणगार बनावेंगे ॥ करले बीना नाद नगीना, मोहनके गुन गावेंगे ॥ तोलों० ॥ ३ ॥ देखत पीयुकुं मनि मुगताफल, नरी नरी थाल वधावेंगे ॥ प्रेमके प्याले, ग्याननी चाले, विरहकी प्यास बुजावेंगे ॥ तोलों० ॥ ४ ॥ सदा रही मेरें जीजमें पीउजी, पीउमें जीउ मिलावेंगे ॥ विनय ज्योतिसें ज्योत मिलेगी, तब इहां वेह न आवेंगे ॥ तोलों० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अष्टावीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ मेरी सजनी रूपज चंद्रानन नमुं, वारिषेण नगवंत ॥ वर्द्धमान जिन प्रणमियें, लहीयें सुख अनंत ॥ मेरे आतम सासय जिन मुख जोय, जिम सासय सुख होय ॥ मेरे आतम० ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नवन पतिनां नवन बहोत्तेर, लाखने सातज कोमी ॥ एटले प्रासादे कह्या, जिन चार नमुं करजोमी ॥ मे० ॥ २ ॥ ज्योतिषी व्यंतर तणाजे, नगर विमान असंख, तिहां असंख्य प्रासादें कह्या जिन, चार नमुं सह संख ॥ मे० ॥ ३ ॥ तिर्छे लोकें गुण सठेंजी, अधिक शत बत्रीश ॥ जिन नवन तिहां चार जिन ए. नमतां पूगे जगीस ॥ मे० ॥ ४ ॥ लाख

चोरासी सहस सत्ता, एवह अधिक वीश ॥ ऊर्द्ध्व लोक प्रासाद जिन ए, नमियें नामी शीश ॥मे०॥ ५ पंचवर्ण उदार मणिमय, सप्त हस्त प्रमाण ॥ केइ धनु सय पंच परिमित, ए जिन मूरति जाण ॥ मे० ॥ ॥ ६ ॥ इंद्रादिक सुर सयल पूजे, करे समकित सु-द्ध ॥ केसर चंदन अगर पूजा, रचे भाव विशुद्ध ॥ मे० ॥ ७ ॥ घणा सुरवर लहियें जिनपद, पूजतां ए जिन चार ॥ ध्यान धरतां एह प्रभुनुं, लहियें भवनो पार ॥ मे० ॥ ८ ॥ श्री कीर्त्ति विजय उवझा-य केरो, लहे ए पुण्य पसाय ॥ सासता जिन थु-णियें एणीपर, विनय विजय उवझाय ॥ मे० ॥९॥ इति॥

॥ पद ओगणत्रीशमुं ॥

॥ राग भूपाल ॥ श्री विमलाचल मंडन आदि-जिना, प्रह उठी वंदो एक मनां ॥ माता मरुदेवा नं-दना, भावें दीठो नयन आनंदना ॥ वि० ॥ १ ॥ रवि उदयो जग पंकजवना, विकसत छूटा अलि बंध-नां ॥ होवे निंदित जो निज लोचनां, आतमहित मन आलोचना ॥वि०॥२॥ चंचल ए तन धन जोबनां, बी-जो सरण नको जिन जीवनां ॥ भाइ सफल करोरे जी-

वनां, करि विनय भजो जगजीवनां ॥ वि० ॥५॥ इति॥

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ सुख पूरण सोभा घणी, प्रभुपास जिणंदा ॥ राज रोग रण भयहरे, जिम घन अरविंदा ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ अश्वसेन वामा तणो, सुत नमे सुरिंदा ॥ नाम जपतां तेहनुं, छूटे भव फंदा ॥ सु० ॥ २ ॥ पउमावइ सानिध करे, धनद धरणिंदा ॥ भजो स्वामी एक चित्तशुं, मधुकर अरविंदा ॥ सु० ॥ ३ ॥ प्रभु देखी मन उल्लसे, जेम कुमुदिनी चंदा ॥ सार वखत वंछित दीयो, एम विनय भणिंदा ॥ सु० ॥ ४ ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग ॥ रामकाली ॥ अजब जोत हे तेरी, हो आतम, अजब जोत हे तेरी ॥ तुं परमातम तुं परमागम, लबद्धि रिद्धि सब तेरी ॥ हो० ॥ १ ॥ सिद्ध बुद्ध हे तुं सिद्धि साधक, तुं गुनकुं सम चंगेरी ॥ तेरो गुन गोरस गुनवेकुं, मुदित भइ मति मेरी ॥ हो० ॥ २ ॥ चिदानंद चेतन तुं चातुर, सुरति सुद्ध तुं हे चेरी ॥ भूलो कहा भमे या भवमें, भइ अनंती फेरी ॥ हो० ॥ ३ ॥ दूर नहिं आ घटमें

तोड़े सब, ब्रह्म ग्यानकी सेरी ॥ माया मोह तिमिर दल, ग्यान कला गति घेरी ॥ हो० ॥ ४ ॥ [स्वरूप संभारो अपनो, डुर्मति दूर उखेरी ॥ आपहीं आपसों आप विचारो, मुगति भइ अब मेरी ॥ ॥ हो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ अब क्युं न होत उदासी, हो आतम ॥ अब क्युं न० ॥ ए आंकणी ॥ उलट पलट घट घेरी रही हे, क्युं तुम आशा दासी ॥ हो० ॥ ॥ १ ॥ निसि बासर उनसुं तुम खेलो, होत खलकमां हांसी ॥ छोरो विषम विषयकी आशा, ज्युं निकसें भव फांसी ॥ हो० ॥ २ ॥ पूरण भइ न कबहीं किसकी, डुरमति देत विसासी ॥ जो छोरी नहीं सोबत इनकी, तो कहा भये सन्यासी ॥ हो० ॥ ३ ॥ रूठरही सुमति पटराणी, देखो हृदय विमासी ॥ मुरु रहेहो क्या मायामें, अंते छोरी तुम जासी ॥ हो० ॥ ४ ॥ आश करो एक विनय विचारी, अविचल पद अविनासी ॥ आशा पूरण एक परमेसर, सेवो शिवरपुरवासी ॥ हो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद तेत्रीशमुं॥

॥ सरसति पाये लागुं, मागुं वचनविलास ॥ विजयाणंद सूरिंदनी, जावें जणशुं जास ॥ सद्गुरुना गुण गातां, माता होइ सुखपास ॥ नरहरि नारी सारी, होय घर अंगण दास ॥ १ ॥ सकल कला अन्यासी, वासी रहे सुगाम ॥ श्रीमंत साहनो नंदन, वंदन अति अजिराम ॥ महिमादे महिमा निधि, जासतणुं वरनाम ॥ जापथी पाप टले सब, लहियें दोलत दाम ॥ २ ॥ जास तणा गुन गाजे, ठाजे देश विदेश ॥ चरण कमल आणंदे, वंदे सयल नरेस ॥ तास तणा गुण बोलुं,खोलुं मुगति निवेश ॥ मानव जव मुख जीहां, दीहा सफल करेस ॥ सिणगार देयनो जायो, गायो जक्तियें आज ॥ पुण्य अनंता लीधां, सीधां वंछित काज ॥ सोजागी वेरागी, सुंदर मुनि सिरताज ॥ जव सायर उतारे, तारे जिम वरुजहाज ॥ ॥ ४ ॥ कीर्त्तिविजय उवझाय पसाय लइ जलेजाव ॥ गछपति गायो पायो, ऊलट सरले जाव ॥ जिहांलगें चंद्र दिवाकर, मानस नाम तलाव ॥ तिहांलगें जयवंता गुरु, होजो पुण्यप्रजाव ॥ ५ ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ बावा हम बिचार करलागे, हम बिचार लागे ॥ बा० ॥ टेक ॥ मनमें चिंता रहि न कोउ, डुःखजरम जोजागे ॥ बा० ॥ १ ॥ गुरुका शब्द तीर तरकसमें, करे कमान बिचारी ॥ साचे सो रन समसेर हमारे, तो ग्यान घोडे असवारी ॥ बा० ॥ ॥ २ ॥ गोरव काज वसीला कीया, चेहेरे नाम लिखाया ॥ सत्य काज संतोष लगामी, तेजीका चाबक लाया ॥ बा० ॥ ३ ॥ प्रेम प्रीत बिच जाम न दीना, तुरत बरात लखाइ ॥ नाम खजाना जगत अलुफा, तो खुब चाकरी पाइ ॥ बा० ॥ ४ ॥ हांसल दाम खरच कछु नांहीं, तागीर करे न कोइ ॥ विनयकुं दरसन उमदी खिजमत, जाग्य विना न

का,

बत इनव ा० ॥ ५ ॥ इति ॥

रूठरही सु

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

मुझ रहेहो । आदि जिन ध्यायो, चरणारविंद उहो० ॥ ४ ॥ उदयो प्रजु मुख सूर ॥ आ० ॥ टेक ॥ चल पद अब्जियो, त्रिहुं लोक आनंद लह्यो ॥ सेवो शिवरपुरचंद्र शीतल जरपूर ॥ आ० ॥ १ ॥ घर

घर मंगल ठायो, बुद्धि विवेक आयो ॥ गुरुके चरण ठायो, सुकर समकित पायो ॥ आ० ॥ शनी केतु राहु चलायो, विनय पद तिहां पायो ॥ नवनिधान शुद्ध शिव वधू पहोचायो ॥ आ० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पद ठत्रीशमुं ॥

॥ परम पुरुष तुंहि, अकल अमूरति युंही, अकल अगोचर रूप, वरन्यो न जात हे ॥परम०॥१॥ टेक ॥ तिन जगत रूप, परम वह्लभरूप, एक अनेक तुंही, गिन्यो न गिनात हे ॥ परम० ॥२॥ अंग अनंग नांहिं, त्रिभुवनको तुं सांई, सब जीवनको सुखदाइ, सुखमें सोहात हे ॥ परम० ॥३॥ सुख अनंत तेरो, म्ह्योहु न आवे घेरो, इंद्र इंद्रादिक हेरो, तोहुं न हिं पात हे ॥ परम० ॥ ४ ॥ तुंही अविनाशी कहायो, लखेमें न कानहीं आयो॥ विनय करी जो चायो, ताकुं प्रभु पायो हे ॥ परम० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद साडत्रीशमुं ॥

॥राग आशावरी॥ माया महा ठगणी में जानी ॥ माया० ॥ टेक ॥ त्रिगुन फांसा लेईकर दोरत, बोलत अमृतवानी ॥ माया० ॥ १ ॥ केसव घर कमला

होइ बेठी, संभु घर भवानी ॥ ब्रह्माघर सावित्रि हो-इ बेठी, इंद्र घर इंद्राणी ॥ माया० ॥ २ ॥ पंडित पोथी होइ बेठी, तीरथीयाकुं पानी ॥ योगी घर भभूत होइ बेठी, राजाके घर रानी ॥ माया० ॥ ३ ॥ किनें माया हीरो करलीनो, किने ग्रही कोरी जानी ॥ कहत विनय सुनो अब लोको, उनके हाथ बिकानी ॥ माया० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ इति श्रीजशविलास तथा श्रीविनयविलास संपूर्ण. ॥



॥ ॐ ह्रीं श्रीअसिआउसायनमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीज्ञानविलास प्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग भैरव ॥ चारित्र पति श्री चारित्र पार्श्वं, नवनिधि श्रीगृह ध्येयं ॥ चा० ॥ टेक ॥ भक्ति भर निर्जर गण नम्रित, नित्यं क्रम मर्चेयं ॥ चा० ॥ १ ॥ रितु शर घन वैडूर्य मणि छवि, रविकर रुचि सुशरीरं ॥ कज मकरंदोत्कट सम वदनं, दसन कुंदल हीरं ॥ चा० ॥ २ ॥ नम्रित धनु पूरण शशि नयनं, शांति सुधारस रूपं ॥ अनुपमउत्कट गुण गण जलधिं, परमानंद सरूपं ॥ चा० ॥ ३ ॥ गंभीरोत्कट शरत्रि सद्गुण, युक्त वचामृत पेयं ॥ त्रिभुवन गत भवि धर्मुपशमनं, शिवतरुवीज गृहेयं ॥ चा० ॥ ४ ॥ पुष्पफलान्वित सुरतरुलब्धं, वंछित पूरण एयं ॥ चारित्रनंदी श्रीसंततिदायक, पार्श्व चारित्र जिन ज्ञेयं ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग भैरव ॥ भोर भयो उठ जागो मनुवा,

साहिब नाम संनारो ॥ जो० ॥ टेक ॥ सुतां सुतां रयनविहानी, अब तुम नींद निवारो ॥ मंगलकारि अमृत वेला, थिरचित्त काज सुधारो ॥ जो० ॥ ॥ १ ॥ खिनन्नर जो तुं याद करेगो, सुख नीपजेगो सारो ॥ वेला वीत्यां है पछतावो, क्युं कर काज सुधारो ॥ जो० ॥ २ ॥ घरव्यापारें दिवश वितायो, राते निंद गमायो ॥ इन वेला निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमायो ॥ जो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग नैरव ॥ मेरे तो मुनि वीतराग, चित्त मांहे जोई ॥ मेरे० ॥ टेक ॥ और देव नाम रूप, दूसरो न कोई ॥ मेरे० ॥ १ ॥ साधनके संघ खेल खेल, जाति पांत खोई ॥ अबतो वात फैल गइ, जाने सब कोई ॥ मेरे० ॥ २ ॥ घाति करम नसम गण, देहमें लगाई ॥ परमयोग सुऋनाव, खायक चित्त लाई ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तंबूतो गगन नाव, नूमि शयन नाई ॥ चारित नवनिधि सरूप, ज्ञानानंद नाई ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग जैरव ॥ ब्रह्मरूप ज्योतिरूप, चित्तमां सं-जारके ॥ ब्रह्म० ॥ टेक ॥ निर्मल जाको रूप विराजे, ज्व्य जाग वीतराग, स्वगुन जोग परम योग, ज्ञान दरश एकरूप, जगतजास कारके ॥ ब्रह्म० ॥ १ ॥ अक्षय अविचल गुणगणधामी, परमरूप आतम रूप, सिऊसरूप विश्वजूप, बाल तरणि रोचिरूप, दरव जाव जासके ॥ ब्रह्म० ॥ २ ॥ परमानंद चेतनमय मूरति, रिपुनिकंद बोधकंद, सुख अमंद स्वछवृंद, तत्वरंग चारितनंद, ज्ञानानंद वासके ॥ ब्रह्म० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग जैरव ॥ ब्रह्मज्ञान कांति देख, आनंद अंग पश्यां ॥ ब्रह्म० ॥ टेक ॥ जव्य जन संसटाल, तिन लोक प्रतिपाल ॥ करम वरग रहित होय, सासत गुण लहियां ॥ ब्रह्म० ॥ १ ॥ सहज निजपद पहिचान, शुज अशुज जाव जान ॥ सकल परजन विजाव, दूरथी तजैयां ॥ ब्रह्म० ॥ २ ॥ फटिक सम स्वछमान, विमल गुण गण निधान ॥ परमनिधि चारितरूप, ज्ञानानंद लहियां ॥ ब्रह्म० ॥ ३ ॥

॥ पद छट्ठु ॥

॥ राग वेलावल ॥ साहिब वास पहिचानियें, जानो तेहनो ज्ञाव ॥ वह जान्या विन ए तनु, पाहन सम ठाव ॥ साहिब० ॥ १ ॥ ज्ञाने ग्येयकी एकता, ध्याने ध्येय समाय ॥ निज अनुज्ञव घट जोइयें, कहावें स्यो रमाय ॥ साहिब० ॥ २ ॥ वेद पुरानमें कबु नहीं, नहीं कबु वाको सहिनान ॥ इगं निधि चारित रूपमय, ज्ञानानंद सुजान ॥ साहिब० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ या नगरीमें क्युं कर रहनां, राजा लूंट करे सो सहना ॥ या० ॥ टेक ॥ नहीं व्यापार इहां कोइ चाले, नही कोइ घरमांहें गहना ॥ या० ॥ १ ॥ तसकर पण निज दाव विचारे, ज्ञेद निहाले फिर फिर रहना ॥ नारी पांच शीपाइ साथें, रमण करे नित कुणसें कहना ॥ या० ॥ २ ॥ अंजलि जल जिम खरची खूटे, आखर इग दिन हेगा परना ॥ यातें नवनिधि चारित संयुत, इग ज्ञानानंद हेगा सरना ॥ या० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ साधो जाइ देखो नायक माया ॥ सा० ॥ टेक ॥ पांच जातका वेस पहिराया, बहु विध नाटक खेल मचाया ॥ सा० ॥ १ ॥ लाख चौरासी योनिमांहे, नानारूपें नाच नचाया ॥ चवदह राजलोक गत कुलमें, विविध जांतिकर जाव दिखाया ॥ सा०॥ २ ॥ अजतक नायक धायो नांहिं, हारगयो कहुं कुनसें जाया ॥ यातें निधि चारित्र सहायें, अनुपम ज्ञानानंद पदजाया ॥ सा० ॥ ३ ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ अवहीं प्यारे चेतले, घर पुंजी संजारो ॥ अव० ॥ टेक ॥ सहु परमाद तुं बांकदे, निरखो कागल सारो ॥ अ० ॥ १ ॥ मगरूरी तुम मत करो, नहिं परगल तुऊ माया ॥ पुंजी तो ठेठी घणी, व्यापार वधाया ॥ अ० ॥ २ ॥ गांफिल होय कर मतरहे, पग देख फिलावो, घटमें निधि चारित गही, ज्ञानानंद रमावो ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ प्यारे चित्त विचारले, तुं क

हांसें आया ॥ बेटा बेटी कवन हे, किसकी यह माया ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ आवनो जावनो एकलो, कुण संग रहाया ॥ पंथक होयकर जालमें, कैसें लपट्यो त्राया ॥ प्यारे० ॥ २ ॥ नीसर जावो फंदसें, इग छिनमें त्राया ॥ जो निधि चारित आदरे, ज्ञानानंद रमाया ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू सुता क्यां इस मठमें ॥ अ० ॥ टेक ॥ इस मठका हे कवन त्ररोंसा, परू जावे चटपटमें ॥ अ० ॥ छिनमें ताता छिनमे शीतल, रोग शोग बहु मठमें ॥ अ० ॥ १ ॥ पानी किनारे मठका वासा, कवन विश्वास ए तटमें ॥ अ० ॥ सूता सूता काल गमायो, अजहुं न जाग्यो तुं घटमें ॥ अ० ॥ २ ॥ घरटी फेरी आटो खायो, खरची न बांधी वटमें ॥ अ० ॥ इतनी सुनी निधि चारित्र मिलकर, ज्ञानानंद आए घटमें ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ बिनजारा तें खेप त्ररी त्रारी ॥ बि० ॥ टेक ॥ चार देसावर खेप करी तम, लान्न

खह्यो वहु जारी ॥ वि० ॥ फिरतां फिरतां जयो तुं लायक, लाखी नाम संजारी ॥ वि० ॥ १ ॥ सहस लाख करोमां उपर, नाम फलायो सारी ॥ वि० ॥ वेटा पोतरा वहु घर कीना, जगमें संपत्त सारी ॥ वि० ॥ ॥ २ ॥ खूटी खरची लदगयो डेरो, पमगयो टांमो जारी ॥ वि० ॥ विन खरचीतें कवन संजारे, टांडेकी जई खवारी ॥ वि० ॥ ३ ॥ पहेले देखी पग जो राखे, निधि चारित तुं धारी ॥ वि० ॥ ज्ञानानंद पद आदरतो, खरची होती सारी ॥ वि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ योगी तेरा सूना मंदिर क्युं ॥ योगी० ॥ टेक ॥ वहु महनतकर मंदिर चुनियो, अब नहीं वसता क्युं ॥ योगी० ॥ १ ॥ तीरथजलकर पहने धोया, जोग सुरजि दरव क्युं ॥ योगी० ॥ जसमजूत ए मंदिर ऊपर, घास लगाया क्युं ॥ योगी० ॥ २ ॥ रामनाम एक ध्यानमें योगी, धूनी ज्युंकी त्युं ॥ योगी० ॥ एह विचार करी जाइ साधो, नवनिधि चारित स्युं ॥ योगी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू वह जोगी हम माने जो हमकुं सबगत जाने ॥ अ० ॥ब्रह्मा विष्णु महेसर हमही, हमकुं इसर माने ॥ अ० ॥ १ ॥ चक्री बल वासुदेव जे हमहीं, सबजग हमकुं जाने । अ० ॥ हमसें न्यारा नहिं कोइ जगमें, जग परमित हम माने ॥ अ० ॥ २ ॥ अजरामर अकलंकत हमहीं, शिववासी जे माने ॥ अ० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद जोगी, चिद्घन नाम जे माने ॥ अ० ॥३॥ इति ।

॥ पद पंदरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ साधो जाइ नहिं मिलिये हम मीता ॥ सा० ॥ टेक ॥ मीता खातर घर घर जटकी, पायो नहिं परतीता ॥ सा० ॥ जहां जाउं ताहां अपनी अपनी, मत पख जांखे रीता ॥ सा० ॥ ॥१॥ संसय करुं तो कहे भिनाला, वल्लज रूसे नीता ॥सा०॥ इत उतसें अधविचमें जूली, कैसे कर दिन वीता ॥ सा० ॥ २ ॥ आगम देखत जग नवि देखुं, जिम जल जख पग रीता ॥सा०॥ तिनथी हव अम निधि चारित युत, इग ज्ञानानंद मीता ॥ सा० ॥३॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ नानारंग गहन कानन विच, चार दिनारा देख तमासा ॥ ना० ॥ टेक ॥ रंग सुरंग फुली वनराइ, नित नित देखत रहत उल्लासा ॥ ना० ॥ १ ॥ ठोटे मोटे बहु विध तरुवर, करम हेतु मदमाता ॥ पंच सखी सुख पवने हिलमिल, अंगोअंग जूले रंगराता ॥ ना० ॥ २ ॥ केतेइ पात फुल फल जडगए, केतेइ पाके पाता ॥ रह गइ सांख पुण वसंत समय गत, केतेइ जयगए फुल फल पाता ॥ ना० ॥ ३ ॥ फिर निर धूत पवन योगें कर, जलबुद बुदका वासा ॥ इग दिन चटपट सवही चलगए, जिम जल विच वतासा ॥ ना० ॥ ४ ॥ उलट पलट तरु देख्यो वनमें, तुरतही जयो उदासा ॥ यातें नवनिधि चारित्र नंदे, ज्ञानानंद सुख खासा ॥ ना० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ निज आसाका वडा जरोसा, पर आसा हे गलकी पासा ॥ नि०॥ टेक ॥ आपहि परकी आस करतहे, केसे पूर करे ते आसा ॥

नि० ॥ १ ॥ पर आसा खिन खिन रुववक्रियो, रह्-
कर देख्यो खूब तमासा ॥ नि० ॥ आसा दासिके
वस कूकर, नटके गलिगलि घरघर वासा ॥ नि०॥
॥ २ ॥ निज आसीकी आस करंता, जटपट पूरण
होवे आसा ॥ नि० ॥ एह विचार करी जाइ साधो,
पामो नवनिधि चारित खासा ॥ नि० ॥ ३ ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ कुण जाणे साहेबका वासा,
जिहां रहताहे साहिब साचा ॥ कु० ॥ टेक ॥ सा-
धु होय केइ जलमें बूडे, जिम मछलीकाहे जल
वासा ॥ कु० ॥ १ ॥ बामण होयकर गाल बजावे,
फेरे काठकी माल तमासा ॥ गौमुखि हाथें होठ
हलावें, तिणका साहिब जोवे तमासा ॥ कु० ॥ २ ॥
मुल्लां होयकर बांग पुकारे, क्या कोइ जाणे साहि-
ब बहेरा ॥ कीडीके पग नेउर वाजे, सोबी साहि-
ब सुनता गहेरा ॥ कु० ॥ ३ ॥ कंठ काठ केइ मुह-
को बांधे, काला चीवर पहरे तमासा ॥ छोत अछो-
तका पानी पीवे, जक्ष अजक्ष जोजनकी आसा ॥
कु० ॥ ४ ॥ साधु जए असवारी बेसे, नृपपरनीति

करे सुख खासा॥पंचाग्नि केइ ताप तपत हे, देह खाख रासजपर जासा ॥ कु० ॥ ५ ॥ आठ दरव आगल केइ राखे, देव नाम परसाद लगाता ॥ घंट बजाडी आपहिं खावे, नित नित साहिवकुं दिखलाता ॥ कु० ॥ ६ ॥ सरवंगी जे सवकुं माने, अपनी अपनी मतिमें वहुरा ॥ साहेव सब नटबाजी देखे, जग जनकारज वस जया वहुरा ॥ कु० ॥ ७ ॥ इम कर नहिं कोइ साहेव मिलता, जगमें पाखंड सवही कीता ॥ चारित्र ज्ञानानंद विना नहिं, समजो जगमें तन कोइ मीता ॥ कु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद ३ गणीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ वालो माहरो क्यौं जटके परवासा, तुजमठ निरखो साहेव वासा ॥ वा० ॥ टेक ॥ विनु अनुजव ताकुं नहिं जाने, देखे केसें उजासा ॥ वा० ॥ १ ॥ नहिं मानस नहिं नारी साहिब, नांहि नपुंसक आगम जासा ॥ पांचो रंग जाके नहिं दिसे, तामें नहिं गंध रसकावासा ॥ वा० ॥ २ ॥ नहिं जारी नहिं हलका साहेव, नहिं रूखा नांहि चिकनासा ॥ शीता ताता जाके न पावे,

अप्रतिबंध आगति गति जासा ॥ वा० ॥ ३ ॥ कोइ संघयण जाके नहिं पावे, नहिं कोइ संठाण निवासा ॥ जां देखे तां एकही साहिब, जग नन्न परसितहे जसु वासा ॥ वा० ॥ ४ ॥ सो साहब तुं अपना मठमें, निरखो थिर चित्त ध्यान सुवासा ॥ चारित ज्ञानानंद निधि आदर, ज्योतिरूप निजन्नाव विकासा ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ जान न बामन काजी साधो, साहबकी गति है गी न्यारी ॥ जा० ॥ टेक ॥ उतपाद व्यय दरव परयायें, एक अनेक इगहे पुन सारी ॥ सा० ॥ १ ॥ थिरता एक समय गत जाके, उतपाद व्यय पण ध्रुव सारी ॥ अस्ति नास्ति नास्ति आस्तिकहे, आगम मांहें द्रव्य विचारी ॥सा०॥२॥ ऐसी बात हम कबहुं न जानी, किनही मुख सुन नांहि संन्नारी ॥ चरम नयन कर नहिं हम निरखी, अनुपम सादवाद गुण धारी ॥ सा० ॥ ३ ॥ चउ निखेपें सात नये कर, सातें न्नंग समाधि संन्नारी ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद अनुन्नव,

निश्चे साहेब जाणे सारी ॥ सा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ सुनो पिया तम सुखसें विचरो री, नंदन वनकी सयल करोरी ॥ सु० ॥ टेक ॥ मेरे बापको बाप मनोहर, बहुविध तरुतल चिरधरोरी ॥ सु० ॥ १ ॥ नारी समीयुत तरुतल बेस्यो, दुःख सुखकी सहु बात करेरी ॥ दुग मंतरी परिकर युत शालो, आयो अंगोअंग मिरैरी ॥ सु० ॥ २ ॥ सासु आठ सखीयुत आइ, मनकी मोजां मिल निकस्यो री ॥ धरमराजको परिकर सघलो, आय मिल्यो मन शुद्ध विकस्योरी ॥ सु० ॥ ३ ॥ इव चेतन सहु निज परिवारें, वसतां अनुजव बात करेरी ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद साथें, ज्ञान लहर पामे जलीय परेरी ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ दूर रहो तम दूर रहो तम दूर रहोरी, मोसुं तो तम दूर रहोरी ॥ दू० ॥ टेक ॥ इतने दिन अमने दुःख दीधुं, थारे संग कर सुख न लहोरी ॥ दू० ॥ १ ॥ तीन लोककी ठगनी तूंही,

तुजसम नहिं कोइ एहवो करेरी ॥ मीठो बोली हिरिदय पैसे, लाम करे बहु घात परेरी ॥ दू० ॥ ॥ २ ॥ सागरमें तुं था हव तावे, पाछे गोतो देय टरेरी ॥ तुज कुटिलाका कवन भरोसा, बोलतही तुं घात करेरी ॥ दू० ॥ ३ ॥ इहां सेती तुं दूर परीजा, इहां थारी मति नांह लहेरी॥ चारित ज्ञानानंद र- खवालो, अम प्यारी मोरे पास रहेरी ॥ दू० ॥ ४ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ तूंही पिया मन गमतो मिल्योरी, ऊर ठोर मन नांहिं मिल्योरी ॥ तूं० ॥ टेक ॥ हुं तो- सुं कबु नहिं चाहुं, केवल अंगें रमन करोरी ॥तूं०॥१॥ केवल तनमय एकत भावो, मोसुं प्रेमें प्रीति करो- री ॥ आठ दृष्टि सखि आतम साथें, वात करो तम सुख वचरोरी ॥ तूं० ॥ २ ॥ मनुवो सुनकर घरनी बानी, पास वसारे प्रीत करेरी ॥ चारित ज्ञानानंद सहायें, वालो धीरज चित्त धरेरी ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ प्यारे तम चउगान लरोरी, शां- ति खरुग तम तेग करोरी ॥ प्या० ॥ टेक ॥ धरम

राज लसकर तमसाथें, मोटो मंतरी संग लरोरी ॥ प्या० ॥ १ ॥ मोहराज मकरध्वज गजपर, आयो खनखिन कोप करेरी ॥ चउ सुत मंतरियुत बहु लसकर, रणकारण सावधान लरेरी ॥ प्या० ॥ २ ॥ वालो संयम बक्करधारी, धरम टोप धर खरूग गहे- री ॥ आगमसाथें रणमें जूजे, डुर्धर रिपुदल ह- नन गहेरी ॥ प्या० ॥ ३ ॥ सातनो खयकर तीन पछाड्या, आठ शोलनो घात करेरी ॥ एक एक पट इगने मारुं, चोथो क्रोधनो घात चरेरी ॥ प्या० ॥ ॥ ४ ॥ दशमे सुखम लोज पिठारी, कूद्यो बारम ठान लहेरी ॥ मोहराजने गजसें पाड्यो, एकहिं हाथें घात वहेरी ॥ प्या० ॥ ५ ॥ जीत नगारो तेह वजायो, तेरमी जूमें सुख विचरोरी ॥ काची दोय घरी रण जींती, चारित ज्ञानानंद वरोरी ॥ प्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पदपच्चीशमुं ॥

॥ राग टोरी ॥ मेरो पिया हे परम सन्यासी, कवन करे हे पियाकी हांसी ॥ मे० ॥ टेक ॥ वर- जित ईरुा पिंगला मारग, सुखमना घर अजिलाषी ॥ मे० ॥ १ ॥ यम नियम आसन अनुरंगी, प्रत्याहार

ध्यान धारणवासी ॥ प्राणायाम समाधि सुरंगी, मू लोत्तर सुविलासी ॥ मे० ॥ २ ॥ रेचकपूरक कुंज क नेदें, वादर मन वशकारी ॥ चरम रंध्र मध्यगेहे पूरी, अनहद नाद विचारी ॥ मे० ॥ ३ ॥ वादर योग युगति सहु थिरता, आतम ध्यान विलासी ॥ पांचवरण पण तत्व सुदर्शी, परमातम गत जासी ॥ मे० ॥ ४ ॥ परमातम अनुसारे करतां, निज सहु जाव विकासी ॥ चारित ज्ञानानंद सन्यासी, जाने तिण निजवासी ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ राग आशावरी फाग ॥ कैसें विचार करो जाइ साधु, दिव्य विचारें मन आराधो ॥ कै० ॥ टेक ॥ जो परथम सिद्धगति अनुजवियें, संसृति विण कहां सिद्ध होय साधो ॥ कै० ॥ १ ॥ संसृति चउगति नेद कहावे, तीन नेद तीग वेद सुजानो ॥ नारक तिरि जो परथम कहियो, निरजर नर बिनतें कैसे मानो ॥ कै० ॥ २ ॥ चउगति परथम जेह बखानुं, नरनारी कुण पहिले जायो ॥ बीज जाड पहिले कुण कहियें, इग विना इग किहांसें आयो ॥कै०॥ ३ ॥

इनकी आदि किहां कुण जाणे, आगम दिव्य वि- चार प्रमाणो ॥ चारित ज्ञानानंदें अनुभव, ए सद्भाव अनादि बखानो ॥ कै० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अद्भूत एक अचंभो देखो, अबतक जानुं नहिं कोइ लेखो ॥ अ० ॥ टेक ॥ जंगलमांहे मोटो चरखो, कवन बनायो चालत पेखो ॥ अ० ॥१॥ छोटीसी कीकी तेहनें कांते, आठ पहर अहनिसि मन भायो ॥ चालत चालत थाकत नांहिं, इतनो बल यामें किहांसें आयो ॥ अ० ॥ २ ॥ रूअडी तेहनी नहि कहिं दीसे, का जाने कहां राखी भायो ॥ सघलाइ जनने चरखो दीसे, आगल पाछल रू न दिखायो ॥ अ० ॥ ३ ॥ कीडी थाकतां चरखो न चाले, केसो भयो हरामी देखो ॥ तिनतें चारित ज्ञानानंद जे, आपमतें रहे तम ते पेखो ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अठावीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अद्भूत एक अचंभो भारी, निरख समज आपोआप विचारी ॥ अ० ॥ टेक ॥ पारावाररहित सागर बिच, नाव एक जिहां

निरखो न्नारी ॥ दांडी पांच चलावे जाकुं, पतवारी इग हे सुखकारी ॥ अ० ॥ १ ॥ चउदिसि चित्रित पाट पटंवर, नीतर साहव सुता सारी ॥ चउदिसि तेन तरंड फिरतहे, वालो साहव गांफल न्नारी ॥ अ० ॥ २ ॥ शैल सुनत उठ वेठे साहव, न्नाज गए जिहां तसकर सारी ॥ चारित ज्ञानानंद संन्नारी, आनंद हरख लहे हुशिआरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणत्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ राम राम सव जगहि मा- ने, राम रामको रूप न जाने ॥ रा० ॥ टेक ॥ कवण राम कुण नगरी वासो, कहांसें आयो किहां न्नयो वासो ॥ रा० ॥ १ ॥ राम राम सहु जगमें व्यापी, राम विना हे कैसे आलापी ॥ राम विनाहे जंगल वासा, पाछे कोइ जाकी न करे आसा ॥रा०॥२॥ रा- महि राजा रामहि राणी, राम रामहि हैरोतानि ॥ रटन करतहे कवन रामको, कैसो रूप बतावो वा- को ॥ रा० ॥ ३ ॥ जे केइ वाको रूप बतावे, तेहिज़ साचो मुज मन न्नावे ॥ सो निधि चारित ज्ञानानं- दें, जाने आपनो राम आनंदें ॥ रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ योगसमाधि योग आधारो, आगममांहें तत्त्व विचारो ॥ यो० ॥ टेक ॥ काननपरले खार कीनारे, अनुपम एक नगर सुखकारो ॥ यो० ॥ १ ॥ जामें जीव अनंत रहादे, कुण समरथ ते गिणतां मानो ॥ सादि अनंता आयु जेहनो, बहुविध परिगल रिद्धि वखानो ॥ यो० ॥ २ ॥ उंचनीच जिहां भेद नहीं हे, सब जन भूपति भाव निहालो ॥ चारित ज्ञानानंद संभालो, जिम पामो पुरिवास विशालो ॥ यो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मंदिर एक बनाया हमने ॥ मंदिर० ॥ टेक ॥ जिस मंदिरके दश दरवाजे, एक बुंदकी मायारे ॥ नानो पंखी जाके अंतर, राज करे चित्त लाया रे ॥ मं० ॥ १ ॥ हाड मांस जाके नहिं दीसे, रूपरंग नहिं जायारे ॥ पंख न दीसे कहसें पिछानुं, षटरस भोगें जायारे ॥ मं० ॥ २ ॥ जातो आतो नहिं कोइ देखे, नहिं कोइ रूप बतावेरे ॥ सब जग खायो तो पण भूखो, तृप्ति कबहिं न पा-

वेरे ॥ मं० ॥ ३ ॥ जालम पंखी तालम मंदिर, पाठे कोन बतावेरे ॥ वह पंखीको जो कोइ जाने, सो ज्ञानानंद निधि पावेरे ॥ मं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ इतना काम करे जे जोगी, सोइ योग न जानेरे ॥ इ० ॥ टेक ॥ मूंरु मूंराया भस्म लगाया, जोगी ना हम जानेरे ॥ वक्तर पहेरी रण कुं जीतें, सो योगी हम जानेरे ॥ इत० ॥ १ ॥ राजा वसकर पांचों जीते, दुर्धर दोयने मारेरे ॥ चार काटके सोल पिठारे, सोइ योग सुधारेरे ॥ इत० ॥ २ ॥ जागृत भावें सरव समय रहे, परमचारित्र कहावेरे ॥ ज्ञानानंद लहेर मतवाला, सो योगी मन भावेरे ॥ इत० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ वादिनकुं नहिं जाना जबतक, कैसा ध्यान लगाया रे ॥ वा० ॥ टेक ॥ जटा वधारी भस्म लगाइ, गंगा तीर रहायारे ॥ उरध बाहु आतापना लेइ, योगी नाम धरायारे ॥ वा० ॥ १ ॥ चार वेद ध्वनि सूत धारकर, बामण नाम कहायारे ॥

शासतर पढके ऊगडे जींते, पंमित नाम रहायारे॥
वा०॥२॥ सुन्नत करके अल्ला बंदे, सीया सुन्नी कहा
यारे ॥ वाको रूप न जाने कोइ, नवि केइ बतलाया-
रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ जे केइ वाको रूप पहिचाने, तेहि-
ज साच जनायारे ॥ ज्ञानानंद निधि अनुन्नव योगें,
ज्ञानी नाम सुहायारे ॥ वा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ राग वुमरी ॥ ऐसो योग रमावो साधो ॥ ऐ-
सो योग रमावोरे ॥ ऐ० ॥ टेक ॥ बरम विन्नूति
अंग रमावो, दया तीर मन जावोरे ॥ ज्ञान शोच-
ता अंतर घटमें, आतमध्यान लगावोरे ॥ ऐ० ॥
॥ १ ॥ धरम शुकल दोय मुंदरा धारो, कनदोरो
सम सारोरे ॥ सुन्न संयम कोपीन विचारो, नोजन
निरजरा धारोरे ॥ ऐ० ॥ २ ॥ अनुन्नव प्याला प्रे-
म मसाला, चाख रहे मतवाला रे ॥ ज्ञानानंद ल-
हेरमें जूले, सो योगी मदवालारे ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग वुमरी ॥ हुं सहलानी जानुं हुं तुम, काहे
कुं नटकावे रे ॥ हुं० ॥ टेक ॥ नटकत नटकत नइ

हुं हरानी, तूं मत रीस चढावेरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ए-
तला काल नपुंसक जानी, मंदिरमांह रहावे रे ॥
सघलाइ मानसने तूं ठेले, एहि अचंनो आवे रे ॥
हुं० ॥ २ ॥ आसपास ना अमने देखी, कुटिला
नाव जनावे रे ॥ वल्लन सांनल मोकुं ठांके, मोरी
हुरमत जावे रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ तूं तो निरलज नयो
मतवालो, थारी कवन चलावे रे ॥ अम वल्लन ज्ञा-
नानंदसाथें, अंगोअंग मिलावे रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद छत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ योगी यासें चित्त रमायो, या-
की नगति करत हुं ॥ यो० ॥ टेक ॥ मेरो तो योगी
बालो नोलो, बरमचारी मन नायो ॥यो०॥ जो यह
देखे सोइ लोनावे, मतवालो जग नायो ॥ यो० ॥ १ ॥
योगी खातर घर घर नटकी, यह योगी अब पायो
॥ यो० ॥ अमनें वल्लन याकुं मान्यो, मेरो चित्त
लोनायो ॥ यो० ॥ २ ॥ निरलोनी निकलंकी योगी,
योगी योग रमायो ॥ यो० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद
मूरति ॥ प्राण पियारो पायो ॥ यो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद साडत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ देखी ईग नारी, सतिय शिरोमणि जाई ॥ दे० ॥ टेक ॥ रूपवंत जे नागी जटके, सबहि के मन जाई ॥ दे० ॥ १ ॥ सघलाइ मानस तेह रमावे, मुनि जन शोना दाई ॥ दे० ॥ जोगी जन तिन नांहि वतावे, योगी चित्त रमाई ॥ दे० ॥ ॥ २ ॥ पंडित याकुं लाड करतहे, अहनिसि चित्त रमाई ॥ दे० ॥ योगीसर अंगोअंग रमावे, हाथो हाथ जूलाई ॥ दे० ॥ ३ ॥ इनने निरखी मुनि मनचाले, ध्यान धरे चित्त लाई ॥ दे० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद पायो, या नारी चित्त आई ॥ दे० ॥४॥

॥ पद अडत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ सुणलीजो पिताजी, योगीयासें चित्त रमायो ॥ सु० ॥ टेक ॥ अहनिसि योगी के संग वेसी, जग जन लाज गमायो ॥ सु० ॥ १ ॥ अपने मनरूचि अम ए कीधो, चजदिशि वात फलायो ॥ सु० ॥ मेरे तो घरसे काम नही हे, योगी पास रहायो ॥ सु० ॥ २ ॥ इतनी कहकर घरसें निकसी, योगी वल्लज जाये ॥ स०॥ निधिचारित ज्ञा-

नानंद योगी, मिलकर अंग मिलायो ॥सु०॥३॥ इति

॥ पद उगणचालीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ मैं कैसे रहुं सखी, पियागयो परदेशो ॥ मैं० ॥ टेक ॥ रितु वसंत फूली वनराइ, रंग सुरंगीत देशो ॥मैं०॥१॥ दूरदेश गये लालची वालम, कागल एको न आयो ॥ मैं० ॥ निर्मोही निस्नेही पिया मुज, कुण नारी लपटायो ॥ मैं० ॥ २ ॥ वसंत मासनी रात अंधारी, कैसें विरह वुजायो ॥ मैं० ॥ इतने निधि चारित पुत वल्लभ, ज्ञानानंद घर आयो ॥ मैं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चालीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ मेरे पियाकी निशानी, मोरे हाथ न आवे ॥ मे० ॥ टेक ॥ रूपी कहुं तो रूप न दीसे, कैसें करी बतलावे ॥ मे० ॥ १ ॥ जोति सरूपी तेह विचारूं, करमबंध कैसें जावे ॥ मे० ॥ सिद्ध सनातन उपजन बिनसन, कैसें विचार सुहावे ॥ मे० ॥ ॥ २ ॥ वेद पुरानमें नहिं कहि दीसे, किणपर जाव रमावे ॥ मे० ॥ यातें चारित ज्ञानानंदी, एकहिं रूप कहावे ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद एकतालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ क्योंकर महिल बनावे पियारे ॥ क्यों० ॥ टेक ॥ पांच भूमिका महल बनाया, चित्रित रंग रंगावे ॥ क्यों० ॥ १ ॥ गोखें बेठो नाटिक निरखे, तरुणी रस ललचावे, इक दिन जंगल होगा डेरा, नहिं तुज संग कछु जावे ॥ क्यों० ॥ २ ॥ तीर्थंकर गणधर बल चक्रि, जंगल वास रहावे ॥ तेहना पण मंदिर नहिं दीसे, थारी कवन चलावे ॥ क्यों० ॥ ३ ॥ हरिहर नारद परमुख चलगए, तूं क्यों काल वितावे ॥ तिनतें नवनिधि चारित आदर, ज्ञानानंद रमावे ॥ क्यों० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बेंतालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ क्या मगरूरी बतावे पियारे ॥ क्या० ॥ अपनी कहा चलावे ॥ पि० क्या० ॥ टेक ॥ कवन देश कुण नगरीसें आया, कहां तुझ वास रहावे ॥ पि० ॥ १ ॥ कहा जिनस तुम लाए मगरू, किसविध काल वितावे ॥ कहा जाने का मकसद हेगा, कैसो विचार रहावे ॥ पि० ॥ २ ॥ चार दिनांकी चादनी हेगी, पाछे अंधार बतावे ॥ घर घर

फिरतां थाराहि मानस, अंगुलीयां दिखलावे ॥ पि० ॥ ३ ॥ तिनतें तूं मगरूरी छांडी, जग सम समता लावे ॥ तो नवनिध चारित्र सहायें, ज्ञानानंद पद पावे ॥ पि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद तेतालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ विन वालम कहो कुण गति माहरी, वालम हीं गति नारी ॥ वि० ॥ टेक ॥ सुनो सखी तुम वेग मनावो, सइयां लावो निहारी ॥ विन० ॥१॥ चांदनी राते मकरध्वज शर, आयलग्यो दुःखकारी ॥ विरहव्यथायें अमने खिनखर, सुख नहिं पामे सारी ॥ विन० ॥ २ ॥ जलविन मछली सम टलवलती, विरहजाल नइ नारी ॥ इतने ज्ञानानंद वालम आए, चारित संग सुखकारी ॥ वि० ॥३॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ सेठ बेठे सारंग महलमें ॥ से० ॥ टेक ॥ सेठानी मोह नरपति बेटी, बेटा चार अनोपमें ॥ से० ॥ मिथ्या मकरध्वज जसु नाई, व्यापारें गणि कोपमें ॥से०॥१॥ ऊंची हाट बिछात बिछाइ, सुए करे नवरंगमें ॥ से० ॥ कनक रतननां भूखन

पहिर्यां, वांके वेसे रंगमें ॥ से० ॥ २ ॥ लेखन कागल स्याही राखी, सेठ कहलाए नगरमें ॥ से० ॥ बातें लोक जमा सहु राखी, परखी मेली कुठारमें ॥ से०॥३॥ तेहने कागल कटको दीधो, जया निचिंता पलकमें॥से०॥ सहसलाख क्रोडोनां कागल, लेवे देवे खलकमें ॥ से० ॥४॥ चार दिशावर हाट करी जिन, जारी सराफ परदेशमें ॥ से० ॥ सेठ कहे हम करोड पतिहे, हम सम नहिं कोइ देशमें ॥ से० ॥५॥ जव जन सहु निज मांगन आया, कीधो दिवालो मगनमें ॥से०॥ अवतो शेठ योगी जये जागे, माल दीधो सहु सुजनमें ॥ से० ॥६॥ जैसेतैसे एकल चल गए, कवरी नहिं इग वाटमें ॥ हाट सुजन कोइ नहिं साथे, जइ खरावी वाटमें ॥ से० ॥७॥ एह विचार करी जाइ प्यारे, पुण्य पाप लीयो हाथमें ॥ से० ॥ तिनतें नवनिधि चारित अविचल, ज्ञानानंद जयो साथमें ॥ से० ॥ इति ॥७॥

॥ पद पिस्तालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ साहिव हे तेरे संगमें ॥ सा०॥ टेक ॥ जाके दरव अपरिमित होगा, कवहि न खूटे जंगमें ॥ लेनां देनां कछु नहिं जाके, जोगो अह-

निसि रंगमें ॥ सा० ॥ १ ॥ जिम जिम जोगे तिम तिम वाधे, क्युं जटके मति चंगमें ॥ मृगमद गंधें मृग सम जटके, घट अनुजव नहिं रगमें ॥ सा० ॥ २ ॥ निर्मल गंगानीर जे लाधो, खारी कुण पीवे वाटमें ॥ तिनतें निजघर चारित संयुत, ज्ञानानंद जोवो ठाठमें ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद वेंतालीशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ सइयां मुज गेंदा मंगायदे, गेंदाकी आइ हे बहार ॥ ए चाल ॥ यार मोह नारी मिलायदे, यारोंका याही हे मिलाप ॥ या० ॥ टेक ॥ रूपवंत मोह नारी मिलायदे, उत्तम कुल गुण धाप ॥ या० ॥ १ ॥ पहिली नारी मुज जटकायो, परघर रमवा ढाल ॥ या० ॥ ते मुज दूतापण कहलायो, जग जन कहेते ठिनाल ॥ या० ॥ २ ॥ सुकुलीनी मोहे नारी मिले जो, तो अम चित्त सुख जाय ॥ या० ॥ इतनी सुनकर खायक मंतरी, सुमतिनो मेलन कराय ॥ या० ॥ ३ ॥ घरनी संगें हरख धरीने, अंग रहे लपटाय ॥ या० ॥ चारित्र आदर ज्ञानानंदें, नवनिधि सहज लहाय ॥ या० ॥ ४ ॥

॥ पद सुडतालीशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ किस मिस जाउं पणिहार कूवे, पर आसन योगीका ॥ ए चाल ॥ कुण मिस पियाकुं मनाय, मिलियो पिउ परदेशीका ॥ कु० ॥ टेक ॥ देश नगर नहिं जानुं जाको, जात पात न जनाय ॥ मि० ॥ १ ॥ नाम गोत जाको कछु नांहिं, कैसें निरखुं जाय ॥ मि० ॥ निर्मोही निःसनेही पिया मुज, कुण रीतें समजाय ॥ मि० ॥ २ ॥ मोसें पहेलें लाड करेथो, मुज विन खिन न रहाय ॥ मि० ॥ अवतो मोसें रूसक चाल्यो, वात न पूछे जाय ॥ मि० ॥ ३ ॥ विरहव्यथायें तन मुज जूरे, किणसुं कहियें धाय ॥ मि० ॥ पिउ संयम सुज्ञ समता साथें, ज्ञानानंद रमाय ॥ मि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ मेरे जोले नवाव, कलकत्तेकी सयरकुं ले चलोजी ॥ ए चाल ॥ मेरी प्यारी सुनादे, अवतो तम अम संग चलोजी ॥ मे० ॥ टेक ॥ दोय घोडेपर अम कियो जीन, तम पण चालो प्यारी संग अदीन ॥ मे० ॥ १ ॥ जल पण नांहिं

अब हम हाथ, ढील न करो प्यारी चलो हम साथ ॥ मे० ॥ तम खातर अम दुःख बहु कीन, प्यारी मत छांडे अमने दीन ॥ मे० ॥ २ ॥ नारी कहे परो जारे निगोद, थारे मारे कुण करे वात निखोद ॥ मे० ॥ अम अब चालुं किहां थारे संग धूत, तुं मूरख शिर मोल कुमूत ॥ मे० ॥ ३ ॥ इतनी सुनकर भयो ते उदास, कुटिला अबलानी कुण करे आस ॥ मे० ॥ तिन अवसर लही निधि चारित्त, ज्ञानानंद मूरति भजे सुख चित्त ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद उगणपचाशमुं ॥

॥ राग कहेरबा ॥ एक अचंभो मुज मन वशियो ॥ ए० ॥ टेक ॥ चालतो हालतो डूंगर दीठो, विचमें एक सिखर ऊंचो वसियो ॥ ए० ॥ १ ॥ छोटा पांच शिखर जसुं चउदिशि, नाना तरु विण मंडित रहियो ॥ ए० ॥ सरव काल सागर विच रहितो, कवन चलावे ते अम कहियो ॥ ए० ॥ २ ॥ मानस नहिं कोइ तेहमां दिसे, ध्रुव अध्रुवपणो तेहमें रहियो ॥ ए० ॥ डुंगर बिच नवनिधि चारित्र युत, ज्ञानानंद मूरति गुण गहियो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पचाशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ ठोरी वामनकी, ठोरी वामनकी, अंगिया कुं अंतर लगायके चली ॥ हाथमें पिंजरा गुलाबकी डमी, जरे बजारमें घुरती खडी ॥ ए चाल ॥ मोरे जोले पिया, मोरे जोले पिया, मोपर जाडुका कालकें चले ॥ मो० ॥ टेक ॥ मेरे हिरदय बिच राखती, कबु नहिं मायुं तोसुं रति ॥ मो० ॥ मोसें पिया तम काह उदास, हुं थारे इग चरणारी दास ॥ मो० ॥ १ ॥ जो थारा मनमें रहि एसी हुंस, पेहेलेहि जानति करति रूस ॥ मो० ॥ विन वालम मेरो विगमे काल, क्योंकर वीते हाल निहाल ॥ मो० ॥ २ ॥ अवलाकें पति गति मति जान, अनुपम शील भूषण गुणखान ॥ मोरे० ॥ इतने नवनिधि चारित्र रंग, मिलगए ज्ञानानंद सुरंग ॥ मोरे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद एकावनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ प्रीतके कोइ फंदें पडो ना ॥ ए चाल ॥ वालम नारिके फंदें पडो ना ॥ वा० ॥ टेक ॥ जो तम नारीके फंदमें पडिहो, कोटि जतन

मन राखो रहे ना ॥ वा० ॥ १ ॥ नारी कालीनागन सरिखी, देखत चित्त कामाकोल करे रे ॥ वा० ॥ नारीसंयोगें बरमदत्त परमुख, नरकें डुरधर डुःक्क चरे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ आर्द्रकुमर मुनि नारि संयोगें, वरस चउवीस गिहिवास कियो रे ॥ वा० ॥ नारीकी प्रीतें इनजव परजव, सुख न लहे पगबंध जयो रे ॥वा०॥३॥ उत्तम नर इन नाहिं बतावे, ध्यान धरे वनमांह रहे रे ॥ वा० ॥ निरमल निजगुन आतम ध्याने, सुद्ध समाधि जाव लहे रे ॥ वा० ॥४॥ तिनतें वालम तम पण समजो, कुटिलानी प्रीतकी परिहरो रे ॥ वा० ॥ मोसुं तो निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद सुख रमण करो रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बावनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ देश माहरो पियाकुं बताय दिजो रे, मैंतो लेउंगी जोगनियाको वेस ॥ दे० ॥ ए चाल ॥ कोइ सखी पियाकुं बतावे री, मैंतो जाउंगी वालम पास ॥ को० ॥ टेक ॥ सारी जग्या पूठीयो, वालमजीको देश ॥ कोइको साच नहिं लह्यो, जो कागल पहुंतें देश ॥ को० ॥ १ ॥ ज्ञानी ज्ञानी सब कहे,

मोकुं न दीसें ज्ञान ॥ में तो साचो जब कहुं, पिया रूप कहे मान ॥ को० ॥ २ ॥ सज्जन ऐसो जो मिले, पियाकुं कागल मेल ॥ कागल वांची मुज लखे, पाठो उत्तर खेल ॥ को० ॥ ३ ॥ जबलग कागल तेहनो, नहिं आवे अमपास ॥ तबलग जूठी बात सहु, नहि परु मोकुं आस ॥ को० ॥४॥ इतने एह विचारमें, निधि चारितके संग ॥ आए ज्ञानानंद पिउ, रमण करे सुखरंग ॥ को० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेपनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ मेंतो कैसे पियाकुं सेउंरी, पिया मेरो योगियांको वेस ॥ में० ॥ टेक ॥ में तो कन्या नृपकी, जाने सकल जिहान ॥ घरसें निकलुं कुण परें ॥ कहो सखी चतुर सुजान ॥ में० ॥ १ ॥ सतिय शिरोमणी अम विरुद, बरमचारी शिर मोल ॥ दीसुं नहिं जग लोकमें, माहरो मोल अमोल ॥ में० ॥२॥ बिनपरण्या उत्तम पुरुष, ध्यान धरे दीनरात ॥ ते पण दरशन माहरो, दरश न लहे तिलमात्त ॥ में० ॥ ॥ ३ ॥ में तो मन गमतो कियो, छांडी जग जन वाद ॥ दूर मत रहे वालम मिले, पसरे जग जस-

वाद ॥ मे० ॥ ४ ॥ कन्या एह विचारतां, आय मिले ततकाल ॥ ज्ञानानंद योगी पिया, चारित युत-जगपाल ॥ मैं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चोपनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ कोइ योगी हमकुं जानेरी ॥ मेरो कोइ नामकुं जान ॥ को० ॥ टेक ॥ मानस नहिं हम नारी नांहिं, नांहिं नपुंसक जान ॥ कोइ० ॥ १ ॥ दादा बावा नहि हम काका, ना हम कुणके वाप ॥ को० ॥ नाना मामा हम नहि मोसा, कोइसें नहिं आलाप ॥ को० ॥ २ ॥ बेटा पोतरा गोलक नांहिं, नाती दुहिता न जान ॥ दादी चाची बेटी पोती, ना हम नारी मान ॥ को० ॥ ३ ॥ गुरु चेला नहिं हम काहूके, योगी जोगी नांह ॥ को० ॥ पांच जातमें नहिं हम कोइ, नहिं कोइ कुल गांह ॥ को० ॥ ॥ ४ ॥ दरशन ज्ञानी चिद्घन नामी, शिववासी हम जान ॥ को० ॥ चारित्र नवनिध अनुपम मूरति, ज्ञानानंद सुजान ॥ को० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पंचावनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ बकी दगाबाज, रे तूं बकि द-

गावाज, प्यारी तूं वकि दगावाज ॥ टेक ॥ तेरे खातर डूंगर दरि विच, रही दुःख सह्यो में अपार ॥ हांसी खूसी वहु नातरां कीधां, तूं कांइ जूलि गवार ॥ रे तूं वकि० ॥ १ ॥ कवडी साटे तेरे खातर, माहरो किधो मोल ॥ ढूंढक योगी यति सन्यासी ॥ मुंकित कियो तैं रोल ॥ रे तूं वकि० ॥ २ ॥ मुहको वांधी कान ते फाडी, वहुविध वेस कराय ॥ कपट करी सहु पाखंम कीधा, जन लूंट्यो मन जाय ॥ रे तूं वकि० ॥ ३ ॥ घर घर जटक्यो तेरे साथें, पोतें पाप जराय ॥ अव तूं काह न वोले मोसुं, तुं कपटीनी दिखलाय ॥ रे तूं वकि० ॥ ४ ॥ ऐसो देखी जयोहूं उदासी, निधि चारित्र लहाय ॥ ज्ञानानंद चेतनमय मूरति, ध्यान समाधि गहाय ॥ रे तूं वकि० ॥५॥ इति ॥

॥ पद ठपनमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ प्यारे साहेवशुं चित्त लावोरे, साहेव दूर कहलावो रे ॥ प्या० ॥ टेक ॥ साहेव एकही हे जग व्यापी, नहि कहे जेद लहावे रे ॥ प्या०॥१॥ जे केइ साहेव जेद वतावे, ते वहुरा जग पावे ॥ पारसनाथ कहे कोइ वरमा, विष्णु शिव कहे-

लावे रे ॥ प्या० ॥ २ ॥ ध्यान ध्येय इग पारस रूप, ज्योतिरूप बरम जावे ॥ केवलान्वयी ज्ञानी ते विष्णु, शिववासी शिव जावे रे ॥ प्या० ॥३॥ जोतिरूप साहेब तो इगही, तिनसुं ध्यान लगावो ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद मूरति, ध्यान समाधि समावोरे ॥ प्या० ॥४॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ देखो पिया आगम जहवेरी आयो, नाना भूखन लायो ॥ दे० ॥ टेक ॥ विनय कनकनो घाट बनायो, संयम रतन लगायो ॥ निरमल ज्ञानको हीरक बिचमें, दरशन मानक जायो ॥ दे० ॥ १ ॥ खायक वैडूर्यनी पंगति, मौक्तिक ध्यान लगायो ॥ सुमिति गुपति लीलम विद्रूम जिहां, शेष तत्त्व कहलायो ॥ दे० ॥ २ ॥ ए सहु भूषण मोल अमोला, निरखत चित्त लोभायो ॥ हरषें निधि चारित निहालो, ज्ञानानंद रमायो ॥ दे० ॥ ३ ॥ इति

॥ पद अठ्ठावनमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ ज्ञानकी दृष्टि निहालो, वालम तुम अंतर दृष्टि निहालो ॥ वा० ॥ टेक ॥ बाह्य दृष्टि देखे सो मूढा, कार्य नांहिं निहालो ॥ धरम

धरम कर घर घर जटके, नांहिं धरम दिखालो ॥ वा० ॥ १ ॥ वाहिर दृष्टि योग वियोगें, होत महामतवालो ॥ कायर नर जिम मद मतवालो, सुख विजाव निहालो ॥ वा० ॥ २ ॥ वाहिर दृष्टि योगें जविजन, संस्तृति वास रहानो ॥ तिनतें नवनिधि चारित आदर, ज्ञानानंद प्रमानो ॥ वा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणसाठमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ ज्ञानकी दृष्टि विचारो, साधो जाइ आतम दृष्टि संजारो ॥ सा० ॥ टेक ॥ अनुकरमें शुरूज्ञाने अनुजव, ज्ञेय सकल सुविचारो ॥ ज्ञाने ज्ञेयकी एकता आदर, वहिरातम सुं निवारो ॥ सा० ॥ १ ॥ ज्ञानदृष्टि जे अंतर जावें, सुरूरुचि रूप पहिचानो, अंतरातम ज्ञानातम जावें ॥ होय परमातम जानो ॥ सा० ॥ २ ॥ परमातम ते निजगुन जोगी, चारित ज्ञान वखानो ॥ ज्ञानानंद चेतनमय मूर्त्ति, आनंद जावसु जानो ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद साठमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ अनुजव ज्ञान संजारो, साधो जाइ मत एकंत हठ वारो ॥ सा० ॥ टेक ॥ ज्ञान

विना जे किरिया ज्ञाखे, अंध नर सम वन मोले ॥ आगममां ते देश आराधक, सर्व विराधक बोले ॥ सा० ॥ १ ॥ किरिया ढांकी ज्ञान जे माने, पंगुल नर सम जानो ॥ सरव आराधक दिव्य विचारें, देश विराधक मानो ॥ सा० ॥ २ ॥ तिनतें ज्ञान सहित जे किरिया, करतां कारज सारो ॥ जिम अंध पंगुल दोनु मिलकर, वनसें निसरे सारो ॥ सा० ॥ ॥ ३ ॥ तिनतें एकंत मत पख ढांडी, अंतरज्ञाव विचारो ॥ अनुपम नवनिधि चारित संयुत, ज्ञानानंद संज्ञारो ॥ सा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकशठमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ सूनो सखी मोकुं लूंट मचायो ॥ सू० ॥ टेक ॥ बहु वासरसें विनय व्यथायें, अंगें डुःख रहायो ॥ एक दिन मज्जन सनान करी अम, ज्ञूषन अंग रहायो ॥ सू० ॥ १ ॥ रंग कसूंबा चूनकी पहिरी, पांचमी वरत रहायो ॥ इग योगी मतवालो आयो, ज्ञोलें ज्ञगति लहायो ॥सू०॥२॥ दिनज्ञर मोसें गीत गवायो, सांजे नाच नचायो ॥ रंगमहल बिच सेजें पोढी, मोने रंग ललचायो ॥ सू० ॥

॥ ३ ॥ तनमय एकंत अंगे लपट्यो, रयणे नींद बिकायो ॥ नणदी पण हसी दोडी आई, मोकुं तो मचकायो ॥ सू० ॥ ४ ॥ जोर जयो उठ जाग्यो योगी, ना जानुं विगमायो ॥ सखि कहे स्वामिनि कुमलानी, मौनकरी सरमायो ॥ सू० ॥ ५ ॥ तिन अवसर निणदी तिहां बोली, हसकर करवत लायो ॥ रातें निधि चारित नित्यसाथें, ज्ञानानंद खेलायो ॥ सू० ॥ ६ ॥

॥ पद बाशठमुं ॥

॥ राग विहाग ॥ मेरो पिया सखि देख मनावो ॥ मे० ॥ टेक ॥ पिया विना रंग महेल विच, सूनी सहेज रहायो ॥ खान पान दुःखदायक मोकुं, क्युं कर जिय समजायो ॥ मे० ॥ १ ॥ शोल श्रृंगार ए विरह व्यथायें, केसें रयण विलायों ॥ अंग अंग छिन जंगुर माहरो, तेंसें कहुं चित्त लायो ॥ मे० ॥ २ ॥ इतनें चारित मितके संगे, ज्ञानानंद पिया पायो ॥ गरीषम तापें जिम जल वरखन, सेज धरी मचकायो ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेशठमुं ॥

॥ राग विहाग ॥ तुं वालूराने क्युं मारे मूढ ॥

तुं० ॥ टेक ॥ वालो भोलो हम वालूडो, नहिं क्युं-इ जाने गूढ ॥ वागामांहे खेले अहनिश, वात वि-चारो मूढ ॥ तुं० ॥ १ ॥ खेलन मिस ठेरो थारा पासें, रमण करे चित्त खोल ॥ तुं फुसलाइ नित्य भटकावे, इतयुत करे भमभोल ॥ तुं० ॥ २ ॥ निर्द-य निर्धन नहिं तुझ सरिखो, नहिं क्युंइ माने नि-ठोर ॥ इतने चारित ज्ञानानंदे, ठेरो लियो चित्त ठोर ॥ तुं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोशठमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ जगगुरु निरपख कोन दिखा-या ॥ नि० ॥ टेक ॥ अपनो अपनो हठ सहु ताने, कैसें मेल मिलाय ॥ वेद पुराना सबहीं थाके, तेरी कवन चलाय ॥ ज० ॥ १ ॥ सब जग निज गुरुताके कारन, मदगज उपर ठाय ॥ ग्यान ध्यान कबु जा-ने नांहिं, पोतें धर्म बताय ॥ ज० ॥ २ ॥ चोर चोर मिल मुलकनें लूंट्यो, नहिं कोइ नृप दिखलाय ॥ किनके आगल जाइ पूकारे, अंधो अंध पलाय ॥ ज० ॥ ३ ॥ आगम देखत जग नवि निरखुं, मन ग-मता पख भाय ॥ तिनतें मूरख धर्म धर्म कर, मत-

बूडे मन लाय ॥ ज० ॥४॥ इन कारण जग मत पख छांडी, निधि चारित्र लहाय ॥ ज्ञानानंद निज नावें निरखत, जग पाखंड लहाय ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पांशठमुं ॥

॥ राग विहाग ॥ जगगुरु मूरख जगत जनाय ॥ ज० ॥ टेक ॥ मूरख मूरख वहुलो जग जन, मूढ पंडित केइ जाय ॥ पंडित मूरख वहु जन दीसे, जग मतलव लहे जाय ॥ ज० ॥ १ ॥ पंकित पंकित नहिं कोइ जगमें, कवहीं कोइ जनाय ॥ दिव्य विचारी तेहनें नाखे, संसृति अलप गिनाय ॥ ज० ॥२॥ तेहनुं दर्शन जगमें दुर्लभ, ते तारक जग मांह ॥ तिनतें नवनिधि चारित नावे, ज्ञानानंद अथाह ॥ ज० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद छाशठमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ निरपखता मोकुं नाइ, पिया तम ॥ नि० ॥ टेक ॥ पक्षपातमें घर घर नटकी, नहिं निरपख दिखलाइ ॥ पि० ॥ संवेगी संवेगन कीनी, योगी योगन नाइ ॥ पि० ॥ १ ॥ सन्यासी सन्यासन कीनी, वामण वामणी लाइ ॥ पि० ॥ रा-

म सनेही रामकी प्यारी, यतिगण यतिनी जाइ ॥पि०॥ १ ॥ अपने अपने मत पख गहेला, सहु डुनया वहु-राइ ॥ पि० ॥ पण ना जाणुं कोण हे साचो, अपनी तो जरमाइ ॥ पि० ॥ ३ ॥ दिव्य विचारें निज अनु-जवतां, जग पाखंड दिखाइ ॥ पि० ॥ निधिचारित एक ज्ञानानंदनो, विमल वचन सतलाइ ॥ पि० ॥ ४ ॥

॥ पद सडशठमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ वालम वचन सुहाइ ॥ पिया अम वा० ॥ पक्षपात नहिं दिव्य विचारें, निज अ-नुजव दिखलाइ ॥पि०॥१॥ इंद्रिय सुख विरमण यति कहियें, दश यति धर्म धराइ ॥ पि० ॥ जव उद वि-गन संवेगी कहियें, योग चरण जे योगी ॥ पि० ॥ चारित्र जाव सन्यासी जानी, बरामन बरम गुण जोगी ॥ पि० ॥ २ ॥ साहिब रमण ते रामका प्यारा, एक रूप सहु जाइ ॥ पि० ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद अनुजव, ध्यान समाधि सुहाइ ॥ पि० ॥ ४ ॥

॥ पद अडशठमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ नारी प्रेम निवारो, साधो जा-इ कुटिला नारि निवारो ॥ सा० ॥ टेक ॥ कुटिला-

नारी योगें साधो, तुम गति चउ दिसी फेरो ॥ सा० ॥ ते तुम मोह मदपान कराइ, इतउत कलह विखेरो ॥ सा० ॥ १ ॥ निर्जर पण एहनी थाह न पामे, नूपर पंक्तिता जाणो ॥ इंद्राणीके पगतल लोटे, इंद्रादिक परमाणो ॥ सा० ॥ २ ॥ नारी प्रेम विलूधें होलो, नहिं क्युंइ समजे घेलो ॥ सा० ॥ तिनतें नव निधि चारित संगें, ज्ञानानंदमें खेलो ॥ सा० ॥ ३ ॥

॥ पद अगनोतेरमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ नारी प्रेम लगावो, साधो जाइं, नानी नारी रमावो ॥ सा० ॥ टेक ॥ इण संयोगें योग जगावो, सहज शक्ति शुद्ध जावो ॥ सा० ॥ निज परजावने देखे योगी, कणजर अंग लपटावो ॥ सा० ॥ १ ॥ अविनाशी अकलंकता तुम गुन, तेहिज शुद्ध आचारो ॥ सा० ॥ जड पुद्गल इन जावसें न्यारा, एहनी ममता वारो ॥ सा० ॥ २ ॥ महोटा सहु योगी पण वंछे, एहनो संग सुखकारो ॥ सा० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद प्रेमें, खेले नारी प्यारो ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सीतेरमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ अनुजव योग रमावो, साधो

जाइ, निजघट अंतर जावो ॥ सा० ॥ टेक ॥ मेरा तेरा कहा करतहे, नहिं कबु तेरा जावो ॥ सा० ॥ जग जन किरिया कहा दिखलावे, कहा जग जन समजावो ॥ सा० ॥ १ ॥ निज निजमत पख हठता वारो, अंतर जाव विचारो ॥ सा० ॥ हालाहल अज्ञान निवारो, ज्ञान सुधारस धारो ॥ सा० ॥ २ ॥ तत्व विचारें प्रेम लगावो, निजगुण विमल निपावो ॥ सा० ॥ नवनिधि चारित प्रेमें आदर, ज्ञानानंद रमावो ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद इकोतेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ तुम सखि निरखोरे बाइ, सोतमी लेगइ अम वालमवा ॥ तु० ॥ टेक ॥ आगें आगें पिया चलतहे, पाछें सोतमी बाइ ॥ दासी पण छे तेहनें साथें, कुटिला चित्त लोजाइ ॥ तु० ॥ १ ॥ अमने लक्षण एहवो दीसे, वालम गये जरमाइ ॥ मोह नृपतिके जालें अटक्यो, अब नहिं निकले बाइ ॥ तु० ॥ २ ॥ क्रोधादिक तेहने रखवाला, कोट विषय दुःखदाइ ॥ तेहने चउदिसि सात बिसनहे, अहोनिश लंपट सांइ ॥ तु० ॥ ३ ॥ दासी युत कु

टिला तिन पासें, रमण करे चित्त लाइ ॥ मदिरा पाने ते मतवालो, विकथा चउ वतलाइ ॥ तु० ॥ ४ ॥ ग्राहक व्यापक जोगें लंपट, सुख विजाव सुहाइ ॥ संसृति संग सहु अपनो जाने, विगमे काल सदाइ ॥ तु० ॥ ५ ॥ इन अवसर निधि चारित्र निरखे, ज्ञानानंद सहाइ ॥ जोले पंखीका देख तमासा, गुंण संवेग रमाइ ॥ तु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद बहोत्तेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ धीरज धारोरे वाइ, सांजल स्वामिनी वाणी सखी कहे ॥ धी० ॥ टेक ॥ समता सखी पियु निरखन चाली, आगम मंत्री जाइ ॥ डुर्धर चार सुजट संग लेइ, गाम गाम निरखाइ ॥ धी० ॥ १ ॥ निरखत निरखत मोहके वाडे, आइ गुपत रहाइ ॥ आठ सखि ए चार सुजट युत, तेइने पासें गाइ ॥ धी० ॥ २ ॥ आगम मंत्री गुपत रहीने, अवसर जाव जनाइ ॥ अपनो अपनो दाव विचारे, ततपर कारज जाइ ॥ धी० ॥ ३ ॥ मोहनो परिकर आगम निरखी, सघला चित्त चमकाइ ॥ धर्म राजको परिकर निरखी, नाग राह जकनाइ ॥

धी० ॥ ४ ॥ सुमति आगम मंत्री साथें, वालूमो निकसाइ ॥ हरखें आव्यां निज घरमांहें, राणी मेल कराइ ॥ धी० ॥ ५ ॥ तिन अवसर निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमाइ ॥ अनुभव प्याला प्रेम मसाला, रंगें पान कराइ ॥ धी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद तहोंतेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ तुम किहां चाल्यो रे सांइ, तुम साथें हुं योगन भइ अव ॥ तु० ॥ टेक ॥ तेरे खातर हम घर छांडी, थारे संग चित्त लाइ ॥ किन पर हमने छांभिके चाले, केसें प्रीत लगाइ ॥ तु० ॥ १ ॥ किन कारन अमने दुःख दीनो, काहे कुं घर मूकाइ ॥ घात विश्वास करे कहा मोसुं, कुणने पुकारु जाइ ॥ तु० ॥२॥ सांइ कहे अम घरकी याही, रीत पुरानी जाइ ॥ जबलग तेल दिपकमां बाती, तबलग अम तम भाइ ॥ तु० ॥ ३ ॥ इतनी कहकर सांइ चाल्यो, अपने गाम सुहाइ ॥ अनुपम नवनिधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमाइ ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चम्मोतेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ मुनि तम निरखोरे भाइ, जाति-

जाव न तजाइ ॥ मु० ॥ टेक ॥ जे केइ गंगानिर पखाले, काली जरण लाइ ॥ विविध जांतकर महनत कीनी, तोपण सित नहिं जाइ ॥ मु० ॥ १ ॥ कर्त्तानी तिहां बुद्धि नहिं चाले, नहिं औषध गुण लाइ ॥ जातिरंग तेहनो नहिं पलट्यो, कहा करे चतुराइ ॥ मु० ॥२॥ तेहनी किरिया सघली फोकट, ज्ञान फोकटता जाइ ॥ तिन कारण निधि संयम अनुजव, ज्ञानानंद रमाइ ॥ मु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंचोत्तेरसुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ अनुजव लावोरे योगी, निज घट मांहि रमावो ॥ अ० ॥ टेक ॥ अनुजव ज्ञान जगतमें डुर्लज, अलप संसृतिने जाइ ॥ डुर्जव्य अजव्य जीवने, अनुजव नांही लहाइ ॥ अ० ॥ १ ॥ करुवी तुंबकी कोसों जटकी, अरुशठ तीरथ न्हाइ ॥ तोपण तुंबडी कटुता न छंडी, कहा तीरथ फरसाइ ॥ अ० ॥ २ ॥ तिनतें निजघट अंतर निरखो, अनुजव शैलि सुहाइ ॥ तनमय नवनिधि चारित्रयोगें, ज्ञानानंद लहाइ ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ इति श्री ज्ञानविलास संपूर्णः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीसंयम तरंगः प्रारभ्यते ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग भैरव ॥ योगनंद आदरकर संतो, अरुण ऊति लय लावो ॥ यो० ॥ टेक ॥ अंतर षटचक्र सोधन करकें, वंकनाल कर भावो ॥ यो० ॥ १ ॥ चंद्र सूरज मारज जुग तजकर, सुषमन परवाह जानो ॥ कुंभक रेचक पूरक भावें, प्रत्याहार प्रमाणो ॥ यो० ॥ ॥ २ ॥ धारण ध्यान समाधि सपतम, श्वास रोधन करतानो ॥ अनुपम अनहद धनी अनुयोगें, सोहं सोहं गानो ॥ यो० ॥ ३ ॥ सोहं सोहं रटना रटतां, नवनिधि संयम भायो ॥ ज्ञानानंद परमातम रोचि, देखत हरख लहायो ॥ यो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग भैरव ॥ जग जन निंदडी तजकर संतो, योग निंद संभारो ॥ ज० ॥ टेक ॥ नाना लबधि निधाननुं थानक, सकल संपद आधारो ॥ ज० ॥

॥ १ ॥ विविध विषमय देखि नवि इछे, निर्लेपी वीतरागो ॥ शत्रु मित्र समजाव रहे नित्य, दरढासन ध्यान जागो ॥ ज० ॥ २ ॥ योग निंद लय जावें जिनने, कोइ न करे अपगारो ॥ मीत समान सेवे जसु रिपुगण, वचन फले जगसारो ॥ ज० ॥३॥ तसकर श्वापदनो जसु नवि जय, पंचविजय लहे सारो ॥ निधिचारित ज्ञानानंद आदर, परमानंद निहारो ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग जेरवी ॥ प्राणपिया तम ऐसी सबजी पीवोरे ॥ प्रा० ॥ टेक ॥ निज सुज्ञ परिणति अनुपम सबजी, तिंखी मरी विवेक लेवो रे ॥ प्रा० ॥ तत्त्व विचार विविध सुमसाला, उपसम कंकर कूंमी मेवो रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ कुटिल निवृत्ति समता प्रेमें, संयम रगडा ताणो रे ॥ प्रा० ॥ धरम शुकल पय सुरज्ञीसर केरा, संवर साफ गुठानो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ अनुजव ज्ञानका रतन पियाला, जर जर समता पिलावे रे ॥ प्रा० ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद योगी, पीवत ध्यान लगावे रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग भैरवी ॥ गगन मंडलगत परम अरुण रुचि भायो रे ॥ ग० ॥ टेक ॥ चंद कहुं तो चंद न निरखुं, तरणि पिण न जनायो रे ॥ ग० ॥ तेल सिखा बिन दीप न निरखुं, जगमग रुचि सुखदायो रे ॥ ग० ॥ १ ॥ घन समीर परमुख उपाधि, रहित रुचिर दरसायो रे ॥ ग० ॥ सब जग व्यापी पांचहि जाते, पण नहिं भाव रमायो रे ॥ ग० ॥ २ ॥ पंडित योगी सघले थाके, निज हठ पख लपटायो रे ॥ ग० ॥ आपहिं निरखे आपहिं जाने, सहज समाधि जगायो रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ तब घर घरकी भरमना मेटी, सहज रूप परखायो रे ॥ ग० ॥ निधि संयम ज्ञानानंद योगी, ज्योति निरख हरखायो रे ॥ ग० ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ निज परिणति चित्त धारियें, पर परणति तज सार ॥ नि० ॥ टेक ॥ जबलग रहे पर परिणति, तबलग भव भ्रम धार ॥ नि० ॥ १ ॥ अपनी पूंजी लख नाहिं, कुमता संग चित्त खोल ॥ राजपूत होय परमतें, ते कायर समझोल ॥ नि० ॥ २ ॥ किंपाक

फ लसम रूप रेह, नवसंग सुख जेह ॥ अंतर हालाहल लही, दुर्धर दुःखद लगेह ॥ नि० ॥ ३ ॥ काचखंड तुं ठांडदे, चिंतामणिकुं झील ॥ नवनिधि संयम आदरी, ज्ञानानंदे हील ॥ नि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ठहुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ पर परिणतिकुं तज करी, निज परिणति लहे सार ॥ प० ॥ टेक ॥ निज परिणति कर जस लहे, उभय लोक सुखकार ॥ प० ॥ १ ॥ भृंगी होय जिम ईलिका, भृंगी सर अनुराग ॥ अरनी अगनी परगटें, पय गत सर पिप जाग ॥ प० ॥ ॥ २ ॥ जिम शशिथी अमृत लहे, पारस कनक विचार ॥ तिम निज परिणति आचर्यां, सहजें परसंग वार ॥ प० ॥ ३ ॥ समता संग रमण करे, चार सखियुत तेह ॥ नवनिधि संयम तनमय, ज्ञानानंद सुख गेह ॥ प० ॥ ४ ॥ इति

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग काफी ॥ चेतन तुं क्यों फरे झूला, हिंडोला करमका झोला ॥ ए चाल ॥ साधो तम निजघटमें देखो, मत पख हठता नहिं पेखो ॥ सा० ॥ चेतन

विनाव हे सबही, अपनो न गंड हे कवही ॥ सा० ॥ १ ॥ कोइ प्रकारें नहिं देखो, उपर वीजको लेखो ॥ रासन्न गंगाजल धोयो, तोपण लोटे उकडायो ॥ सा० ॥ २ ॥ सूकर पायसकुं ठंमी, अशुचि नोगें जे मंमी ॥ मधु घृतकर सींचो तवहीं, नींब न मीठो होय कवहीं ॥ सा० ॥ ३ ॥ ज्ञानी ध्यानी के द्वेषी, निजमत पखपातें पेखी ॥ तिनतें अनुनव ज्ञानानंदें, सुनजो चारित्र आनंदें ॥ सा० ॥ ४ ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग काफी ॥ देखो प्यारे सब जग कलही, नहिं कोइ शांति मूरत पेही ॥ दे० ॥ मुनिजन उपसम गुण धारी, कलही कोप कारण सारी ॥ दे० ॥ १ ॥ सेठकुं तसकर सहु गावे, तसकर सेठ करी लावे ॥ सतवादीकुं कहे कूमा, मिरखाकुं सत कहे मूंमा ॥ दे० ॥ २ ॥ कमल प्रन्न सूरी जानो, श्रुति दृष्टांत कहे मानो ॥ तिनतें निधि चारित धारी, नजो ज्ञानानंद अधिकारी ॥ दे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग काफी ॥ सब जग जन अपनी ताने, जिहां

कोइ न परमाने ॥ स० ॥ टेक ॥ जे कोइ परमानकूं पूछे, ताना तानी कर डुछे ॥ सा० ॥ १ ॥ गीतारथनी नहिं माने, कहीएतो पाखंड सहु जाने ॥ श्रुति गत साची नहिं जावे, जग जन कूड सहु जावे ॥ सा० ॥ २ ॥ मतवाला श्रम बहु मलिया, नहि कोइ परमार्थी कलिया ॥ तिनतें निधि संयम चित्तें, जजे ज्ञानानंद सुख नित्यें ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग काफी ॥ मतलवियो जग जन देखो, कोइ उपगारी नहिं पेखो ॥ म० ॥ टेक ॥ डुनियां पटुतर स्वारथकी, पाठ न पूछे परमारथकी ॥ म० ॥ १ ॥ गत यौवन निःसनेही, तरुणी पण विषयी न रेही ॥ जोजन पाछे नहिं जावे, अमृत पण कांजी कुण खावे ॥ म० ॥ २ ॥ एह विचारें मुनि समजो, पर उपगारक गुन बूजो ॥ अनुपम निधि चारित पावो, (जिम) निर्मल ज्ञानानंद जावो ॥ म० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥

॥ राग फाग ॥ हमरी चुनडी किन बोरीरो लोगों ॥ ए चाल ॥ अबलानी इग वात सुनो पिया, ऐसी

न खेलो होरी रे ॥ अ० ॥ टेक ॥ तुम न्हानी वहू सखि संयोगें, नइ मतवाली दोरीरे ॥ अ० ॥ कुटिला साथें तुमें पण पहोता, मदनवागां खेली होरी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ अविरतनां पकवान जिहां तुम, हरखे नोजन जोरीरे ॥ अ० ॥ मिथ्या नाव गुलाल उमाइ, योगतें कुमकुम फोरी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ इंडिय विषय जिहां रंग पिचकारी, मोहराजकी जोरी रे ॥ अ० ॥ चार कथायें तुं मतवालो, रंग मचायो होरी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ ऐसी होरी खेली तोपण, तृपत न नइ ते गोरी रे ॥ अ० ॥ ग्यारमी नूमसें तुमने नाखी, लेगइ खेलन होरी रे ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ अबतो पिया मन मांहे समजो, नारी वचन चित्त जोरी रे ॥ अ० ॥ जिम चारित्र युत ज्ञानानंदें, नवनिधि पामे दोरी रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग होरी ॥ होरी खेले कानहिया ॥ मेरो अब केसें निकसन होय दइयां ॥ एचाल ॥ होरी खेले वालमिया, मेरो अब केसें जावनो होय दइयां ॥ हो० ॥ टेक ॥ पंच महाव्रत वाघा पहेरी, शील वि-

खुखन ले सइयां ॥ ज्ञान गुलाल अबीर उमाइ, कुमकुम शांति जरे सइयां ॥ हो० ॥ १ ॥ संयम रंग सुरंग जरीने, पिचकारी आगम ले सइयां ॥ समता साथें सुमति गुप्ति सखी, होरी खेले तायइयां ॥ हो० ॥ ॥ २ ॥ शुद्ध समकित पकवाननुं जोजन, चेतन हरख धरे सइयां ॥ निधि चारितयुत ज्ञानानंदें, निजगुन होरी वरे सइयां ॥ हो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ पर विकथा तुं कहा करतहे, अपनी न काह विचारतहे रे ॥ प० ॥ टेक ॥ जगमें पर विकथा कर संतो, ज्ञान ध्यान विगमावतहे रे ॥ प० ॥ १ ॥ अपनी विकथा काइ न धारे, पोतें डुरित जरावतहे रे ॥ गर्हा संयम दिव्य विचारे, अंतरजाव दिखावतेहे रे ॥ प० ॥ २ ॥ जवलग अपनी कथनी न जाने, कहा उपदेश सुनावतहे रे ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद निजपद, काह न चित्त रमावतहे रे ॥ प० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ गगन प्रदेश रसाल जाम इग,

नत्र परमित जसु ठाया रे ॥ ग० ॥ टेक ॥ तिनपर अरुण प्रत्र गज मैथुन, करत कल्लोल सुत्राया रे ॥ ग०॥१॥ ताह् ऊाऊको पान चुगत हे, अनादि अनंत तसु संगें रे ॥ ता नीचें एक रहत मरगवा, खाधो गज निज रंगें रे ॥ ग० ॥ २ ॥ गरदन मित जसु बाह्र दीसे, कैसें जीवन बंठे रे ॥ कालांतर तेह्थी गज जायो, मृगह्न नरपति लंठे रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ जिन दिन जे गज नरपति जाने, अपनो खोज गमावे रे ॥ तव निधि चारित्र ज्ञानानंदें, मातंग आसन पावे रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद पंदरमुं ॥

॥ राग सोयनी ॥ दीपक होत उजियारो ॥ दी० ॥ टेक ॥ बिन दीपक मंदिर अंधियारो, केसें करे रुचियारो ॥ दी० ॥ १ ॥ घोर घटायें रयण अंधारी, जान न पदारथ सारो ॥ दी० ॥२॥ जरूजरू योगें एकत परिणति, निजगुण दीप वीसारो ॥ दी० ॥ ३ ॥ बिन दीपक चेतन त्रयो पशुपर, स्वत्राव वित्राव सधारो ॥ दी० ॥ ४ ॥ सबजग तप जप किरिया विरथा, आतम अनुत्रव धारो ॥ दी० ॥ ५ ॥ बिन

अनुजव अंधक नर ढूंढत, अनुजव दीप जगारो ॥ दी० ॥ ६ ॥ तातें अवधू मत ठहराणी, ज्ञेय ज्ञान सुविचारो ॥ दी० ॥ ७ ॥ तेहथी निधि चारित रिधि पामी, ज्ञानानंद निहारो ॥ दी० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद शोलसुं ॥

॥ राग सोयनी ॥ प्यारी नेह लगारो ॥ प्या० ॥ टेक ॥ बिनप्यारी घर घरमें जटकत, कायर जाव देखारो ॥ प्या० ॥ १ ॥ कुमतियोगें चार नगरमें, विविध रूप विसतारो ॥ प्या० ॥ २ ॥ पांच जातका वेस पहराया, निजप्यारी विन हारो ॥ प्या० ॥ ३ ॥ तेवीस विषयके फंदमें नाखी, पापथान विलगारो ॥ प्या० ॥ ४ ॥ हास्यादिक वज्र कोटें घेस्यो, निजसुध बुध बिसरारो ॥ प्या० ॥ ५ ॥ तिनतें प्यारी युत निधिचारित, ज्ञानानंद लहे सारो ॥ प्या० ॥ ६ ॥

॥ पद सत्तरसुं ॥

॥ राग वरुवा ॥ एक समीरका सहर बना हे, अदजूत पंच बाजार तना हे ॥ ए० ॥ टेक ॥ दस मारग दसही दरवाजे, चउ आसा चउ नगर विराजे ॥ एते ॥ १ ॥ तेवीस वसंत जिहां नितप्रति दीपे, क्षेत

देत सब जगकुं दीपे ॥ ए० ॥ आना जाना एकही कालें, एक विना रहे नगर विचालें ॥ ए० ॥ २ ॥ एक दरवगत नित्य अनित्यें, चटपट भाव वसे सब चित्तें ॥ ए० ॥ जिन दिन सघलो खोज गमावे, तो निधिचारित्र ज्ञान निपावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग वरुवा ॥ गुरुगम अनुभव शैली धारो, इस पदका निर्वाह बिचारो ॥ गु० ॥ टेक ॥ सरव समय रवि रुचिकर हीना, विविध स्वापदयुत गहन विलीना ॥गु०॥ १ ॥ काला मिरगा निज बल वन राजा नितप्रति राज अखंड समाजा ॥ गु० ॥ निर्दय निज वैरीगण मारे, मास विना न भखे खिन सारे । गु० ॥ २ ॥ चक्री हरिबल परमुख जोधा, पिण मिरगा नवि वस किया सोधा ॥गु०॥ तेहने पिन मिरग खिन भख कीधा, कुन समरथ वस करने सीधा । गु० ॥ ३ ॥ अमर बिरुद दरवें जग धारे, मरन जीव न नवि बेहुं सारे ॥ गु० ॥ इगदिन हरिथी नपुंसक जायो, अनंतवली पिण नहिं तोलायो ॥ गु० । ॥ ४ ॥ एकहि घातें मिरगने मार्यो, कंठी रवनो

राज सुधास्यो ॥ गु० ॥ तव निधिचारित्र कमला संगें, ग्रहे निर्मल ज्ञानानंद रंगें ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणीशमुं ॥

॥ राग जंगला ॥ ज्ञान विचारो रे जाइ, गुरुगम शैली आदर संतो ॥ज्ञा०॥ टेक ॥ गगनमंडल गत विविध तूर धनी, घोर स्वरें कर वाजें ॥ पाथोरण विन घनाघन वरसे, गिरीषम ताप समाजें ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १ ॥ यामें रहत बतासा कोरा, वजर गलै इगताने ॥ वासर विन अरुण प्रज जासैं, तेजें झलहल जाने ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ मानस नहिं जिम मानस मेला, निरखत लहै आनंदें ॥ निधिचारित ज्ञानानंद प्रेमें, रमण करे सुखकंदें ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ ग्यान विचारो सांई, झटपट अनुजव प्रीत लगासी ॥ग्या०॥ टेक ॥ जीर्ण कुटीयें चंपाथेगल, कां लग वास रहासी ॥ घनाघन वरसत तटनी पूरें, आपोआप वहासी ॥ ग्या० ॥१॥ तातें अवधू चारने वरजी, निज सासू वतलावो ॥ चार पांच सखि वरगें हिलमिल, मोकुं हिरदय जावो ॥

ग्या० ॥ २ ॥ अष्टादस विध भोजन जिमो, तिरिवेणी जल न्हाइ ॥ पठिम पावड साला मारग, वार उघाडो सांइ ॥ ग्या०॥ ३ ॥ विविध वाजित्र धनि सांभल निरखे, मुगताफल तरुसांइ ॥ तव निधि चारित्र ज्ञानानंदें, नाचे हरख भराइ ॥ ग्या० ॥४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग तिल्लाना ॥ जोगीयासें यारी कीनी हो, ज्ञान दिनंदा ॥ जो० ॥ टेक ॥ ज्ञान दिनंदा त्रिभुवन चंदा, तटनी तटनि वसंदा, वरम भाव कछोट धरंदा, घाती भसम लिपंदा ॥ जो० ॥ १ ॥ सादि सांत दृढ आसनधारी, सुं निज परिणति भायी ॥ ज्ञेय मसाला प्रेमका प्याला, योग नींद लय लायी ॥ जो० ॥ २ ॥ तत्त्वविचार जटा वधारी, अनहद धुनि चित्त लाइ ॥ निधिचारित्र सुभ सेजें प्यारी, ज्ञानानंद मचकाइ ॥ जो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग तिल्लाना ॥ गगनें घन निरखानी हो, हरख लहानी ॥ ग० ॥ टेक ॥ तिहां शुचि इग अभिसर निरखानी, परमानंद निसानी ॥ तट मुगताफ-

ख तरु सोजानी, फल फूल साख न जानी हो ॥ इ० ॥ ग० ॥ १ ॥ हेतें योगी वैस्यो ध्यानी, गतागति कोइ न जानी ॥ गरजारव चपला दुति मानी, झिरमिर वरसे पानी हो ॥ इ० ॥ ग० ॥ २ ॥ सुगुरें खाया मोतीपानी, अजरामर दरसानी ॥ निगुरें जूख तिरिषा परिमलानी, नहिं पामे गुण खानी हो ॥ इ० ॥ ग० ॥ ३ ॥ आपहिं निरखे आपहिं जानी, आगल कहा वखानी ॥ निधि संयम ज्ञानानंद योगी, अमिवस रहे सहलानी हो ॥ इ० ॥ ग० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ पिउ मेरा निजघर आवै रे ॥ पि० ॥ टेक ॥ वालम तुमजणी कुटिला निसिदिन, पर घर घर जटकावै ॥ सानपरें निर्लज गुण आदर, रंकजाव दिखलावै रे ॥ पि० ॥ १ ॥ कवन खोट निजघरमें वालम, धन कोठार धरावै ॥ सेजें सुख मुझ साथें जोगो, जिम मन वंछित पावै रे ॥ पि० ॥ ॥ २ ॥ राजा सांजल मोह नृपहनसें, थाशे वहुत खरावी ॥ पिउ तातें कुटिला संग वरजो, घरमें वैसो सिताबि रे ॥ पि० ॥ ३ ॥ इतनी सांजल या मुझ

घरनी, निहचै तेहने जानी ॥ निधि संयम ते वानी धारी, ज्ञानानंद बिलसानी रे ॥ पि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ मेरी तुं मेरी काहाडरे ॥ मे० ॥ टेक ॥ मेरी प्यारी गुण गण भूषित, हिरदय हारपरे ॥ तुझविन नांहिं रहुं किण ठामें, जिम शिव सगति चरे रे ॥ मे० ॥ १ ॥ इम पियुवाणी सांभल महिषी, परम परमोद वहै ॥ दंपति मिलकर सेजें बैसें, अंतर तत्व गहे रे ॥ मे० ॥ २ ॥ अंगो अंग फरसन कर प्रेमें, घन मुगतिक वरसावै ॥ तव निधि संयम ज्ञानानंदें, शीतल भाव निपावै रे ॥मे०॥३

॥ पद पचीशमुं॥

॥ रागी गोडी ॥ निजधन काह गमावै ॥ संतो निज० ॥ टेक ॥ बोए झाड बंबूलके तैनें, आंब कहांसें खावे ॥ वेलू पीलत तेल न नीकलैं, मूरख जग कहलावै ॥सं०॥१॥ कोपी फणिधर रिजुता न पामे, तीम जडवंस निहालो ॥ सेलडी गांठे रस नवि पामे, खंजन सेत न भालो ॥सं०॥२॥ अनुपम दूधें साप खिलावै, हालाहल होय जावै ॥ घनथी पिन मगसिल

नवि नींजे, निंबडे मधूता न पावै ॥ सं० ॥ ३ ॥ एह विचार करी जाइ संतो, निधि चारित्र रमावो ॥ तव ज्ञानानंद पद अनुजवतां, कमला सहज निपावो ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद व्वीशमुं ॥

॥ राग गोरी ॥ तनमय सदागम सेवो ॥ अवधू ॥ त० ॥ टेक ॥ जवलग सदागम सेवन नांहि, पखपातें लपटेवो ॥ रतन पुंज पाहन सुत जाने, चंदन इंधन सम देवो ॥ अ० ॥ १ ॥ मोटे मोटे पाहन तरुवर, रतन चंदन दिखलावे ॥ रासज कूतर हय गज मोलें, लेवे ते मूढ कहावै ॥ अ० ॥ २ ॥ रतन कंवल वलकल चीवरसम, चर्वण घृत पूरमाने ॥ सकल वसतु इग मोल चलावै, खोट साच नवी जाने ॥ अ० ॥ ३ ॥ अन्याय पूर जन पदमें रहकर, क्युंकर लाज गमावो ॥ तेहथी निजघर संयम आदर, ज्ञानानंद रमावो ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग विहाग ॥ हरुक सान संग वारो ॥ संतो ॥ ह० ॥ टेक ॥ पवनवेग निज हय पर चढकर, कुंत

कृपाण शरधारो ॥ कूतरा कूतरी दासी हनकर, वजरें जूधर पाओ ॥ सं० ॥१॥ विषहर अमृतपान संयोगें, निर्विष जाव वधारो ॥ सदागम संयम धर नृप आना, निखिलपुरें वरतारो ॥ सं० ॥ २ ॥ जवलग तीनो हरुक न मारे, दरशन नाण न पावो ॥ तेह विना संयम पिण नांहिं, साध्य सिद्धि किम आवो ॥ सं० ॥ ३ ॥ साधक सुज साधन नवि पामें, तेहथी हरुक निवारो ॥ निधि सयंम ज्ञानानंद अनुजव, परमानंद सुख धारो ॥ सं० ॥ ४ ॥

॥ पद अठावीशमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ हरुक सान संग नावो ॥ अबधू ॥ ह० ॥ टेक ॥ जिम जिम निर्मल घनाघन वरसे, महि नवपल्लव रावों, तिम तिम हरुकिय वायु विकारें, अहनिस हरुक सरावो ॥ अ० ॥ १ ॥ काली कुतरी पण ठे तेहवी, सरिखो जोग मिलायो ॥ निजमति जोगें गिरिवर चढियो, जाति संगति टलायो ॥ अ० ॥ २ ॥ नृपबिन नृपनिति ते चलावे, जग जन मान न माने ॥ तेहने गुरु जन हित बतलावे, तोपिन आन न जाने ॥ अ०॥ ३ ॥ हरुक हरुक ब-

हु रूसे जग जनने, नगरें अपजस गावे ॥ सन्मुख विष्टायें पाहन नाखे, पोतें अशुचि जरावे ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ पखपाती श्रुति निति विलोपी, चामना दामना चलावे ॥ तेहथी निधि संयम ज्ञानानंद, सुधारस अनुजव पावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणत्रीशमुं ॥

॥ राग कल्यान ॥ ऐसी तुं कली उमाइ, संतो ॥ ऐ० ॥ टेक ॥ ममता सूतरको लेकर, तृष्णा मांजलगाइ ॥ सं ॥ १ ॥ कुतूहल रंग विरंग तुकली, मूर्छा तीली सुहाइ ॥ विविध माया धनुष जाके, लटकन मिथ्या लहाइ ॥ सं० ॥ २ ॥ कुटिल प्रवृत्ति पवन जरतें, गगनें शेप वधाइ ॥ ऊोक लेकर कोर लीनी, नयन विषय वर धाइ ॥सं०॥ ३ ॥ कापत कापत आप वध गये, परजावें हरखाइ ॥ तिनतें ज्ञानानंद नवनिधि, वैसेही संयम जाइ ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ राग कल्यान ॥ ऐसा पतंग चढाइ, संतो ॥ ऐ० ॥ टेक ॥ ध्यान पतंग वर ज्ञान चित्रित, संयम कोरी लगाइ ॥ सं० ॥ १ ॥ मेरुदंड पद्मासन धर

कर, खेचरी मुद्रा धार ॥ सूखम पवने गगन मंम्फ-
ल गत, दृष्टि पतंग पर सार ॥ सं० ॥ २ ॥ गुण श्रे-
णी गत झोक टालो, अप्रमत्त जाव वधार ॥ सहस
पर थकत थिति खय, जग जस सूर विचार ॥
सं० ॥ ३ ॥ सकल परिधि काप संतो, वीर प्रमोद
जराय ॥ ज्ञानानंद नवनिधि संयम, नाचै निरख
हरखाय ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग झींझोटी जंगला ॥ अनुजव रस गत माती;
रंग राती ॥ अ०॥ टेक ॥ गगन मंम्फलगत इग अमि
सरवर, निरखत प्रमद जराती ॥ ता तट इग मुग-
ताफल तरुवर, निकलंक फूल फल जाती ॥ रं० ॥
॥ १ ॥ मुगतक अमिजल खावत पीवत, रंग खुमा-
र घुमाती ॥ रं० ॥ अहनिशि शशि रवि करत वि-
कारा, डुर्धर तिमिर हराती ॥ रं० ॥ २ ॥ अनहद
धुनि संग शंकर नाचे, निस्पृह जाव रमाती॥ रं० ॥
निधि चारित्र ज्ञानानंद रंगें, गावत नाटक रा-
ती ॥ रं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग किंकोटी जंगला ॥ विरथा जनम गमाया, योग न जाया ॥ वि० ॥ टेक ॥ जगमें पहेले हमही जनमे, मात जनक पछें जाया ॥ वि०॥ मामा मामी नाना नानी, पछें गुरुजाइ रमाया ॥ वि० ॥ १ ॥ जग समझन या केम समझाइ, मो मन नांही रमाया ॥वि०॥ चेलेने निज गुरु जनमाया, गुरुने शीस ज-नाया ॥ वि० ॥२॥ पहेले योगी पाछे जोगी, अना-दि अनंत जोगाया ॥ वि० ॥ आपहिं मात जनक गुरु चेला, जगमांही जरमाया ॥ वि० ॥ ३ ॥ पाइन वा-हन बेसी यूके, अंधो अंध चलाया ॥ वि० ॥ तिन-तें संतो निधि संयमयुत, ज्ञानानंद सुहाया ॥ वि०॥४॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥

॥ राग चावक ॥ वालमियारे, विरथा जनम ग-माया ॥ टेक ॥ परसंगत कर दसदिसि जटका, परसें प्रेम लगाया ॥ परसें जाया पररंग जाया, परकुं जो-ग लगाया रे ॥ वि० ॥१॥ माटी खाना माटी पीना, माटीमें रम जाना ॥ माटी चीवर माटी जूखन, माटी रंगसो जीनारे ॥ वि० ॥ २ ॥ परदेशीसें ना-

तरा कीना, मायामें लपटाना ॥ निधि संयम ज्ञानानंद अनुजव, गुरुविन नांहिं लहानां रे ॥ त्रि०॥ ३ ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ राग चावक ॥ योगिया रे, गुरु विन ज्ञान न जाया ॥ टेक ॥ डुर्धर केसरी बकरी जाइ, बकरी वाघ बंधाया ॥ बकरी चहुटे वाघ नचावे, देखे जन हरखाया रे ॥ गु० ॥ १ ॥ तुरिय वेग हय चाबुक योगें, नाग कुटुंब रुसाया ॥ समय अनादें इतउत जटके, मम ज्ञायें जरमाया रे ॥ गु० ॥ २ ॥ खिन-जर ज्ञानकी वात न जानी, अनुजव वासन जाया ॥ गुरु किरीया संयम ज्ञानानंद, चरण कमल लपटाया रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग बसंत ॥ अचरज एक नजरगत आयो, ज्ञानी गुरु बतलायो ए॥ टेक॥ त्रिजुवनमें एक बाल कुमारी, बिरुद सति कहलाया ए ॥ अ० ॥ १ ॥ बिन घरमां इग पलमें निपने, नंदन तिन सुखदायी ए ॥ रूप अनूपा चार दीकरी, ते पिन योगन जाइ ए ॥ अ० ॥ २ ॥ जेह जनक ते वल्लज तेहना, मात

विना जग जाया ए ॥ ते कथा चिदानंदें परनी, योगी जाव रमाया ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ सेजें दोउ अनुजव रंगें, अहनिसि प्रेम लगाया ए ॥ निधि संयम ज्ञानानंद योगी, गुरु किरिया दरसाया ए ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ पद छत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ विविध तूर धुनि नज मंफलगत, ज्ञानी मुनि दिखलाया ए ॥ टेक ॥ चउविह घन शुपिर तत वितत, घोर सरें संजलाया ए ॥ वि० ॥ १ ॥ चंद सूरज परकास सुजावें, योगी साधन साधना ए ॥ अनुजव तत्त्वसु ज्ञान खुमारी, कवहु न उतरे आराधना ए ॥वि०॥२॥ तूर नहिं पन तूर धनि सुन, नवनिधि सहज निपाया ए ॥ संयम ज्ञानानंद लहे नव, नाचे हसे हरखाया ए ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद साडत्रीशमुं ॥

॥ राग फिंफोटी ॥ रहो वंगलेमें वालम करुं तोहे राजीरे ॥ टेक ॥ निज परिणतिका अनुपम बंगला, संयम कोट सुगाजीरे ॥ रहो० ॥ चरण करण संपतति कंगुरा, अनंत विरज थंज साजीरे ॥ ॥ र० ॥ १ ॥ सीतजूमी पर निर्जय मेलें, निरवेद प-

रम पद लाइरे ॥ र० ॥ विविध तत्त्व विचार सुख-
मी, ज्ञान दरस सुरन्ति जाइ रे ॥ र० ॥ २ ॥ अह-
निस रवि शशि करत विकासा, सदीव अमीरस
धाइ रे ॥ र० ॥ विविध तूर धुनि सांजल वालम,
साद्वाद अवगाइ रे ॥ र० ॥ ३ ॥ ध्येय ध्यान लय
चढीहे खुमारी, उतरे कबहु न रामी रे ॥ र० ॥
सुन निधि संयम घरनी वाचा, ज्ञानानंद सुख धामी-
रे ॥ र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ इतिश्री संयम तरंगः संपूर्णः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीजशोविजयजी कृत आनंदघनजीनी स्तुतिरूप अष्टपदी प्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग कनडो ॥ मारग चलत चलत गात, आनंदघन प्यारे ॥ रहत आनंदभर पूर ॥ मा० ॥ ताको सरूप भूप, त्रिहु लोकथें न्यारो ॥ बरखत मुख पर नूर ॥ मा० ॥ १ ॥ सुमति सखीके संग, नित नित दोरत ॥ कबहु न होतही दूर ॥ जशविजय कहे सुनो हो आनंदघन, हम तुम मिले हजूर ॥ मा० ॥ २ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ आनंद घनको आनंद, सुजशही गावत ॥ रहत आनंद सुमता संग ॥ आनंद० ॥ सुमति सखी ओर नवल आनंदघन, मिल रहे गंग तरंग ॥ आनं० ॥ ॥ १ ॥ मन मंजन करके निर्मल कीयो हे चित्त,

जसविजय जीलत ताके संग ॥ एरी० ॥ ३ ॥ इति

॥ पद आठमुं ॥

धाइ राग कानडो ताल ॥ आनंदघनके संग
साद ॥ राग मिले जब, तब आनंद सम जयो सुजस,
चढी हिं पावे, लोहा जो फरसत, कंचन होतही ताके क
॥ आ० ॥ १ ॥ खीर नीर जो मिल रहे आनंद ज
सुमति सखीके संग जयो हे एकरस ॥ जव ख
सुजस विलास, जये सिद्ध स्वरूप लीये धस
॥ विज्ञान पावत ॥

॥ इति आनंदघनजीनं
स्तुतिपद ॥ आनंद गोष्ठी ॥
समाया ॥ अ
वरजित, अ

इति श्री कोत आनंद तथा विनय
विलास अने ज्ञान विलासाख्य
रागमाला समाप्ता: